हिमशिखर

पच्चीसवाँ अंक (25वाँ अंक)

हिन्दी पत्रिका 2025

महालेखाकार (लेखापरीक्षा) का कार्यालय
एवं
वरिष्ठ उप महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय
सिक्किम, गंगटोक – 737102

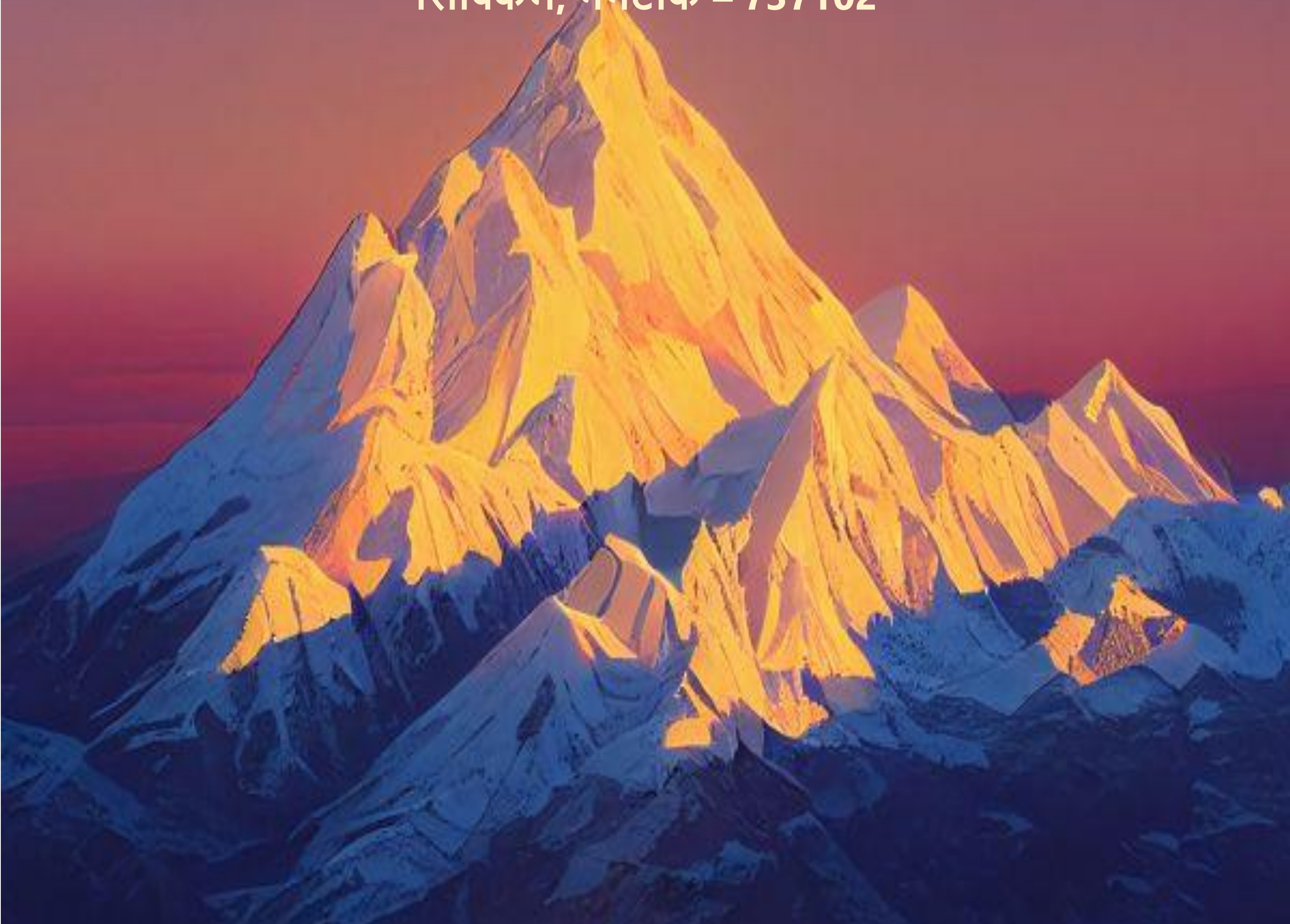

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	शीर्षक	रचनाकार (श्री/सुश्री/श्रीमती)	पृष्ठ संख्या
1.	हिमशिखर परिवार		4
2.	राजभाषा प्रतिज्ञा		5
3.	हिंदी दिवस के अवसर पर माननीय गृह मंत्री जी का सन्देश		6-9
4.	महालेखाकार का सन्देश		10
5.	उप महालेखाकार का सन्देश		11
6.	उप महालेखाकार का सन्देश		12
7.	कनिष्ठ अनुवादक का सन्देश		13
8.	कनिष्ठ अनुवादक का सन्देश		14
9.	सम्पादकीय		15
10.	आप के पत्र		16-17
11.	बूढ़ा पेड़	चंचल / कनिष्ठ अनुवादक	18
12.	मखाना की चमक, किसान की छाया	नरेश कुमार यादव/ सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	19-21
13.	झारखण्ड के 6 अद्भुद जलप्रपात	दीपा उराँव/ कनिष्ठ अनुवादक	24-27
14.	मेहनत	आयुष बिष्ट/ लेखाकार	28
15.	देवभूमि उत्तराखण्ड की चार धाम यात्रा	संजय सिंह बोरा/सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	29-32
16.	धैर्य, धीरज, धारणा	अमन कुमार/ लेखाकार	33
17.	अर्धरात्रि के प्रतिबिंब में	अमन कुमार/ लेखाकार	33
18.	आत्मविश्वास और संघर्ष	अमन कुमार/ लेखाकार	34
19.	भारत में ऑडिटिंग की यात्रा: एडवर्ड ड्रुमंड से महालेखापरीक्षक तक	शुभम शुक्ला/ सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	35-36
20.	धूप का दोस्त	कृष्ण कुमार मीणा/ लेखापरीक्षक	40
21.	सूरज का राज़दार	कृष्ण कुमार मीणा/ लेखापरीक्षक	41
22.	किरणों का आशीर्वाद	कृष्ण कुमार मीणा/ लेखापरीक्षक	41
23.	मोहब्बत	कृष्ण कुमार मीणा/ लेखापरीक्षक	41
24.	नदी के किनारे तेरा नाम	कृष्ण कुमार मीणा/ लेखापरीक्षक	41
25.	धूप संग सपनों की राह	कृष्ण कुमार मीणा/ लेखापरीक्षक	42
26.	किताबों में बसा चेहरा	कृष्ण कुमार मीणा/ लेखापरीक्षक	42
27.	तेरी याद का जंगल	कृष्ण कुमार मीणा/ लेखापरीक्षक	42
28.	खोया हुआ खिलौना	मंतोष सिंह/ लेखाकार	44
29.	भारत में भाषाई विवाद एवं उसके समाधान	शम्भू कुमार/ लेखापरीक्षक	44-45
30.	कोशिश कर और सपनों को आगे बढ़ा	संजय छेत्री/आउटसोर्स	48
31.	महान भारतीय सरकारी नौकरी (नौकरशाही के सुख-दुख को समर्पित एक स्त्रोत)	सुमना दे/ सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	49-50

32.	तुम	दिवाकर मांझी/डाटा प्रविष्टि ओपरेटर	51
33.	कार्य जीवन के नकारात्मक प्रभाव (घर से दूर अकेले रहने के संदर्भ में)	देबायन दे/ लेखाकार	52
34.	सिक्किम की नारी: उजाले की ओर	सोनम चेंजोम भोटिया/ सहायक लेखापरीक्षक अधिकारी	53
35.	मेरा प्यारा देवभूमि उत्तराखण्ड	कविता संजय बोरा (पत्नी- संजय सिंह बोरा/सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	54-55
36.	लाफ़िंग क्लब	सायनिका भौमिक (बेटी-मौसुमी भौमिक/सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी)	56
37.	जीवन की भागदौड़ और हमारे सपने	संजीव सिंह/ सहायक लेखा अधिकारी	57
38.	एक रिश्ता	मोहित कुमार/ लेखाकार	58
39.	उसे शराब खा रही थी	मोहित कुमार/ लेखाकार	58
40.	उत्तर बंगाल: पूर्वोत्तर भारत का प्रवेश द्वार	बिनोद कुमार छेत्री/लेखाकार	59-60
41.	चम्पावत - कुमाऊं का रत्न	कविता संजय बोरा (पत्नी- संजय सिंह बोरा/सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	61
42.	आर्तनाद	मौसुमी भौमिक/ सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	62
43.	त्योहार: एक संदेश	चंचल / कनिष्ठ अनुवादक	63-64
44.	हमारा प्यारा घर	कुंतल माजी/ लेखाकार	65-66
45.	स्वामी विवेकानंद द्वारा निर्देशित आत्म-सुधार	कविता संजय बोरा (पत्नी- संजय सिंह बोरा/ लेखापरीक्षा अधिकारी	69-70
46.	वयस्कता	अनंत सरकार/ कल्याण सहायक	71-72
47.	सिक्किम का स्वाद	दीपा उराँव/ कनिष्ठ अनुवादक	73-77
48.	मेरा चौपाया बेटा: विनी	यूडेन लामू भूटिया/ सहायक पर्यवेक्षक	78-79
49.	ग़ज़ल	रिनिका भौमिक (बेटी-मौसुमी भौमिक/सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी)	80
50.	ग़ज़ल	रिनिका भौमिक (बेटी-मौसुमी भौमिक/सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी)	80
51.	कार्यस्थल पर नस्लवाद	हिमांशु सिंह पवार/ लेखापरीक्षक	81-82
52.	भारत और उसकी भौगोलिक विशेषताएं	कृष्ण कुमार मीणा/ लेखापरीक्षक	83-84
53.	वर्ण व्यवस्था : एक गहरा सत्य	शम्भू कुमार/ लेखापरीक्षक	85-86
54.	जीवन में कठिनाईयाँ एक अवसर	अमन कुमार/ लेखाकार	87
55.	टूटी चिड़िया	चंचल / कनिष्ठ अनुवादक	88
56.	मिट्टी के टूटे हुए बर्तन	मंतोष सिंह/ लेखाकार	89
57.	सत्य और असत्य	कृष्ण कुमार मीणा/ लेखापरीक्षक	90
58.	अपने संघर्ष को समझो	संजय छेत्री/ आउटसोर्स	91
59.	भगवद गीता को अपने वास्तविक जीवन में उतारना	चंचल/ कनिष्ठ अनुवादक	92-93
60.	हिमालय की गोद में बसे स्वर्ग: सिक्किम	शुभम शुक्ला/ सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	94-95
61.	मेरी नानी की कहानी	कृष्ण कुमार मीणा/ लेखापरीक्षक	96

62.	तूंगा की पहचान बनी कचौरी और पेड़ा की मशहूर दुकान	कृष्ण कुमार मीणा/ लेखापरीक्षक	99
63.	सहकर्मी से दोस्ती तक: आराधना की यादों के साथ	दीपा उराँव/ कनिष्ठ अनुवादक	100-102

हिमशिखर परिवार

संरक्षक

श्रीमती नर्मदा र.
महालेखाकार
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

परामर्शदाता

श्री श्रेयांश सिंह
(उप महालेखाकार)
श्री जे. शंकर राम
(उप महालेखाकार)

संपादक

सुश्री दीपा उराँव
कनिष्ठ अनुवादक

टंकण कार्य

सुश्री दीपा उराँव
कनिष्ठ अनुवादक
सुश्री चंचल
कनिष्ठ अनुवादक

कार्यालय प्रमुख के नाम

श्रीमती नर्मदा र.
(महालेखाकार)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
सिक्किम, गंगटोक

श्री श्रेयांश सिंह
(उप महालेखाकार)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
सिक्किम, गंगटोक

श्री जे. शंकर राम
(उप महालेखाकार)
कार्यालय व. उप महालेखाकार (लेखा एवं हक)
सिक्किम, गंगटोक

राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के

अनुच्छेद 343 और 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम,

केंद्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि

अपने उदाहरणमय नेतृत्व

और निरंतर निगरानी से;

अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से;

प्रशिक्षण और प्राइज से अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाये रखेंगे,

उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे;

अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए ;

अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा-हिंदी का प्रयोग,

और प्रसार बढ़ाएंगे |

हम राजभाषा के संवर्द्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे |

जय राजभाषा ! जय हिन्द !

सत्यमेव जयते

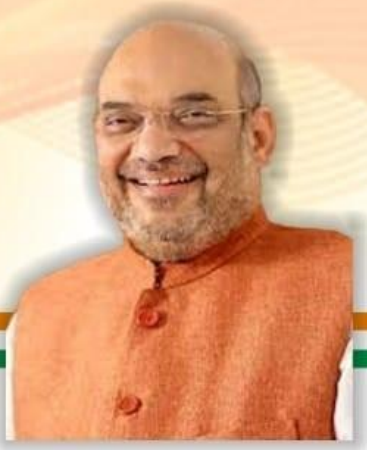

हिंदी दिवस 2025

के अवसर पर

माननीय गृह मंत्री जी

का संदेश

राजभाषा विभाग

गृह मंत्रालय, भारत सरकार

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

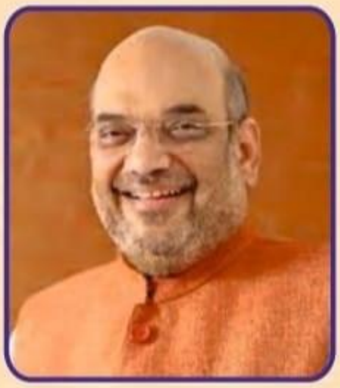

प्रिय देशवासियो !

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत मूलतः भाषा–प्रधान देश है। हमारी भाषाएँ सदियों से संस्कृति, इतिहास, परंपराओं, ज्ञान–विज्ञान, दर्शन और अध्यात्म को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाने का सशक्त माध्यम रही हैं। हिमालय की ऊँचाइयों से लेकर दक्षिण के विशाल समुद्र तटों तक, मरुभूमि से लेकर बीहड़ जंगलों और गाँव की चौपालों तक, भाषाओं ने हर परिस्थिति में मनुष्य को संवाद और अभिव्यक्ति के माध्यम से संगठित रहने और एकजुट होकर आगे बढ़ने का मार्ग दिखाया है।

मिलकर चलो, मिलकर सोचो और मिलकर बोलो, यही हमारी भाषाई और सांस्कृतिक चेतना का मूल मंत्र रहा है।

भारत की भाषाओं की सबसे बड़ी विशेषता यही रही है कि उन्होंने हर वर्ग और समुदाय को अभिव्यक्ति का अवसर दिया। पूर्वोत्तर में बीहू का गान, तमिलनाडु में ओवियालू की आवाज, पंजाब में लोहड़ी के गीत, बिहार में विद्यापति की पदावली, बंगाल में बाउल संत के भजन, आदिम समाज में ढोल–मांदर की थाप पर करमा की गूँज, माताओं की लोरियाँ, किसानों का बारहमासा, कजरी गीत, भिखारी ठाकुर की 'बिदेशिया', इन सबने हमारी संस्कृति को जीवन्त और लोककल्याणकारी बनाया है।

मेरा स्पष्ट मानना है कि भारतीय भाषाएँ एक दूसरे की सहचर बनकर, एकता के सूत्र में बंधकर आगे बढ़ रही हैं। संत तिरुवल्लुवर को जितनी भावुकता से दक्षिण में गाया जाता है, उतनी ही रुचि से उत्तर में भी पढ़ा जाता है। कृष्णदेवराय जितने लोकप्रिय दक्षिण में हुए, उतने ही उत्तर में भी। सुब्रमण्यम भारती की राष्ट्रप्रेम से ओत–प्रोत रचनाएँ हर क्षेत्र के युवाओं में राष्ट्रप्रेम को प्रबल बनाती हैं। गोस्वामी तुलसीदास को हर एक देशवासी पूजता है, संत कबीर के दोहे तमिल, कन्नड़ और मलयालम अनुवादों में पाए जाते रहे हैं। सूरदास की पदावली दक्षिण भारत के मंदिरों और संगीत परंपरा में आज भी प्रचलित है। श्रीमंत शंकरदेव, महापुरुष माधवदेव को हर एक वैष्णव जानता है। और, भूपेन हजारिका को हरियाणा का युवा भी गुनगुनाता है।

गुलामी के कठिन दौर में भी भारतीय भाषाएँ प्रतिरोध की आवाज बनीं और आज़ादी के आंदोलन को राष्ट्रव्यापी बनाने में भूमिका निभाई। हमारे स्वाधीनता सेनानियों ने जनपदों की भाषाओं में, गाँव–देहात की भाषा में लोगों को आज़ादी के आंदोलन से जोड़ा। हिंदी के साथ ही सभी भारतीय भाषाओं के कवियों, साहित्यकारों और नाटककारों ने लोकभाषाओं, लोककथाओं, लोकगीतों और लोकनाटकों के माध्यम से हर आयु, वर्ग और समाज के भीतर स्वाधीनता के संकल्प को प्रबल बनाया। वन्दे मातरम् और जय हिंद जैसे नारे हमारी भाषाई चेतना से ही उपजे और स्वतंत्र भारत के स्वाभिमान के प्रतीक बने।

जब देश आजाद हुआ, तब हमारे संविधान निर्माताओं ने भाषाओं की क्षमता और महत्ता को देखते हुए

इस पर विस्तार से विचार–विमर्श किया और 14 सितम्बर 1949 को देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकृत किया। संविधान के अनुच्छेद 351 में यह दायित्व सौंपा गया कि हिंदी का प्रचार–प्रसार हो और वह भारत की सामासिक संस्कृति का प्रभावी माध्यम बने।

पिछले एक दशक में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं और संस्कृति के पुनर्जागरण का एक स्वर्णिम कालखंड आया है। चाहे संयुक्त राष्ट्रसंघ का मंच हो, जी–20 का सम्मेलन या SCO में संबोधन, मोदी जी ने हिंदी और भारतीय भाषाओं में संवाद कर भारतीय भाषाओं का स्वाभिमान बढ़ाया है।

मोदी जी ने आजादी के अमृत काल में गुलामी के प्रतीकों से देश को मुक्त करने के जो पंच प्रण लिए थे, उसमें भाषाओं की बड़ी भूमिका है। हमें अपनी संवाद और आपसी संपर्क भाषा के रूप में भारतीय भाषा को अपनाना चाहिए, न कि किसी विदेशी भाषा को। तभी हम गुलामी की मानसिकता से पूरी तरह मुक्त हो पाएँगे।

राजभाषा हिंदी ने 76 गौरवशाली वर्ष पूरे किए हैं। राजभाषा विभाग ने अपनी स्थापना के स्वर्णिम 50 वर्ष पूर्ण कर हिंदी को जनभाषा और जनचेतना की भाषा बनाने का अद्‌भुत कार्य किया है। 2014 के बाद से सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को निरंतर बढ़ावा दिया गया है। संसदीय राजभाषा समिति ने वर्ष 1976 में अपनी स्थापना से लेकर 2014 तक माननीय राष्ट्रपति महोदया को प्रतिवेदन के 9 खंड प्रस्तुत किए थे, वहीं 2019 से अब तक 3 खंड प्रस्तुत किए जा चुके हैं। 13–14 नवम्बर 2021 को वाराणसी से प्रारंभ हुए अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलनों की परम्परा भी लगातार आगे बढ़ रही है।

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी राजभाषा विभाग ने उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन पर आधारित 'कंठस्थ 2.0' में आज 5 करोड़ से अधिक वाक्यों का ग्लोबल डाटाबेस उपलब्ध है। 'लीला राजभाषा' और 'लीला प्रवाह' जैसे शिक्षण पैकेजों के माध्यम से 14 भारतीय भाषाओं में हिंदी सीखने की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। वर्ष 2022 में शुरू हुआ 'हिंदी शब्द सिंधु' अब तक लगभग 7 लाख शब्दों से समृद्ध हो चुका है।

2024 में हिंदी दिवस पर 'भारतीय भाषा अनुभाग' की स्थापना की गई, जिसका उद्देश्य सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं के बीच सहज अनुवाद सुनिश्चित करना है। हमारा लक्ष्य यह है कि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएँ केवल संवाद का माध्यम न रहकर तकनीक, विज्ञान, न्याय, शिक्षा और प्रशासन की धुरी बनें। डिजिटल इंडिया, ई–गवर्नेंस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग के इस युग में हम भारतीय भाषाओं को भविष्य के लिए सक्षम, प्रासंगिक और वैश्विक तकनीकी प्रतिस्पर्धा में भारत को अग्रणी बनाने वाली शक्ति के रूप में विकसित कर रहे हैं।

मित्रों, भाषा सावन की उस बूँद की तरह है, जो मन के दुःख और अवसाद को धोकर नई ऊर्जा और जीवन शक्ति देती है। बच्चों की कल्पना से गढ़ी गई अनोखी कहानियों से लेकर दादी–नानी की लोरियों और किस्सों तक, भारतीय भाषाओं ने हमेशा समाज को जिजीविषा और आत्मबल का मंत्र दिया है।

मिथिला के कवि विद्यापति जी ने ठीक ही कहा है:
"देसिल बयना सब जन मिट्ठा।"
अर्थात् अपनी भाषा सबसे मधुर होती है।

आइए, इस हिंदी दिवस पर हम हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान करने और उन्हें साथ लेकर आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी तथा विकसित भारत की दिशा में आगे बढ़ने का संकल्प लें।

आप सभी को एक बार फिर से हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

वंदे मातरम्।

नई दिल्ली
14 सितंबर, 2025

(अमित शाह)

इस पर विस्तार से विचार–विमर्श किया और 14 सितम्बर 1949 को देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकृत किया। संविधान के अनुच्छेद 351 में यह दायित्व सौंपा गया कि हिंदी का प्रचार–प्रसार हो और वह भारत की सामासिक संस्कृति का प्रभावी माध्यम बने।

पिछले एक दशक में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं और संस्कृति के पुनर्जागरण का एक स्वर्णिम कालखंड आया है। चाहे संयुक्त राष्ट्रसंघ का मंच हो, जी–20 का सम्मेलन या SCO में संबोधन, मोदी जी ने हिंदी और भारतीय भाषाओं में संवाद कर भारतीय भाषाओं का स्वाभिमान बढ़ाया है।

मोदी जी ने आजादी के अमृत काल में गुलामी के प्रतीकों से देश को मुक्त करने के जो पंच प्रण लिए थे, उसमें भाषाओं की बड़ी भूमिका है। हमें अपनी संवाद और आपसी संपर्क भाषा के रूप में भारतीय भाषा को अपनाना चाहिए, न कि किसी विदेशी भाषा को। तभी हम गुलामी की मानसिकता से पूरी तरह मुक्त हो पाएँगे।

राजभाषा हिंदी ने 76 गौरवशाली वर्ष पूरे किए हैं। राजभाषा विभाग ने अपनी स्थापना के स्वर्णिम 50 वर्ष पूर्ण कर हिंदी को जनभाषा और जनचेतना की भाषा बनाने का अद्भुत कार्य किया है। 2014 के बाद से सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को निरंतर बढ़ावा दिया गया है। संसदीय राजभाषा समिति ने वर्ष 1976 में अपनी स्थापना से लेकर 2014 तक माननीय राष्ट्रपति महोदया को प्रतिवेदन के 9 खंड प्रस्तुत किए थे, वहीं 2019 से अब तक 3 खंड प्रस्तुत किए जा चुके हैं। 13–14 नवम्बर 2021 को वाराणसी से प्रारंभ हुए अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलनों की परम्परा भी लगातार आगे बढ़ रही है।

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी राजभाषा विभाग ने उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन पर आधारित 'कंठस्थ 2.0' में आज 5 करोड़ से अधिक वाक्यों का ग्लोबल डाटाबेस उपलब्ध है। 'लीला राजभाषा' और 'लीला प्रवाह' जैसे शिक्षण पैकेजों के माध्यम से 14 भारतीय भाषाओं में हिंदी सीखने की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। वर्ष 2022 में शुरू हुआ 'हिंदी शब्द सिंधु' अब तक लगभग 7 लाख शब्दों से समृद्ध हो चुका है।

2024 में हिंदी दिवस पर 'भारतीय भाषा अनुभाग' की स्थापना की गई, जिसका उद्देश्य सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं के बीच सहज अनुवाद सुनिश्चित करना है। हमारा लक्ष्य यह है कि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएँ केवल संवाद का माध्यम न रहकर तकनीक, विज्ञान, न्याय, शिक्षा और प्रशासन की धुरी बनें। डिजिटल इंडिया, ई–गवर्नेंस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग के इस युग में हम भारतीय भाषाओं को भविष्य के लिए सक्षम, प्रासंगिक और वैश्विक तकनीकी प्रतिस्पर्धा में भारत को अग्रणी बनाने वाली शक्ति के रूप में विकसित कर रहे हैं।

मित्रों, भाषा सावन की उस बूँद की तरह है, जो मन के दुःख और अवसाद को धोकर नई ऊर्जा और जीवन शक्ति देती है। बच्चों की कल्पना से गढ़ी गई अनोखी कहानियों से लेकर दादी–नानी की लोरियों और किस्सों तक, भारतीय भाषाओं ने हमेशा समाज को जिजीविषा और आत्मबल का मंत्र दिया है।

मिथिला के कवि विद्यापति जी ने ठीक ही कहा हैः

"देसिल बयना सब जन मिट्ठा।"

अर्थात् अपनी भाषा सबसे मधुर होती है।

आइए, इस हिंदी दिवस पर हम हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान करने और उन्हें साथ लेकर आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी तथा विकसित भारत की दिशा में आगे बढ़ने का संकल्प लें।

आप सभी को एक बार फिर से हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

वंदे मातरम्।

नई दिल्ली
14 सितंबर, 2025

(अमित शाह)

महालेखाकार का सन्देश

मुझे आपके समक्ष हमारे कार्यालय की वार्षिक हिंदी पत्रिका **"हिमशिखर"** का **25वाँ संस्करण** प्रस्तुत करते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। यह संस्करण न केवल हमारी साहित्यिक और रचनात्मक प्रवृत्तियों का प्रतिबिंब है, बल्कि राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार और प्रगतिशील प्रयोग के प्रति हमारी अटूट प्रतिबद्धता का भी प्रमाण है। संविधान में निहित होने के कारण, हिंदी हमारे प्रशासनिक कामकाज में सरलता, पारदर्शिता और दक्षता सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हमें इस बात पर गर्व है कि हमारे कार्यालय में हिंदी के प्रयोग को निरंतर प्रोत्साहित किया जा रहा है और हमारे अधिकारी गण अपने दैनिक कार्यों में इसे पूरी निष्ठा से अपना रहे हैं।

इस विशेष अवसर पर, मैं उन सभी अधिकारियों और कार्मिकों को हार्दिक बधाई और आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने अपने विचारोत्तेजक लेखों, गहन लेखन और रचनात्मक अभिव्यक्तियों से इस पत्रिका को समृद्ध किया है। आपके योगदान ने **"हिमशिखर"** को न केवल एक प्रकाशन, बल्कि हमारी सामूहिक बुद्धि, प्रतिभा और सांस्कृतिक मूल्यों का दर्पण बना दिया है। मेरा दृढ़ विश्वास है कि यह रजत जयंती संस्करण सभी के लिए एक ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायक पठन सामग्री के रूप में कार्य करेगा और हमें अपने आधिकारिक पत्राचार और प्रशासनिक कार्यों में हिंदी के अधिकतम प्रयोग के लिए प्रोत्साहित करेगा।

मैं सभी सहयोगियों से भी अनुरोध करती हूँ कि वे अपने बहुमूल्य सुझाव और प्रतिक्रियाएँ साझा करते रहें। ऐसा रचनात्मक मार्गदर्शन हमें निरंतर प्रेरित करता है, सही दिशा प्रदान करता है और पत्रिका को और अधिक परिष्कृत, आकर्षक और संरक्षण योग्य बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अंत में, मैं संपादकीय बोर्ड और सभी सहयोगियों के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता और धन्यवाद व्यक्त करती हूँ जिनके समर्पण, रचनात्मकता और अथक प्रयासों ने इस संस्करण को संभव बनाया है।

श्रीमती नर्मदा र.
(महालेखाकार)

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

उप महालेखाकार का सन्देश

मुझे यह सूचित करते हुए विशेष संतोष एवं गर्व का अनुभव हो रहा है कि हमारे कार्यालय की वार्षिक हिन्दी पत्रिका "हिमशिखर" का पच्चीसवाँ अंक प्रकाशनार्थ प्रस्तुत किया जा रहा है | यह अंक इस कार्यालय के अधिकारी एवं कर्मचारीगण की सृजनात्मक अभिरुचि, साहित्यिक अभिव्यक्ति तथा राजभाषा हिन्दी के प्रति उनकी निष्ठा एवं प्रतिबद्धता का स्पष्ट द्योतक है | जैसा कि सर्वविदित है, हिन्दी प्रशासनिक कार्यप्रणाली को सरल, सुव्यवस्थित एवं जनोन्मुख बनाने का प्रभावी माध्यम है। यह तथ्य विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि इस कार्यालय में हिन्दी के प्रयोग की प्रवृत्ति निरन्तर उर्ध्वमुखी है तथा अधिकारी एवं कर्मचारीगण अपने विविध कार्यक्षेत्रों में उत्साह एवं तत्परता के साथ हिन्दी का प्रयोग कर रहे हैं।

इस अंक की विषयवस्तु को समृद्ध एवं उपयोगी बनाने में सहयोग प्रदान करने वाले सभी अधिकारी एवं कर्मचारीगण के प्रति मैं अपनी गहन कृतज्ञता अभिव्यक्त करता हूँ। **"हिमशिखर"** कार्यालय परिवार की सामूहिक प्रतिभा, विचार, अनुभव एवं रचनात्मकता का सुव्यवस्थित मंच है, जो भविष्य में और भी अधिक परिपुष्ट एवं सार्थक सिद्ध होगा।

मेरा निवेदन है कि पाठकगण अपनी प्रतिक्रियाएँ एवं रचनात्मक सुझाव निरन्तर प्रेषित करते रहें, जिससे पत्रिका की गुणवत्ता, प्रासंगिकता एवं उपयोगिता में सतत अभिवृद्धि सुनिश्चित हो सके। अन्त में, सम्पादकीय मण्डल के सभी सदस्यों को उनके परिश्रम, समर्पण एवं कुशल संपादन हेतु धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ तथा उनके निरन्तर सफल एवं उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ प्रदान करता हूँ।

श्री श्रेयांश सिंह
उप महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

उप महालेखाकार का सन्देश

मुझे अपने कार्यालय की हिंदी पत्रिका "हिमशिखर" का नवीनतम अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए प्रसन्नता हो रही है| पत्रिका के प्रकाशन से हिंदी के प्रचार एवं प्रसार को व्यापक एवं प्रभावी बनाने में सफलता प्राप्त होगी और कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने के साथ-साथ अपनी सृजनात्मकता एवं कौशल का प्रदर्शन करने का अवसर मिलेगा |

कार्यालय दिनचर्या की व्यस्तता होने के बावजूद अधिकारियों और कर्मचारियों ने अपनी रचनाओं का समावेश कर अपना योगदान दिया है| पत्रिका कार्यालय के कार्मिकों की मौलिकता एवं सृजनात्मकता को उजागर करने में सफल हुई है| रचनाकारों ने अपनी कविताओं, लेखादि के माध्यम से अपने मन के भावों और विचारों को बहुत सरल एवं रूचिकर ढंग से प्रस्तुत किया है|

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु सम्पादक मंडल एवं रचनाकारों को हार्दिक शुभकामनाएँ |

श्री जे. शंकर राम
उप महालेखाकार (लेखा एवं हक़)

कनिष्ठ अनुवादक का संदेश

हिंदी भाषा हमारी सांस्कृतिक पहचान, हमारी भावना और हमारी आत्मा की अभिव्यक्ति है। यह सिर्फ एक भाषा ही नहीं, बल्कि हमारे देश की विविधता और एकता का सजीव प्रतीक है। हिंदी के शब्दों में हमारी सभ्यता की गहराई, हमारी परंपराओं की मिठास और हमारे समाज की समृद्धि झलकती है।

इस मैगज़ीन के माध्यम से हम हिंदी भाषा को केवल संवाद का साधन ही नहीं, बल्कि एक जीवंत संस्कृति के रूप में प्रस्तुत करते हैं। यह हमारे विचारों को आकार देती है, हमारी सोच को दिशा देती है और हमारी भावनाओं को उड़ान देती है।

हिंदी का प्रचार-प्रसार और उसके विकास के लिए यह प्रयास हमारे देश की प्रगति और गर्व का आधार है। आइए, हम सब मिलकर हिंदी को और अधिक सशक्त बनाएँ, उसे अपनी भाषा की गरिमा से सजाएँ और इसे हर दिल की जुबान बनाएँ। इस मैगज़ीन के प्रत्येक अंक में हिंदी की विविधता, सौंदर्य और ताकत का प्रतिबिंब आपको मिलेगा। मैं सभी पाठकों को हिंदी के इस महोत्सव में सक्रिय सहभागिता का आमंत्रण देती हूँ। हिंदी ही हमारी अस्मिता है और इसे सहेजना, बढ़ाना और समृद्ध करना हम सबका धर्म है।

जय हिंदी, जय भारत!

चंचल

सुश्री चंचल
कनिष्ठ अनुवादक
(लेखा एवं हक़.)

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कनिष्ठ अनुवादक का संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि हमारे कार्यालय की वार्षिक राजभाषा पत्रिका "हिमशिखर" का 25वाँ अंक प्रकाशित हो रहा है। यह पत्रिका हमारे सहकर्मियों की सृजनात्मकता, अभिरुचि और अभिव्यक्ति का जीवंत स्वरूप है।

"हिमशिखर" के माध्यम से हमें हिंदी भाषा के संवर्द्धन और प्रसार के साथ-साथ साहित्य, संस्कृति एवं विविध विषयों पर विचार साझा करने का अवसर प्राप्त होता है। यह पत्रिका न केवल हमारी रचनात्मकता का दर्पण है, बल्कि राजभाषा हिंदी के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का भी प्रतीक है। कार्यालयीन कार्यों में हिंदी का प्रयोग न केवल हमारी संवैधानिक जिम्मेदारी है, बल्कि यह प्रशासनिक कार्यकुशलता और जनसामान्य से सहज सम्प्रेषण का प्रभावी माध्यम भी है। हिंदी के माध्यम से हम अपनी अभिव्यक्ति को सरल, सुलभ और सर्वग्राह्य बना सकते हैं।

मैं सभी लेखकों, संकलन एवं संपादन से जुड़े साथियों को हार्दिक बधाई देती हूँ जिनके प्रयासों से यह 25वाँ अंक संभव हो पाया है। मुझे विश्वास है कि "हिमशिखर" का यह विशेष अंक पाठकों को अवश्य ही प्रेरित एवं आनंदित करेगा।

दीपा

सुश्री दीपा उराँव
कनिष्ठ अनुवादक

संपादकीय

हम सभी के लिए यह गर्व और आनंद का विषय है कि हमारे कार्यालय की वार्षिक राजभाषा पत्रिका "हिमशिखर" का 25वाँ अंक पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। एक चतुर्थांश शताब्दी की यह यात्रा केवल एक प्रकाशन की निरंतरता ही नहीं, बल्कि हिंदी भाषा के प्रति हमारे सामूहिक समर्पण और सृजनशीलता का भी प्रतीक है।

राजभाषा हिंदी का प्रयोग कार्यालयीन कार्यों में केवल संवैधानिक प्रावधान ही नहीं, अपितु प्रशासनिक दक्षता तथा जनसंपर्क की सहजता का भी माध्यम है। जब हम अपने दैनंदिन कार्यों में हिंदी का प्रयोग करते हैं तो न केवल संवाद अधिक प्रभावशाली बनता है, बल्कि कार्य संस्कृति में भी पारदर्शिता और सरलता का संचार होता है। इस दृष्टि से हिंदी का प्रचार-प्रसार हमारे लिए राष्ट्रीय उत्तरदायित्व के साथ-साथ व्यावहारिक आवश्यकता भी है।

"हिमशिखर" के पन्नों पर हमारे सहकर्मियों की रचनात्मक अभिव्यक्ति, विचारधारा और साहित्यिक प्रतिभा प्रतिबिंबित होती है। इस पत्रिका का उद्देश्य केवल साहित्यिक अभिरुचि का विकास ही नहीं, बल्कि कार्यालय में हिंदी के प्रयोग की प्रेरणा को और अधिक सशक्त करना भी है।

हमारे पाठकों से निवेदन है कि वे इस अंक के संबंध में अपने मूल्यवान सुझाव एवं प्रतिक्रियाएँ अवश्य साझा करें, ताकि भविष्य में पत्रिका की विषयवस्तु, प्रस्तुति और गुणवत्ता को और भी समृद्ध तथा प्रभावी बनाया जा सके। आपके सहयोग और मार्गदर्शन से ही "हिमशिखर" नई ऊँचाइयाँ प्राप्त कर सकेगी।

मैं उन सभी रचनाकारों, संपादकीय समिति के सदस्यों तथा सहयोगियों को हार्दिक बधाई देता हूँ जिनके अथक प्रयासों से यह 25वाँ अंक संभव हो पाया है। मुझे विश्वास है कि "हिमशिखर" का यह विशेषांक हिंदी के प्रचार-प्रसार और कार्यालयीन कार्यों में इसके व्यावहारिक उपयोग को नई दिशा प्रदान करेगा।

दीपा

संपादक,
सुश्री दीपा उराँव,
कनिष्ठ अनुवादक

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

आप के पत्र

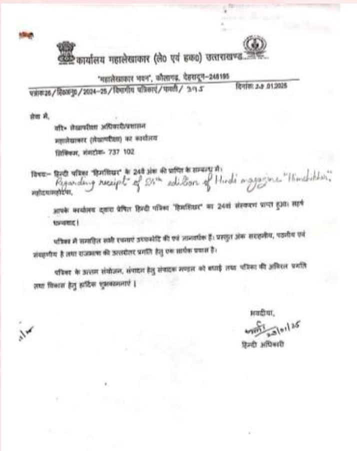

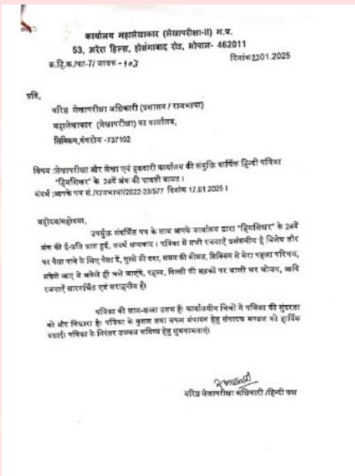

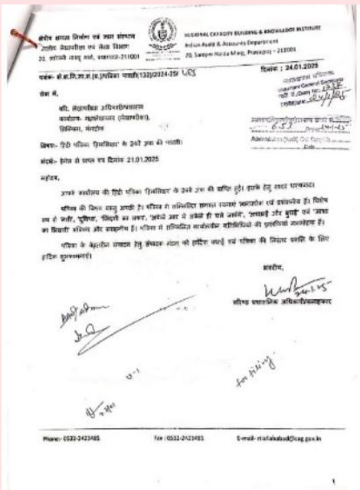

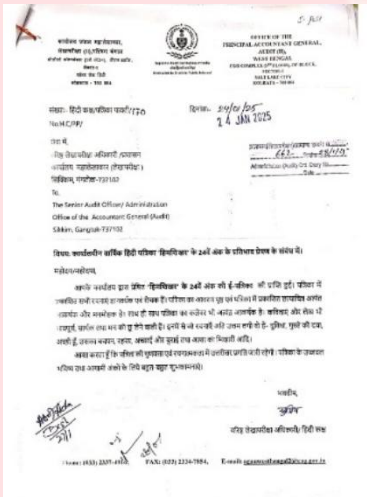

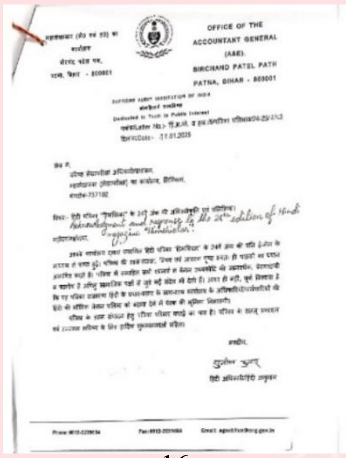

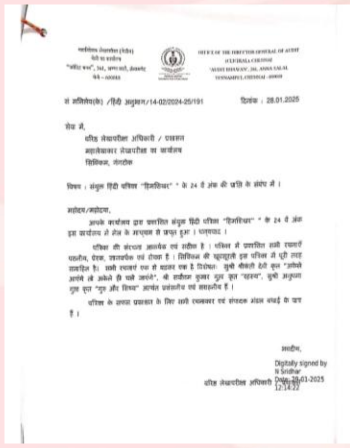

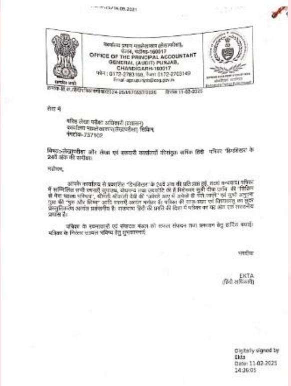

OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT) PUNJAB, CHANDIGARH-160017

फोन : 0172-2783168, फैक्स 0172-2703149

दिनांक 11-02-2025

सेवा में

वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी (प्रशासन)

गंगटोक-737102

महोदय,

भवदीय

EKTA

(हिंदी अधिकारी)

Digitally signed by Ekta Date: 11-02-2025 14:36:05

OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A & E), TAMILNADU,

361, ANNA SALAI, TEYNAMPET, CHENNAI 600 018

ई-मेल/Email: agaetamilnadu@cag.gov.in

सं. हिंदी कक्षा Hindi Cell दिनांक: 23.01.2025

To,

SENIOR AUDIT OFFICER/ADMIN,

OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT),

SIKKIM

GANGTOK-737102

भवदीया

हिन्दी अधिकारी

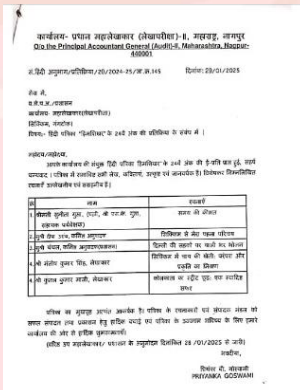

कार्यालय- प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II, महाराष्ट्र, नागपुर

O/o the Principal Accountant General (Audit)-II, Maharashtra, Nagpur-440001

सं.हिंदी अनुभाग/प्रतिक्रिया/20/2024-25/आ.क्र.145 दिनांक: 29/01/2025

सेवा में,

सिक्किम, गंगटोक।

महोदय/महोदया,

(वरिष्ठ उप महालेखाकार/ प्रशासन के अनुमोदन दिनांकित 28 /01/2025 से जारी।

भवदीया,

प्रियंका पी. गोस्वामी

PRIYANKA GOSWAMI

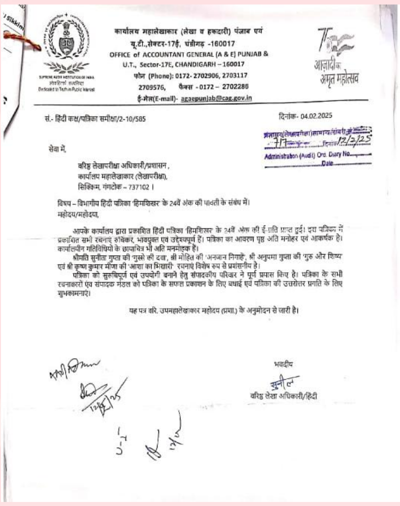

कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी) पंजाब एवं

यू.टी.,सेक्टर-17ई, चंडीगढ़ -160017

OFFICE of ACCOUNTANT GENERAL (A & E) PUNJAB &

U.T., Sector-17E, CHANDIGARH – 160017

फोन (Phone): 0172- 2702906, 2703117

2709576, फैक्स - 0172 – 2702286

ई-मेल(E-mail)- agaepunjab@cag.gov.in

सं.- हिंदी कक्ष/पत्रिका समीक्षा/2-10/585

दिनांक- 04.02.2025

Administration (Audit) Ord. Diary No. 717 Date 12/2/25

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन ,

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा),

सिक्किम, गंगटोक – 737102 ।

विषय – विभागीय हिंदी पत्रिका 'हिमशिखर' के 24वें अंक की पावती के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'हिमशिखर' के 24वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रुचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ अति मनोहर एवं आकर्षक है। कार्यालयीन गतिविधियों के छायाचित्र भी अति मनमोहक हैं।

श्रीमति सुनीता गुप्ता की 'गुस्से की दवा', श्री मोहित की 'अनजान निगाहें', श्री अनुपमा गुप्ता की 'गुरु और शिष्य' एवं श्री कृष्ण कुमार मीणा की 'आशा का भिखारी' रचनाएं विशेष रुप से प्रशंसनीय है।

पत्रिका को सुरुचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने हेतु संपादकीय परिवार ने पूर्ण प्रयास किए है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एंव संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

यह पत्र वरि. उपमहालेखाकार महोदय (प्रशा.) के अनुमोदन से जारी है।

भवदीय

वरिष्ठ लेखा अधिकारी/हिंदी

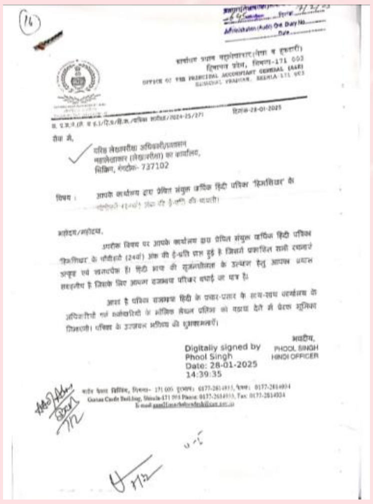

Administration (Audit) Ord. Diary No.

दिनांक-28-01-2025

सिक्किम, गंगटोक- 737102

भवदीय,

Digitally signed by Phool Singh Date: 28-01-2025 14:39:35

PHOOL SINGH

HINDI OFFICER

बूढ़ा पेड़

चंचल
कनिष्ठ अनुवादक

गाँव के किनारे एक बूढ़ा पेड़ था, जिसकी टहनियाँ सूख चुकी थीं और पत्ते झड़ गए थे। लेकिन गाँव के लोग उसे छोड़ नहीं पाते थे। कहना था कि उस पेड़ के नीचे बैठकर जो भी बीते कल की यादें सोचता है, उसे अपने दुखों का हल मिल जाता है ।

उसी गाँव में एक रामलाल नाम का लड़का था, जो शहर में पढ़ाई करता था। छुट्टियों में वह गाँव आता, और उस बूढ़े पेड़ के नीचे घंटों बैठा रहता। पेड़ के सूखे तनों को देखकर उसका मन उदास हो जाता, क्योंकि वह भी अपने भीतर कहीं सूखा-सा, टूटा-सा महसूस करता था। शहर की भाग-दौड़, पढ़ाई के दबाव और अकेलेपन ने उसकी आत्मा को झकझोर दिया था।

एक दिन, रामलाल पेड़ के नीचे बैठा था, तभी उसने देखा कि पेड़ के एक सूखे तने में एक छोटा पौधा निकल आया है। वह पतला और नाजुक था, पर उसमें ज़िंदगी की झलक थी। रामलाल ने उस पौधे को अपने साथ गाँव के कुँए के पास पानी देना शुरू किया।

धीरे-धीरे वह पौधा बड़ा होने लगा, और उसकी हरियाली में रामलाल को अपनी उम्मीद नजर आने लगी। वह समझ गया कि जैसे पेड़ में भी नयी जान आ सकती है, वैसे ही मनुष्य के भीतर भी। टूटे मन की जगह फिर से प्यार, उम्मीद और मेहनत की जड़ें उग सकती हैं। रामलाल ने वह पौधा लेकर शहर भी जाना शुरू किया। हर दिन जब भी वह अपने तनाव और चिंता से घिरता, वह पौधे को देखता, उसे पानी देता, और अपने मन को संभालता।

वक्त के साथ, बूढ़ा पेड़ अब भी सूखा था, पर उस पेड़ के नीचे उगा नया पौधा, रामलाल की उम्मीद और संघर्ष की कहानी बन गया। और रामलाल ने जाना कि टूटेपन में भी नयी ज़िंदगी अंकुरित हो सकती है—बस उसे प्यार और धैर्य चाहिए।

कहानी का सार:

टूटे हुए, पुराने, या कमजोर लगने वाले चीज़ों में भी नयी ज़िंदगी, नयी उम्मीद हो सकती है। बस ज़रूरत है उन्हें पहचानने और सँवारने की।

~~~~~
~~~~~

मखाना की चमक, किसान की छाया

नरेश कुमार यादव,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

पोखर की छाती पर खिलता है फूल,
मखाना नाज़ुक, पर मजबूत उसूल।
मखाना का हर दाना कहता है बीते बरसों की बात,
जहाँ बाढ़ ने सब कुछ छीना, फिर भी बची है मखाना सौगात।

दरभंगा की धरती, सहरसा की साँस,
हर साल डूबती है उम्मीदों की प्यास।
मिट्टी में लिपटी है मेहनत की लकीर,
पर बाज़ार में बिकती है चुप्पी की तस्वीर।

मधुबनी के खेतों में सूरज उगता है धीमे,
किसान उठता है, फिर डूबता है जी में।
सपनों की कीमत तय होती है दूर,
जहाँ मखाना बिकता है, वहाँ नहीं है नूर।

सीतामढ़ी की गलियों में बहती है कहानी,
पीढ़ियाँ गुज़रीं, पर बदली नहीं रवानी।
मखाना उगाना कोई व्यापार नहीं है,
ये तो आत्मा है, जो कहती है हम यहीं है ।

सुपौल की छाँव में बाढ़ का रंग,
हर साल बहा ले जाती है जीवन का संग।
फिर भी किसान बोता है विश्वास,
कि शायद मिलेगा कभी न्याय का प्रकाश।

पोखर की गहराई में उतरता है किसान,
धूप-छाँव में चलता है उसका अभियान।
कमर तक पानी, कीचड़ की चाल,
हर बीज निकालता है जैसे कोई लाल।

हाथों में छाले, पर मन में है आस,
कि मखाना बनेगा फिर जीवन का प्रकाश।
घंटों की मेहनत, न कोई गिनती, न नाम,
बस उम्मीद है मिलेगा कभी उचित दाम।

बाज़ारों में चमकता है मखाना का नाम,

पर किसान के घर में नहीं है आराम।

दुनिया खाती है, सराहती है स्वाद,

पर जिसने उगाया, उसे नहीं मिला कभी उचित दाम।

~~~
~~~

गणतंत्र दिवस 2025

गणतंत्र दिवस समारोह

HAPPY REPUBLIC DAY
2025

झारखंड के 6 अद्भुत जलप्रपात

दीपा उराँव,
कनिष्ठ अनुवादक

भारत का हृदय कहे जाने वाले झारखण्ड की पहचान केवल खनिज संपदा और आदिवासी संस्कृति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह राज्य प्राकृतिक सौंदर्य से भी परिपूर्ण है। घने साल और सागवान के जंगल, पहाड़ियाँ, नदियाँ और इनके बीच गिरते झरने मानो धरती पर स्वर्ग का अहसास कराते हों। झारखण्ड के जलप्रपात न केवल दृश्यात्मक सौंदर्य प्रदान करते हैं, बल्कि इनके आसपास फैली संस्कृति, आस्था और लोककथाएँ इन्हें और भी खास बनाती हैं। आइए, जानते हैं झारखण्ड के छह प्रमुख जलप्रपातों के बारे में विस्तार से।

1. दसम जलप्रपात

रांची से लगभग 40 किलोमीटर दूर तामाड़ प्रखंड में स्थित दसम जलप्रपात, सुवर्णरिखा नदी की सहायक नदी "कांची" से उत्पन्न होता है। यह झरना लगभग 144 फीट की ऊँचाई से गिरता है। यहाँ का नाम "दसम" स्थानीय मुंडारी शब्द "दाअ" (मतलब पानी गिरने की जगह) से बना है। मानसून में यह झरना और भी प्रचंड रूप ले लेता है। पर्यटक यहाँ पिकनिक और फोटोग्राफी के लिए बड़ी संख्या में आते हैं। जलप्रपात के आसपास बने वन क्षेत्र में पक्षियों की मधुर चहचहाहट इसे और भी जीवंत बना देती है।

2. हुंडरू जलप्रपात

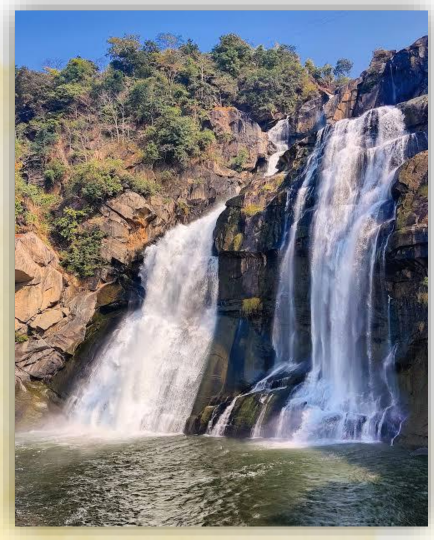

झारखंड का सबसे ऊँचा और प्रसिद्ध झरना हुंडरू जलप्रपात रांची से लगभग 45 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह सुवर्णरिखा नदी से गिरता है और 320 फीट की ऊँचाई से नीचे आता है।

हुंडरू का पानी नीचे गिरते समय धुंध और इंद्रधनुष जैसी छवि बनाता है, जो पर्यटकों को मंत्रमुग्ध कर देता है। यहाँ का चट्टानी इलाका साहसिक गतिविधियों और ट्रेकिंग के लिए उपयुक्त है। मानसून में इसकी गर्जना दूर-दूर तक सुनाई देती है। इस जलप्रपात के आसपास कई प्राकृतिक तालाब भी बने हैं जहाँ स्नान का आनंद लिया जा सकता है।

3. जोन्हा जलप्रपात (गौतमधारा)

जोन्हा जलप्रपात रांची से लगभग 40 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह झरना लगभग 141 फीट ऊँचा है और इसे गौतम धारा भी कहा जाता है।

मान्यता है कि यहाँ भगवान बुद्ध ने कुछ समय ध्यान किया था। यहाँ तक पहुँचने के लिए लगभग 700 सीढ़ियाँ उतरनी पड़ती हैं, जो यात्रा को रोमांचक और चुनौतीपूर्ण बनाती हैं। आसपास बने छोटे-छोटे झरने और प्राकृतिक तालाब इस जगह को परिवारों के लिए आदर्श पिकनिक स्पॉट बनाते हैं। धार्मिक और प्राकृतिक पर्यटन का अद्‌भुत संगम यहाँ देखने को मिलता है।

4. पंच घाघ जलप्रपात

खूंटी जिले में स्थित यह झरना पाँच धाराओं में बँटा हुआ है, इसलिए इसे पंच घाघ कहा जाता है। यह झारखण्ड के सबसे आकर्षक और शांत झरनों में से एक है।

यहाँ का पानी पाँच अलग-अलग धाराओं में चट्टानों से गिरता है, जो एक मनमोहक दृश्य प्रस्तुत करता है। आसपास के साल और महुआ के जंगल इस जगह को और भी मनोरम बनाते हैं। स्थानीय लोग इसे पिकनिक और त्यौहारों के दौरान विशेष स्थल मानते हैं। यहाँ के आस-पास की आदिवासी संस्कृति, लोकगीत और लोकनृत्य पर्यटकों को झारखण्ड की आत्मा से जोड़ते हैं।

5. हिरणी जलप्रपात

खूंटी जिले की हरी-भरी घाटियों में स्थित हिरणी जलप्रपात लगभग 120 फीट की ऊँचाई से गिरता है। इसका नाम हिरणों की अधिकता के कारण पड़ा, जो कभी इस क्षेत्र में बड़ी संख्या में पाए जाते थे।

यहाँ का जंगल इतना घना है कि दिन में भी गहरी छाया छाई रहती है। पर्यटक खासकर यहाँ सूर्यास्त का दृश्य देखने आते हैं, जब सुनहरी किरणें पानी की धाराओं पर पड़कर अद्भुत नज़ारा प्रस्तुत करती हैं। प्रकृति प्रेमियों और फोटोग्राफरों के लिए यह स्थान किसी खजाने से कम नहीं है।

6. लोध जलप्रपात

पलामू जिले के खूबसूरत पहाड़ी क्षेत्रों में स्थित लोध जलप्रपात झारखण्ड का सबसे ऊँचा झरना है। यह लगभग 468 फीट की ऊँचाई से गिरता है और चारों ओर गूँज पैदा करता है।

इसे स्थानीय लोग बुरहा पांडु भी कहते हैं। यह झरना पलामू टाइगर रिज़र्व के पास स्थित है, इसलिए यहाँ वन्यजीवों की झलक भी देखने को मिल सकती है। मानसून के समय जब इसका जल प्रवाह तेज़ होता है, तो इसकी आवाज़ कई किलोमीटर दूर तक सुनाई देती है। साहसिक पर्यटन, फोटोग्राफी और प्रकृति का आनंद लेने वालों के लिए यह स्थान किसी वरदान से कम नहीं।

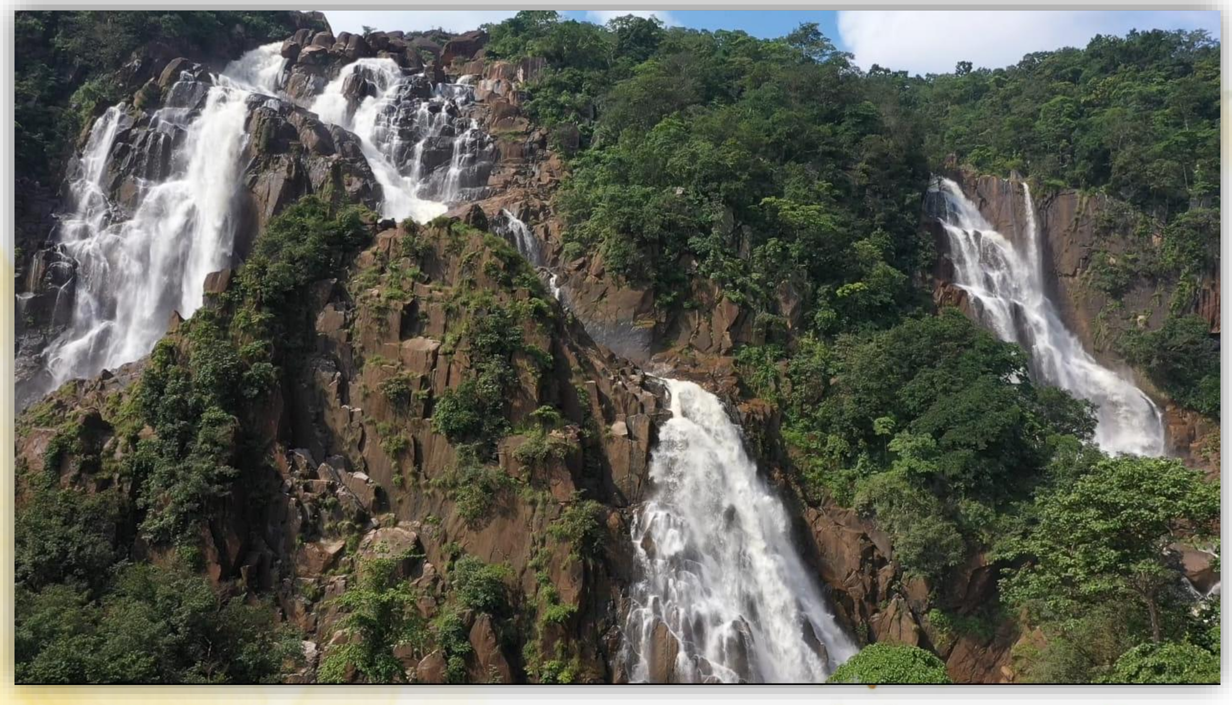

निष्कर्ष

झारखण्ड के ये छह जलप्रपात केवल पानी की धाराएँ नहीं, बल्कि प्रकृति की कला के अद्भुत नमूने हैं। ये स्थान पर्यटकों को सुकून, रोमांच और प्राकृतिक सुंदरता का अनुभव कराते हैं। साथ ही, यह स्थानीय आदिवासी संस्कृति, लोककथाओं और परंपराओं से जुड़े हैं। झारखण्ड की यात्रा अगर करनी हो, तो इन झरनों की सैर किए बिना वह अधूरी मानी जाएगी। राज्य में 100 से अधिक छोटे-बड़े जलप्रपात हैं, जिनमें से कई अभी भी कम-ज्ञात हैं और खोजे जाने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। इसीलिए झारखण्ड को सही मायनों में **"झरनों की धरती"** कहा जाता है।

~~~~~
~~~~~

मेहनत

आयुष बिस्ट
लेखाकार

जो तेरे अन्दर के साहस को पहचान लेता है ,
कोई है जो तेरे हौसलों को उड़ान देता है ....

छुपा नहीं रह सकता किसी फनकार के अन्दर,
हर फन परिश्रमी को , मैदान देता है .....

सिर्फ वही बदल सकता है सपनों को हकीकत में,
जो शख्स जिंदादिल रहकर अपनी जान देता है....

किस्मत भी काँप उठती है उन कोशिशों से,
जो शख़्स ज़िंदगी को कर्मों का तूफ़ान देता है....

कहने को तो इंसान है सिर्फ मिट्टी का पुतला,
हीरा है, जो तराशने वाले को शान देता है......

यूँ तो कितने इंसान हैं यहाँ एक ही नाम के,
अमर है, जो मेहनत से नाम को पहचान देता है.....

~ ~ ~

देवभूमि उत्तराखण्ड की चार-धाम यात्रा

संजय सिंह बोरा,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

देवभूमि उत्तराखण्ड प्राचीन काल से ही ऋषि-मुनियों की भूमि रही है। यहाँ की सुरम्य पर्वत-श्रंखलाओं के मध्य स्थित चार धामों यमुनोत्री, गंगोत्री, केदारनाथ एवं बद्रीनाथ की यात्रा को मोक्षदायिनी माना जाता है। इनकी यात्रा भी शास्त्रों के अनुसार इसी क्रम में की जाती है। पहले चार-धाम यात्रा काफी कठिन होती थी। कई श्रद्धालु इसे मोक्ष यात्रा मानकर, यात्रा के दौरान ही प्राण त्यागकर मोक्ष प्राप्ति की अभिलाषा करते थे। समय के साथ विकास होने के कारण सड़को के निर्माण से चार-धाम यात्रा अत्यंत सुगम हो गयी है। देवभूमि के इन चार धामों का वर्णन कुछ इस प्रकार है|

यमुनोत्री

यमुनोत्री धाम जनपद उत्तरकाशी में सिन्धुतल से 3235 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। मंदिर से आगे एक किलोमीटर पर स्थित यमुनोत्री हिमनद से यमुना नदी निकलती है। मंदिर के पास ही गर्म जल का स्त्रोत है, इसमें दाल व चावल कपड़े में बांधकर पकाया जाता है। यमराज ने यहीं यमुनोत्री में तपस्या करके लोकपाल का पद प्राप्त किया था।

यात्रा मार्गः यमुनोत्री के लिए दो मार्ग हैं। पहला मार्ग ऋषिकेश से चम्बा, धरासू होते हुए बडकोट से जानकीचट्टी तक है। ऋषिकेश से यमुनोत्री 222 किलोमीटर है, जिसमें हनुमानचट्टी से पैदल यात्रा 6 किलोमीटर है। दूसरा मार्ग हरिद्वार से देहरादून, मसूरी, नौगाँव, बडकोट, हनुमानचट्टी होकर है।

दर्शनीय स्थल: यमुनादेवी मंदिर, सूर्यकुंड (गर्म जल स्रोत), दिव्यशिला।

गंगोत्री

यमुनोत्री से गंगोत्री जाने के लिए बडकोट, धरासु, उत्तरकाशी, हर्षिल, भौरों घाटी होकर पहुंचा जाता है। उत्तरकाशी से 97 किलोमीटर की दुरी पर समुद्रतल से 3200 मीटर की ऊंचाई पर गंगोत्री मंदिर स्थापित है। यह मंदिर यमुनोत्री से 232 किलोमीटर तथा ऋषिकेश से 252 किलोमीटर की दुरी पर स्थित है। गंगोत्री मंदिर के कपाट दीपावली के बाद भैयादूज पर्व पर बंद हो जाते हैं और अक्षय तृतीय पर्व पर खुलते हैं। गंगोत्री से आगे 18 किलोमीटर की पैदल यात्रा करके गोमुख, भागीरथी नदी के उदगम स्थल पर पहुँचा जा सकता है। भागीरथी नदी ही देवप्रयाग में अलकनन्दा नदी से मिल कर गंगा नदी कहलाती है।

यात्रा मार्ग: गंगोत्री सीधी यात्रा के लिए तीर्थ, नरेंद्रनगर, नया आश्रम-उत्तरकाशी-गंगोत्री मोटरमार्ग से यात्रा की जाती है।

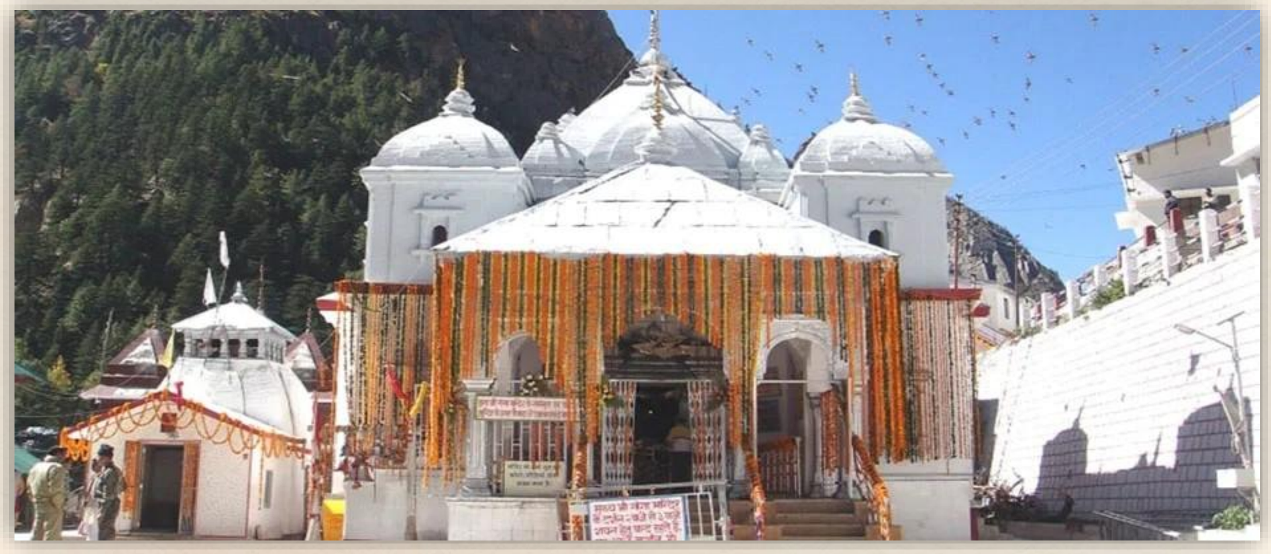

दर्शनीय स्थलः गंगोत्री मंदिर, डूबा हुआ शिवलिंग, गोमुख, नंदनवन तपोवन |

गंगोत्री मंदिर के बारे में ऐसा विश्वास है कि माता गंगा धरती पर सर्वप्रथम यहीं पर उतरी थीं। यहीं पर पांडवों ने महाभारत युद्ध में मारे गए अपने सम्बन्धियों की आत्मा की शांति के लिए यज्ञ किया था।

डूबे हुए शिवलिंग के बारे में कहा जाता है की इस प्राकर्तिक चट्टान पर भगवान शिव बैठे हुए थे तथा गंगा को उन्होंने अपनी उलझी केशराशि में उतार दिया था।

श्री केदारनाथ

गंगोत्री से लगभग 343 किलोमीटर की दूरी पर जनपद रुद्रप्रयाग में समुद्रतल से 3581 मीटर की ऊंचाई पर श्री केदारनाथ स्थित है। यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है। केदारनाथ में भगवान शिव की पीठ का विग्रह है।

यहाँ से भैरव मंदिर, आदि शंकराचार्य की समाधी और गाँधी सरोवर को देखा जा सकता है। यहाँ से 8 किलोमीटर दूर वासुकीताल है। दिसंबर से मार्च तक यह स्थान बर्फ से ढका रहता है। मान्यता है की यहाँ भगवान शिव निवास करते हैं। श्री केदारनाथ के कपाट वैशाख मास में खोले जाते हैं। इस धाम को सदैव भैयादूज (दीपावली) के दिन बंद करने की परम्परा रही है। शीतऋतु में छः माह भगवान केदारनाथ जी की नियमित पूजा ऊखीमठ स्थित प्राचीन ओम्कारेश्वर मंदिर में होती है।

यात्रा मार्गः केदारनाथ पहुँचने के लिए ऋषिकेश से गौरीकुण्ड तक मोटर मार्ग है। गौरीकुण्ड से केदारनाथ तक 14 किलोमीटर का पैदल मार्ग है। ऋषिकेश से केदारनाथ 224 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। मार्ग में देवप्रयाग, श्रीनगर, रुद्रप्रयाग, अगस्त्यमुनि, गुप्तकाशी और गौरीकुण्ड दर्शनीय स्थल हैं। वर्तमान में केदारनाथ के लिए हैलीकॉप्टर सेवा भी प्रारंभ की गयी है।

दर्शनीय स्थलः केदारनाथ मंदिर, शंकराचार्य की समाधी, महाशिला, भैरव मूर्ति, रेतसकुंड, भुकुंड केदारनाथ मंदिर की स्थापना आदिगुरु शंकराचार्य ने आठवीं सदी में की थी। मंदिर के द्वार पर नन्दी बैल की विशाल मूर्ति प्रहरी के रूप में स्थित है। पांच शैव तीर्थों में से एक श्री केदारनाथ के अलावा अन्य चार शैव तीर्थ नेपाल में पशुपतिनाथ, दूसरा उत्तराखण्ड (कुमाऊँ) में ही जागेश्वर, हिमांचल में बैजनाथ व कश्मीर में अमरनाथ है। केदारनाथ से लगभग छः किलोमीटर की दूरी पर एक महाशिला महापंथ है जिसे स्थानीय भाषा में भेरो झाप कहते हैं।

माना जाता है कि इस स्थान पर अनेक यात्री स्वर्गलोक की कामना में प्राण त्याग किया करते थे।

श्री बद्रीनाथ

गन्धमादन पर्वत पर बदरिकाश्रम की स्थापना के साथ ही भारत में वैदिक धर्म और सतयुग की शुरुवात हुई। स्कन्दपुराण के अनुसार सतयुग के आरंभ में स्वयं भगवान, लोक कल्याण हेतु श्री बद्रीनाथ में मूर्तिमान हुए। इसी पुराण में उल्लेखित है कि ऐसा तीर्थ न तो इससे पूर्व हुआ है और न ही भविष्य में होगा। 3133 मीटर की ऊंचाई पर स्थित बद्रीनाथ भगवान विष्णु का मंदिर, मानवीय धार्मिक चेतना और भारत की आध्यात्मिक शांति का स्रोत है। भगवान कृष्ण ने स्वधाम-गमन से पूर्व अपने सखा उद्धव को गोकुल, मथुरा, व द्वारिका आदि स्थानों में न भेजकर श्री बदरिकाश्रम जाने का आदेश दिया था। बद्रीनाथ तीर्थ में स्नान करने से मनुष्य को स्वर्गलोक की प्राप्ति होती है। बदरिकाश्रम में भगवान विष्णु नारायण रूप में विराजमान हैं। तप्तकुण्ड में स्नान करके ही श्रद्धालु भगवान बद्रीनाथ के दर्शन करने जाते हैं। मंदिर के कपाट अप्रैल-मई में खुलते हैं तथा नवम्बर माह में बंद हो जाते हैं। बद्रीनाथ स्थित भगवान विष्णु की पूजा केरल के नम्बूदरी ब्राह्मणों द्वारा की जाती है। बद्रीनाथ की पूजा रावल के अतिरिक्त कोई और नहीं कर सकता है।

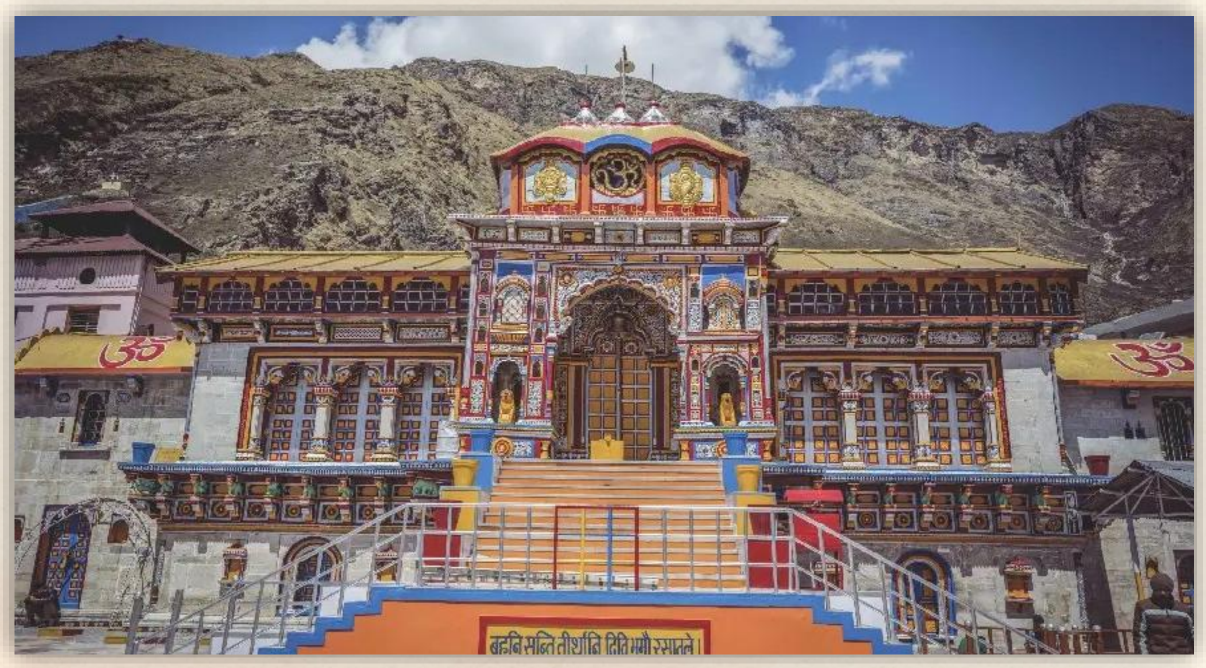

यात्रा मार्गः ऋषिकेश से देवप्रयाग, श्रीनगर, रुद्रप्रयाग, कर्णप्रयाग, जोशीमठ होते हुए 297 किलोमीटर की दूरी पर बद्रीनाथ स्थित है।

दर्शनीय स्थलः पंचधारा, पंचशिला, तप्तकुण्ड, नारदकुंड, मातामूर्ति का मंदिर ।

इन चारों धामों के अलावा पांचवां धाम जनपद अल्मोड़ा में जागेश्वर को माना जाता है जो कि 1850 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। जागेश्वर की गिनती शिव के द्वादश ज्योतिर्लिंगों में की जाती है। मान्यता के अनुसार यह भगवान शिव की तपस्थली है। वस्तुतः उत्तराखण्ड के पवित्र धामों की यात्रा यमुनोत्री से प्रारंभ होकर गंगोत्री, केदारनाथ, बद्रीनाथ, जागेश्वर होकर पूर्ण होनी चाहिए। इस पावन पथ-यात्रा से सम्पूर्ण देवभूमि की परिक्रमा पूरी हो जाती है।

~ ~ ~ ~ ~

अमन कुमार
लेखाकार

अधिरात्रि के प्रतिबिंब में

संध्या की समीपता में, अस्तित्व मंथर-शीतल,
विचारों के मर्मांतक प्रवाह में, मनःस्थिरता का प्रतिरूप।
अव्यक्त अनुभूतियों के कुहरे में, स्पर्श की अभिव्यक्ति लुप्त,
सतत् विमर्श की गूढ़ गलियों में, जिज्ञासा अटल और प्रगल्भ।

अवसादित कल्पनाओं के गर्भ में, अनिश्चितता का दहन,
विभ्रमित संवेदनाओं के क्षितिज पर, धैर्य की लौ प्रज्वलित।
निरंतर प्रमेयों की त्रिज्या में, सत्य की अभिलाषा,
धीरज के शिल्पकार सदृश, निर्मल मन की धारणाएं विलीन।

परमात्य के रहस्यमय आवरण में, अस्तित्व की अनुगूंज,
शून्यता की अमरता में, कर्मों का विचक्षण संधान।
संघर्ष और समता के अन्तराल में, अभिज्ञान की विभूति,
धैर्य, धीरज, धारणा, जीवन के त्रिमूर्ति सूत्रधार।

तारतम्य की इस विभव यात्रा में, आत्मा की उत्कण्ठा,
निरंतर प्रगति का स्वप्न, अविनाशी सत्य की आस।
जहाँ प्रतिकूलता की परतें हों गहनतम,
वहाँ धैर्य से विवेक के दर्पण तक पहुँचने का साधन।

धैर्य, धीरज, धारणा

धैर्य वह दीपक है, जो अंधेरों में जलता है,
तूफ़ानों से लड़कर भी, मुस्कुरा कर पलता है।
हर चोट सहकर भी, चुपचाप जो चलता है,
वही सच्चा योद्धा है, जो समय से न डरता है।

धीरज वह शक्ति है, जो मन को स्थिर रखे,
संकट की घड़ी में भी, ना कोई डर दिखे।
जल्दी में जो बिगड़े, वो राह नहीं सच्ची,
धीरज से ही बनती है, हर मंज़िल की कच्ची-पक्की।

धारणा वो सोच है, जो मन में बीज बोए,
सत्कर्मों की शाखाएं, विश्वास से जो रोए।
जैसी होगी धारणा, वैसा ही होगा पथ,
सत्य पर टिकी रहे तो, मिट जाए हर व्यर्थ।

धैर्य से सींचो सपने, धीरज से दो आकार,
धारणा से पावन हो, हर इच्छा, हर विचार।
इन तीनों के संग ही, जीवन बने महान,
अंधकार में भी दिखे, उज्जवल सुबह की पहचान।

धैर्य है वह मिट्टी, जहाँ बीज पनपते हैं,
धीरज है वह पानी, जो जड़ों को संजीवनी देते हैं।
धारणा है वह सूरज, जो ख्वाबों को रोशन करे,
तीनों का संगम होकर ही , विजय को सुनिश्चित करें ।

धैर्य बिना धीरज अधूरा, धारणा बिना धैर्य खोती है,
धीरज बिना धारणा, मन की ज्योति बुझा देती है।
जब साथ हो ये तीनों, तो बदलती है तकदीर अटल,
जीवन के हर जटिल तूफ़ान को बनाते हैं वे जीत सरल
।

आत्मविश्वास और संघर्ष

जब मन में उठे संदेह की लहरें,
और राहें लगें घनी, धुंधली कहरें।
तब याद रखना, भीतर जोश है अपार,
आत्मविश्वास है वह अग्नि, जो कर दे सब प्रयासों को सार।

संघर्षों की आग में तप कर ही बने सोना,
हर कठिनाई है बस एक सुनहरा मौका।
जहाँ गिरो वहीं से उठो, न हार मानो,
क्योंकि जीत उन्हीं की होती है जो हार न मानो।

होंसले की मीनारें हो आसमान से ऊँची,
डर को छोड़ो पीछे, बढ़ो कदम पक्की।
हर ठोकर सिखाती है, हर घाव देता है सीख,
संघर्ष के बिना क्या जीवन में हो कोई चीख।

आत्मविश्वास वह दीपक है जो रात को रोशन करे,
और संघर्ष वह राह है जो मंजिल तक ले चले।
जब दोनों साथ हों तो मुश्किलें हों जैसे खिलौना,
जीत होती है निश्चित, और हार बनती है धोखा।

अपने भीतर की शक्ति को पहचानो,
आत्मविश्वास से हर बाधा को पार करो।
संघर्ष की इस जंग में वीर बनो,
जीवन के हर मोड़ पर जीत का यलगार करो |

~~~
~~~

भारत में ऑडिटिंग की यात्रा:

(एडवर्ड ड्रुमंड से महालेखापरीक्षक तक)

शुभम शुक्ला,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

भारत में सरकारी और वित्तीय ऑडिटिंग का इतिहास ब्रिटिश शासन के दौर से शुरू होता है। इस प्रक्रिया की नींव डालने वाले प्रमुख व्यक्तित्वों में से एक एडवर्ड ड्रुमंड थे, जिन्हें आधुनिक भारत में ऑडिटिंग का जनक माना जाता है। 1860 के दशक में एडवर्ड ड्रुमंड ने भारत सरकार के खातों की पहली औपचारिक जांच शुरू की। उन्होंने ऑडिटिंग के नियम, प्रक्रिया और पद्घतियों को स्थापित किया, जिससे सरकारी खर्चों पर नियंत्रण और वित्तीय अनियमितताओं को रोकने में मदद मिली। इस प्रकार उनकी पहल ने भारत में सरकारी वित्तीय ऑडिटिंग की नींव रखी।

1866 में ब्रिटिश सरकार ने भारत में एक स्वतंत्र ऑडिटिंग संस्था का गठन किया और "ऑडिटर जनरल" की नियुक्ति की। इसका उद्देश्य सरकार के वित्तीय लेन-देन की पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करना था। यह संस्था बाद में महालेखापरीक्षक (नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक – सीएजी) के रूप में विकसित हुई। महालेखापरीक्षक भारत सरकार के खातों का लेखा-जोखा रखता है और उसकी रिपोर्ट संसद और राज्य विधानसभाओं को प्रस्तुत करता है, जिससे सरकार की कार्यप्रणाली की निगरानी होती है।

भारत की स्वतंत्रता के बाद संविधान सभा ने महालेखापरीक्षक की भूमिका को संविधान में विशेष महत्व दिया। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 148 से 151 तक महालेखापरीक्षक के पद, शक्तियाँ और कर्तव्य निर्धारित किए गए। सीएजी को भारत के वित्तीय नियंत्रण का सर्वोच्च अधिकारी घोषित किया गया, जो पूरी तरह स्वतंत्र होता है। इसका कार्य सरकार की आय और व्यय का ऑडिट करना, सरकारी संस्थाओं की वित्तीय रिपोर्ट का मूल्यांकन करना और सुनिश्चित करना होता है कि सभी सरकारी विभाग नियमों का पालन करें। महालेखापरीक्षक की रिपोर्टें लोक लेखा समिति (लोक लेखा समिति) और अन्य संसद की समितियों को प्रस्तुत की जाती हैं, जो सरकार के वित्तीय व्यवहार की जांच करती हैं।

महालेखापरीक्षक के पास व्यापक अधिकार होते हैं, जिनमें सरकारी खातों की जांच, सरकारी संपत्तियों की समीक्षा और वित्तीय नियमों के पालन की पुष्टि शामिल है। इसके अतिरिक्त, महालेखापरीक्षक प्रदर्शन ऑडिट भी करता है, जिसमें सरकार की योजनाओं और कार्यक्रमों की प्रभावशीलता और दक्षता का मूल्यांकन होता है। सीएजी की रिपोर्टें भ्रष्टाचार, वित्तीय अनियमितताओं और प्रशासनिक त्रुटियों को उजागर करती हैं। यह भारतीय लोकतंत्र में वित्तीय जवाबदेही का एक मजबूत स्तंभ है। महालेखापरीक्षक की स्वतंत्रता को बनाए रखने के लिए उसे संसद के सत्र के दौरान सदस्यों द्वारा हटाया नहीं जा सकता, बल्कि इसके लिए संसद का विशेष निर्णय आवश्यक होता है।

वि. नरहरी राव भारत के महालेखापरीक्षक के रूप में एक प्रभावशाली पद पर रहे। उन्होंने अपने कार्यकाल के दौरान भारतीय ऑडिटिंग व्यवस्था को आधुनिक बनाने और उसकी विश्वसनीयता बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनकी पहल से ऑडिटिंग प्रक्रियाओं में पारदर्शिता और जवाबदेही बढ़ी। नरहरी राव ने वित्तीय अनुशासन को मजबूत करने और सरकारी खर्चों की सही जांच सुनिश्चित करने के लिए कई सुधारात्मक कदम उठाए।

उनका कार्यकाल विशेष रूप से यादगार इसलिए भी है क्योंकि उन्होंने महालेखापरीक्षक के कार्यालय को और अधिक स्वायत्त और प्रभावी बनाया। उन्होंने तकनीकी सुधारों को बढ़ावा दिया और प्रदर्शन ऑडिट को भी प्रमुखता दी, जिससे सरकारी योजनाओं की जांच केवल लेखा-जोखा तक सीमित न रहकर उनकी कार्यक्षमता और प्रभावशीलता का भी आकलन हो सके।

समय के साथ तकनीकी विकास और वित्तीय व्यवस्थाओं के बदलते स्वरूप के कारण महालेखा परीक्षक की भूमिका और भी व्यापक हो गई है। अब सीएजी न केवल वित्तीय लेखा-जोखा की जांच करता है, बल्कि सरकारी योजनाओं की कार्यक्षमता, नीति के प्रभाव और संसाधनों के उपयोग का भी मूल्यांकन करता है। डिजिटल ऑडिटिंग, डेटा एनालिटिक्स और अन्य आधुनिक तकनीकों का उपयोग करके सीएजी ऑडिट की गुणवत्ता और प्रभावशीलता को बढ़ा रहा है। इससे सरकारी वित्तीय प्रणाली में पारदर्शिता और दक्षता में वृद्धि हुई है।

भारत में महालेखापरीक्षक का कार्यालय सरकार की जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए एक महत्वपूर्ण संस्थान है। यह जनता के वित्तीय हितों की रक्षा करता है और यह सुनिश्चित करता है कि सार्वजनिक धन का उपयोग उचित और पारदर्शी तरीके से हो। सीएजी की रिपोर्टें अक्सर सरकार के वित्तीय निर्णयों और कार्यक्रमों पर प्रभाव डालती हैं, जिससे बेहतर प्रशासन और नीति निर्धारण में मदद मिलती है। यह संस्था न केवल वित्तीय अनियमितताओं को उजागर करती है, बल्कि प्रशासनिक सुधारों के लिए भी सुझाव प्रदान करती है।

संक्षेप में, भारत में ऑडिटिंग की यात्रा एडवर्ड ड्रुमंड की पहल से शुरू होकर आज महालेखापरीक्षक के एक स्वतंत्र और प्रभावी कार्यालय तक पहुंच चुकी है। यह सफर वित्तीय पारदर्शिता, जवाबदेही और सरकारी प्रशासन की गुणवत्ता को बढ़ाने का एक प्रतीक है। महालेखापरीक्षक का कार्यालय भारतीय लोकतंत्र का एक अहम स्तंभ है, जो सरकार को अपने वित्तीय और प्रशासनिक कर्तव्यों के प्रति जवाबदेह बनाता है। आज जब भारत तेजी से विकास कर रहा है, तब भी महालेखापरीक्षक की भूमिका और जिम्मेदारी महत्वपूर्ण बनी हुई है ताकि सार्वजनिक धन का संरक्षण और सही उपयोग सुनिश्चित किया जा सके। इस प्रकार, भारत में ऑडिटिंग प्रणाली ने देश के आर्थिक और प्रशासनिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है और भविष्य में भी देती रहेगी।

~~~
~~~

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2025

YOGA FOR ONE EARTH
ONE HEALTH

Yoga Day
2025
GOVERNMENT OF SIKKIM

GOVERNMENT OF SIKKIM

11th International Yoga Day
21st JUNE 2025

कृष्ण कुमार मीणा
लेखापरीक्षक

धूप का दोस्त

धूप के संग बैठा बालक,

मन का सारा खोले तालक।

किरणों से करता है बातें,

सूरज बनता उसके साथी।

हर सुबह का पहला काम,

किताबों में खोजे नाम।

धूप की छाया, सूरज की रौशनी,

भर दे दिल में नयी ताज़गी।

~ ~ ~

सूरज का राज़दार

छोटी-सी कुर्सी, किताबें ढेर,

सूरज से बातें करता देर।

मन की हर उलझन खोल सुनाता,

सूरज भी मुस्कुराकर सुन पाता।

सुनहरी धूप की गोदी में,

वो सपनों के जहान में।

सूरज का राज़दार बनकर,

सीखता जीवन का पाठ मन भर।

~ ~ ~

किरणों का आशीर्वाद

सुबह-सुबह जब सूरज हँसता,

बालक का मन भी खिल उठता।

किरणों की छाँव में बैठा वो,

सपनों के फूलों को सींचा वो।

हर पन्ना बनता उजियारा,

हर शब्द में मिलता सहारा।

सूरज का आशीर्वाद है प्यारा,

मन को करता जगमग सारा।

~ ~ ~

मोहब्बत

मोहब्बत में उसकी बड़े बवाल रहे,
होंठ खामोश मगर जेहन में तमाम सवाल रहे...

उम्रभर ख्याल उसके तसव्वुर में गुजरते रहे,
फिर भी जिंदगी भर हम बेख्याल रहे...

मत पूछो मुझसे इन खुश्कियों का सबब ,
उसकी उदासी से सूखे हर फूल ,हर डाल रहे...

उसके होने से थी ये रौनक,ये बरकते,
वो जो छूटा हम कंगाल थे कंगाल रहे...

इन निगाहों से गुजरे है लाख हसीं मंजर,
मगर मेरे ख्वाबों में लिपटे महज उसके बाल रहे...

किसी मोड़ पर मिले तो बताना उसे,
उसके बाद जिंदगी के क्या रंग क्या हाल रहे...

~ ~ ~

नदी के किनारे तेरा नाम

नदी के किनारे बैठा हूँ मैं,
हवा के झोंके कहते हैं तेरा नाम।
पत्तों की सरसराहट में सुनता हूँ
तेरी हँसी का मीठा सा पैगाम।

पुस्तक के पन्नों पर चलती है उंगलियाँ,
पर शब्दों में बस तू ही तू मिलती है।
हर कहानी में तू ही किरदार है,
हर कविता तेरी आँखों से सिलती है।

डूबते सूरज का रंग है तेरा चेहरा,
और चाँदनी तेरी चुप्पी का आईना।
मैं प्रकृति की हर सांस में तुझसे मिलता हूँ,
और तुझको सोचकर दिल फिर से जी उठता है।

~ ~ ~

धूप संग सपनों की राह

धूप के संग सपने सँवारे,
मन के मोती सूरज को उतारे।
किताबों में खोया, धूप में सजा,
जीवन का हर रंग उसने रचा।

सूरज बना उसका गुरु महान,
सिखाए हर दिन नया विधान।
धूप संग चलता उसका मन,
सपनों का साथी वो उजला गगन।

~ ~ ~

किताबों में बसा चेहरा

किताब खोलता हूँ, तू आती है सामने,
हर अक्षर में तेरी परछाईं उतरती है।
जैसे कोई पुराना गीत बज उठा हो,
तेरी यादों की धुन फिर से संवरती है।

नदी के पानी में झिलमिलाते हैं सपने,
तेरी आँखों की झील का रंग लिए हुए।
आसमान पर तारे सजते हैं हर शाम,
तेरे माथे की बिंदिया जैसे सजे हुए।

ओ प्रकृति! तू भी मेरी प्रेमिका सी है,
हर फूल, हर शाख कहती है वही बात।
कितना गहरा है यह प्रेम मेरा,
कि तुझसे बिछड़कर भी तू हर जगह साथ।

~ ~ ~

तेरी याद का जंगल

पेड़ों की छाँव में छिपा हूँ मैं,
तेरे बिना भी तुझसे भरा हूँ मैं।
हवा के संग बहती है तेरी खुशबू,
जैसे तू यहीं, बस पास खड़ी हो तू।

झरने का शोर है तेरी हँसी का गीत,
धूप में छुपा है तेरा नर्म सा प्रीत।
धरती की हर लकीर में तेरा नाम लिखा,
आकाश ने तेरी तस्वीर का रंग पिया।

किताबों के संसार में डूबा मैं,
फिर भी तेरे ख़्वाबों का हूँ राही।
तेरी यादों का यह जंगल गहरा है,
जहाँ हर मोड़ पर तू ही तू है साथी।

~ ~ ~

खोया हुआ खिलौना

मंतोष कुमार सिंह
लेखाकार

गाँव की छोटी-सी झोपड़ी में गुड़िया नाम की एक प्यारी बच्ची रहती थी। गुड़िया के पास बहुत कम चीज़ें थीं, पर उसका सबसे पसंदीदा खिलौना था - एक पुराना लकड़ी का हाथी। वह हाथी गुड़िया के दादा जी ने बहुत साल पहले खुद बनाया था। हाथी की सूंड टूटी हुई थी, और रंग भी झुरझुरे हो गए थे, लेकिन गुड़िया के लिए वह किसी भी नए चमकदार खिलौने से बढ़कर था।

हर शाम वह हाथी को लेकर खेतों के किनारे जाती और उसे अपने दोस्तों को दिखाती। लेकिन धीरे-धीरे गाँव के बच्चे नए-नए खिलौनों के साथ आने लगे, और गुड़िया का हाथी उन बच्चों का ध्यान आकर्षित नहीं करता था। फिर भी गुड़िया कभी भी उस हाथी को छोड़ती नहीं थी।

एक दिन जब गुड़िया खेत से घर लौट रही थी, तो उसने देखा कि उसका हाथी उसके बैग में नहीं है। उसकी आँखें भर आईं। वह हर जगह ढूँढने लगी, पेड़ों के नीचे, खेतों में, गाँव की गलियों में, लेकिन कहीं हाथी का कोई पता नहीं चला। गुड़िया के आँसू देख गाँव के लोग भी मदद करने लगे। गाँव के बुजुर्गों ने कहा, "बेटी, पुराने खिलौने की जगह नया ले लो।" पर गुड़िया का दिल नहीं माना।

उसने सोचा, "ये मेरा सिर्फ खिलौना नहीं है, ये दादा की यादें हैं, मेरा प्यार है।" गुड़िया की लगन देखकर गाँव के बच्चे भी उसके साथ हाथी खोजने में जुट गए। वे नदी के किनारे, खेतों के आसपास हर जगह खोजते रहे। कई दिन बाद, एक लड़का नदी के किनारे खेलते हुए पानी में आधा डूबा हुआ हाथी देखकर चिल्लाया, "गुड़िया, ये तुम्हारा हाथी है!" गुड़िया दौड़ती हुई वहाँ पहुंची, उसने हाथी को सावधानी से उठाया, वह गीला और थोड़ा टूटा हुआ था। उसने वह हाथी घर ले जाकर साफ किया, सूंड को धीरे-धीरे चिपकाया और रंगों को फिर से चमकाया।

अब वह हाथी और भी ज्यादा कीमती लगने लगा था क्योंकि उसने वह खोया और पाया था, और उसके प्यार से वह फिर जीवित हो गया था।

~ ~ ~ ~

भारत में भाषाई विवाद एवं उसके समाधान

शम्भू कुमार,
लेखापरीक्षक

भारत विविधताओं का देश है, जहाँ विभिन्न भाषाएँ, संस्कृतियाँ और परंपराएँ साथ-साथ अस्तित्व में हैं। भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में वर्तमान में 22 भाषाओं को मान्यता प्राप्त है, लेकिन देश में कुल 19,500 से अधिक भाषाएं और बोलियाँ बोली जाती हैं। यह भाषाई विविधता जहाँ भारत की ताकत है, वहीं कई बार यह विवाद और असहमति का कारण भी बन जाती है।

भाषाई विवादों के कारण

भारत में भाषाई विवादों की शुरुआत स्वतंत्रता के बाद हुई, जब राजनैतिक और प्रशासनिक व्यवस्था को व्यवस्थित करने के लिए भाषा को आधार बनाया गया। सबसे बड़ा विवाद 1950 और 1960 के दशक में हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाए जाने को लेकर हुआ। दक्षिण भारत, विशेषकर तमिलनाडु में इसका भारी विरोध हुआ। लोगों को यह आशंका थी कि हिंदी थोपे जाने से उनकी मातृभाषा और सांस्कृतिक पहचान खतरे में पड़ जाएगी।

इसके अतिरिक्त, राज्यों के पुनर्गठन में भाषा के आधार पर सीमांकन (राज्य पुनर्गठन अधिनियम,1956) किया गया, जिसने भाषाई पहचान को और मज़बूत किया, लेकिन साथ ही क्षेत्रीय भाषाई अस्मिता को लेकर संघर्ष भी बढ़ा।

आज भी, सरकारी नौकरियों, शिक्षा और प्रशासन में किसी एक भाषा को प्राथमिकता देने से असंतुलन पैदा होता है। उत्तर भारतीय राज्यों में हिंदी को अधिक महत्व मिलने से दक्षिण और पूर्वोत्तर के राज्य खुद को उपेक्षित महसूस करते हैं। सोशल मीडिया और राजनीतिक रैलियों में यह विवाद और उग्र रूप ले सकता है।

समाधान

1. बहुभाषी नीति का पालनः भारत में सभी भाषाओं को समान सम्मान और अवसर देना आवश्यक है। संविधान के अनुच्छेद 344 और 351 में हिंदी को बढ़ावा देने की बात तो की गई है, लेकिन अन्य भाषाओं के संरक्षण और संवर्धन का भी उल्लेख है। अतः एक संतुलित दृष्टिकोण जरूरी है।

2. शिक्षा में बहुभाषिकताः नई शिक्षा नीति (NEP 2020) में मातृभाषा में प्रारंभिक शिक्षा देने की बात कही गई है। इससे भाषाओं का संरक्षण भी होगा और बच्चों की बेहतर बौद्धिक वृद्धि भी संभव होगी।

3. प्रशासनिक लचीलापनः केंद्र और राज्य सरकारों को चाहिए कि वे स्थानीय भाषाओं का प्रशासनिक कामकाज में उपयोग करें। इससे आम नागरिकों की भागीदारी बढ़ेगी और अलगाव की भावना कम होगी।

4. सांस्कृतिक आदान-प्रदानः विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों को एक-दूसरे के करीब लाने के लिए साहित्य, सिनेमा, संगीत और अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों को प्रोत्साहन देना चाहिए।

5. टेक्नोलॉजी का उपयोगः अनुवाद, वॉयस रिकग्निशन और AI आधारित भाषाई सेवाओं से भाषाई दूरी को कम किया जा सकता है। इससे देश के कोने-कोने तक समान सूचना और सेवा पहुँचेगी।

निष्कर्ष

भाषा एक सांस्कृतिक धरोहर है, जिसे जबरन थोपना या नजरअंदाज करना किसी भी राष्ट्र के लिए घातक हो सकता है। भारत को एकता में अनेकता की अपनी ताकत को समझते हुए सभी भाषाओं को समान अवसर और सम्मान देना होगा। तभी सच्चे अर्थों में लोकतंत्र और समावेशिता संभव है।

~ ~ ~ ~ ~

स्वतंत्रता दिवस 2025

HAPPY INDEPENDENCE DA
AG OFFICE,GTK 20

Office of the Accountant General(Audit) and
Office of the Sr. Deputy Accountant General(A&E)
Sikkim, Gangtok

HAPPY INDEPENDENCE DAY
2025
AG OFFICE,G

कोशिश कर और सपनों को आगे बढ़ा

संजय छेत्री,
आउट सोर्स

कोशिश कर हल निकलेगा,
आज नहीं तो कल निकलेगा |

अर्जुन के तीर से सीधा,
मरुस्थल से जल निकलेगा |

मेहनत कर, पौधों को पानी दे,
बंज़र जमीन से भी फल निकलेगा |

ताकत जुटा, हिम्मत को आग दे,
फौलाद का भी बल निकलेगा |

ज़िंदा रख, दिल से उम्मीद को,
गरल के समंदर से भी गंगा जल निकलेगा|

कोशिशें जारी रख, कुछ कर गुजरने की,
जो है आज थमा-थमा सा, चल भी निकलेगा |

जो पाना है, बस उसी एक पागल की तरह चाहत कर,
करता रह कर्म, मगर साथ में खुदा की इबादत भी कर |

फिर देख किस्मत क्या-क्या रंग दिखलाएगी,
तुझे तेरी मंजिल मिल जाएगी, अपनी मंजिल मिल जाएगी |

~~~~~
~~~~~

महान भारतीय सरकारी नौकरी

(नौकरशाही के सुख-दुख को समर्पित एक स्तोत्र)

सुमना दे,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

ओह, भारतीय नौकरशाही के पवित्र गलियारे! एक ऐसी जगह जहाँ सुरक्षित नौकरी के सपने सर के बल टकरा जाते हैं उस हकीकत से, जिसमें आत्मा को कुचल देने वाली नीरसता और ज़हरीले साहब होते हैं, जो ब्रिटिश औपनिवेशिक हाकिमों को ऐसे दयालु चाचा जैसा दिखाते हैं, जो टॉफियाँ बाँट रहे हों। एक केंद्रीय सरकारी कर्मचारी को इस त्रासद-हास्य नाटक की प्रथम पंक्ति में बैठने का ईर्ष्या योग्य विशेषाधिकार प्राप्त होता है, जहाँ नियम पुस्तिकाओं से भी अधिक पुरानी चीज़ है उन्हें लागू करने वालों की मानसिकता। आइए भारत के सार्वजनिक क्षेत्र की खूबसूरत कार्य संस्कृति में टहलें, अपने पूर्व ब्रिटिश मालिकों को याद करते हुए, जो सच कहें तो शायद हमारे आधुनिक शासकों की "कार्यक्षमता" देखकर शरमा जाएँ।

राज रिडक्स: साहबों से लेकर राष्ट्रपति को खुश करने वाले अधिकारियों तक

कभी समय था जब ब्रिटिश हमें सख़्त चेहरे और ऐसे काग़ज़ी कामों से हुकूमत करते थे, जो एक हाथी को भी घुटन में डाल दे। उनके पास थे उनके चाय ब्रेक, उनकी मेमसाहिबें, और भारतीयों को उनके ही देश में दूसरे दर्जे का नागरिक महसूस कराने का शौक़। तेज़ी से 2025 पर आ जाइए, और देखिए कि राज की आत्मा अब भी हमारे सरकारी दफ़्तरों के क्यूबिकल्स में ज़िंदा है। अंतर सिर्फ़ इतना है? साहबों की जगह अब सार्वजनिक सेवा अधिकारी आ गए हैं, जिन्होंने औपनिवेशिक तिरस्कार की कला पिथ हेलमेट के बिना ही साध ली है।

उस ज़माने में ब्रिटिश दार्जिलिंग चाय की चुस्की लेते हुए नील उत्पादन पर अनगिनत रिपोर्टें माँगते थे। आज हमारे साहब लोग एक्सेल शीट्स और पावरपॉइंट प्रेज़ेंटेशन माँगते हैं कि दफ़्तर के प्रिंटर की स्याही क्यों ख़त्म हो गई और यह सब वे एक बिना चीनी वाले पेय की चुस्कियों के बीच करते हैं, जिसका स्वाद बस पछतावा है। ब्रिटिश हमें साँस लेने के लिए उनकी अनुमति का इंतज़ार कराते थे; हमारे आज के मालिक हमें उस फ़ाइल पर "ठीक है" लिखवाने के लिए इंतज़ार कराते हैं, जो एक सजे-धजे 'कलाकार' के अनुसार भारत में आई नई आज़ादी से पहले से ही धूल फाँक रही है। शोषण वही है; बस लहजे बदल गए हैं।

9 से 5 (या 9 से कभी नहीं) की चक्की

सरकारी क्षेत्र में "काम के घंटों" की अवधारणा उतनी ही काल्पनिक है जितना कि सड़क किनारे ढाबे पर लस्सी पीता हुआ यूनिकॉर्न। आधिकारिक रूप से, यह 9 से 5 है। अनौपचारिक रूप से, यह सुबह 9 बजे से तब तक है जब तक आपका बॉस यह तय न करे कि आपको ज़िंदगी जीने की अनुमति है। ब्रिटिश के पास संडाउनर हुआ करते थे; हमारे बॉस के पास "ज़रूरी काम" होते हैं, जो शाम 4:59 पर थमा दिए जाते हैं, ताकि आप अपने बच्चे का स्कूल नाटक या पड़ोसियों के साथ शाम की चाय मिस कर दें। "वर्क-लाइफ़ बैलेंस? वो क्या होता है?" वे हँसते हैं और रात 9 बजे आपको एक व्हाट्सऐप मैसेज फ़ॉरवर्ड कर देते हैं, जिसमें कभी तुच्छ जानकारी तो कभी पूरी रिपोर्ट तक माँगी जाती है।

विषाक्तता सिर्फ़ ओवरटाइम तक ही नहीं रुकती। यह तो अपमान की रोज़मर्रा की रस्म में पकी-बनी है। सोचिए: आपको बॉस के केबिन में बुलाया गया है, ठीक वैसे ही जैसे किसी मूल निवासी को वायसराय के दरबार में बुलाया जाता था। आप वहाँ खड़े हैं, हाथ में कोई फ़ाइल या नोटबुक पकड़े, और वे आपको उस मेमो की टाइपिंग गलती पर डाँट रहे हैं, जो फ़ैक्स मशीन के ज़माने से ही अप्रासंगिक हो चुका है।

ब्रिटिश शायद आपको इससे भी कम पर कोड़े लगाते; हमारे बॉस केवल मौखिक कोड़े मारते हैं, जो आपकी आत्म-सम्मान की चिथड़े उड़ा देते हैं। "तुम शर्मा जी जैसे क्यों नहीं हो सकते?" वे ताने कसते हैं, उस ऑफिस के चमचू की तरफ़ इशारा करते हुए, जिसने कठपुतली बनने की कला साध ली है।

पाखंड की पदानुक्रम

ब्रिटिश को अपनी वर्ग प्रणाली बेहद प्रिय थी, और अरे वाह, हमारे सरकारी दफ़्तर इस मशाल को कितने गर्व से उठाए हुए हैं। यह पदानुक्रम उपाधियों की भूलभुलैया है, जहाँ हर स्तर एक छोटा सा रियासत होता है, जिसमें अहंकार को सहलाया जाता है और अधीनस्थों को कुचला जाता है। जितना ऊपर जाओ, उतना ही कम काम करो, लेकिन उतना ही ज़्यादा रोओ कि "हम तो बहुत ओवरवर्क्ड हैं" और "बेकार लोग सहन करने पड़ते हैं।" यह आधुनिक नौकरशाही का करिश्मा है कि शीर्ष अधिकारी आधा दिन "मीटिंग्स" (मतलब: लंबा लंच) में गुज़ार सकते हैं, जबकि नीचे वाले काग़ज़ों के ढेर में डूबे रहते हैं।

ब्रिटिश के पास अपने वफ़ादार सिपाही हुआ करते थे; हमारे पास अपने वफ़ादार क्लर्क हैं, जो सत्ता के करीब रहकर ही फलते-फूलते हैं। ये वही लोग हैं जो आपको 10 मिनट की चाय ब्रेक पर चुगली कर देंगे, लेकिन बॉस की दो घंटे की "साइट विज़िट" (मॉल की सैर) को छिपा देंगे। यह पाखंड उतना ही मोटा है जितना कि ऑफिस फ़ाइलों पर जमी धूल, और पक्षपात उतना ही साफ़ है जितना कि औपनिवेशिक गवर्नर का अपना पसंदीदा रियासत चुनना।

प्रदर्शन मूल्यांकन का ढोंग

अगर कोई एक चीज़ है जो ब्रिटिश और हमारे बॉसों में समान है, तो वह है मनमाने मूल्यांकन का प्रेम। उस वक़्त, आपको इस आधार पर आँका जाता था कि आपने यूनियन जैक को कितनी श्रद्धा से सलामी दी। अब, यह आँका जाता है कि आपने बॉस के अहंकार को कितनी श्रद्धा से सलामी दी। सरकारी दफ़्तरों में प्रदर्शन मूल्यांकन प्रदर्शन पर कम और इस पर ज़्यादा आधारित होता है कि आपने कितनी बार "सर" या "मैडम" सही मात्रा में चापलूसी के साथ कहा। ब्रिटिश वफ़ादारी का इनाम उपाधि या ज़मीन का टुकड़ा देकर करते थे; हमारे बॉस इसका इनाम "वेरी गुड" रेटिंग से देते हैं, जो बस यह सुनिश्चित करता है कि आप अगले दशक तक उसी पद पर अटके रहेंगे।

इधर नवाचार का स्वागत उतना ही है जितना कि ऑफिस में मानसून की बाढ़ का। अगर आप प्रक्रियाओं को सरल बनाने का नया तरीका सुझाएँगे, तो आपको ऐसी नज़र से देखा जाएगा मानो आप एलन मस्क हों। ब्रिटिश नहीं चाहते थे कि मूल निवासी उनकी प्रणाली से छेड़छाड़ करें; हमारे बॉस नहीं चाहते कि कोई उनके पवित्र परंपरा यानी काम को हमेशा अक्षम तरीक़े से करने में खलल डाले।

चाँदी की परत (या उसकी कमी)

भले ही यह अतिशयोक्ति लगे, लेकिन सरकारी दफ़्तर में एक हफ़्ता बिताइए, और आप देखेंगे कि यह सब उतना ही असली है जितने भारतीय राजमार्ग पर गड्ढे। ब्रिटिश 1947 में चले गए, लेकिन उनका "श्वेत व्यक्ति का बोझ" अब भी ज़िंदा है सत्ता का नशा, अनंत लालफीताशाही, और आत्मा को सोख लेने वाला सूक्ष्म प्रबंधन। कम से कम ब्रिटिश हमें रेलगाड़ियाँ दे गए; हमारे बॉस हमें अवसाद और जीवन भर के लिए काग़ज़ी काम से घृणा दे जाते हैं।

तो सलाम है भारतीय सरकारी नौकरी को ऐसी जगह जहाँ महत्वाकांक्षा मर जाती है, जहाँ फ़ाइलें बैलगाड़ी से भी धीमी गति से चलती हैं (यहाँ तक कि ई-ऑफ़िस में भी), और जहाँ कार्य संस्कृति से भी बुरी चीज़ है केवल ऑफिस की चाय/कॉफ़ी। अगर ब्रिटिश हमें आज देख पाते, तो शायद टोपी उतारकर कहते, "शाबाश दोस्तों। आपने काम को सज़ा बनाने में हमें भी पीछे छोड़ दिया।" और हम भी सिर हिलाते, बहस करने की ताक़त न होने के कारण क्योंकि हमें अभी एक और "ज़रूरी" फ़ाइल आधी रात तक पूरी करनी है, बल्कि, अभी तुरंत!

दिवाकर कुमार मांझी,
डाटा प्रविष्टि लिपिक

तुम

रात की कालिमा में, बदल की लालिमा में|
उगते हुए सूरज की रोशनी हो तुम।।

दहकते रेगिस्तान में, घने जंगल की वीरान में।
रेत पर ओस की नमी हो तुम।।

शीला की पांव में, जंगल की छांव में।
सरोवर में कमल की कली हो तुम।।

अंधेरे वीरान में, घर के दालान में।
मेज पर जलते दिए की तली हो तुम।।

~~~~~
~~~~~

कार्य जीवन के नकारात्मक प्रभाव

देबायन दे
लेखाकार

आधुनिक युग में करियर की ऊँचाइयों को छूने और एक बेहतर भविष्य की तलाश में युवा वर्ग अपने घरों से दूर महानगरों या दूसरे शहरों में जाकर काम करता है। यह परिवर्तन भले ही आर्थिक रूप से फायदेमंद हो, लेकिन इसका मानसिक, शारीरिक और सामाजिक जीवन पर गहरा नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। कार्य जीवन का असंतुलन, अत्यधिक काम का दबाव और घर से दूर अकेले रहने की स्थिति मिलकर व्यक्ति के संपूर्ण जीवन को प्रभावित करती है।

सबसे प्रमुख प्रभाव मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ता है। अकेले रहना, अपनों से दूर रहना और कार्यस्थल का दबाव, ये सभी मिलकर व्यक्ति को मानसिक रूप से कमजोर बना देते हैं। जब वह कठिन समय में किसी से खुलकर बात नहीं कर पाता, तब वह अवसाद, चिंता और अकेलेपन का शिकार हो जाता है। नई जगह में सामाजिक दायरा सीमित होता है, जिससे व्यक्ति धीरे-धीरे आत्मनिर्भर होते हुए भी मानसिक रूप से अकेला महसूस करने लगता है। शारीरिक रूप से भी यह जीवनशैली घातक साबित हो सकती है। घर से दूर रहने पर व्यक्ति का खानपान असंतुलित हो जाता है, समय पर भोजन न करना, बाहर का तला-भुना खाना और व्यायाम की कमी कई बीमारियों को जन्म देती है जैसे मोटापा, उच्च रक्तचाप, मधुमेह आदि। इसके साथ-साथ लम्बे समय तक कंप्यूटर या डेस्क पर बैठकर काम करना पीठ दर्द, गर्दन की अकड़न और आँखों की कमजोरी जैसी समस्याओं को जन्म देता है।

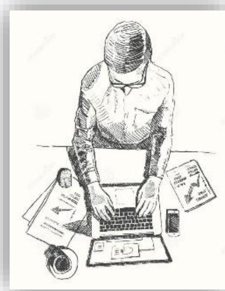

पारिवारिक जीवन भी इससे प्रभावित होता है। घर से दूर रहने पर व्यक्ति अपने माता-पिता, भाई-बहन और जीवनसाथी से भावनात्मक रूप से दूर हो जाता है। कई बार समयाभाव के कारण वे बात भी नहीं कर पाते जिससे रिश्तों में दूरी और भावनात्मक खालीपन बढ़ता है। खासकर जब कोई समस्या आती है, तो अपनों की गैर-मौजूदगी व्यक्ति को अंदर से तोड़ देती है। सामाजिक जीवन भी सीमित हो जाता है। महानगरों की व्यस्त जिंदगी में नए दोस्त बनाना आसान नहीं होता और जो बनते हैं, वे अक्सर पेशेवर सीमाओं में बंधे होते हैं। इससे सामूहिकता, अपनापन और भावनात्मक समर्थन की भावना कम हो जाती है। अकेलेपन की यह भावना धीरे-धीरे व्यक्ति को सामाजिक रूप से अलग-थलग कर देती है।

इसलिए यह आवश्यक है कि कार्य और निजी जीवन में संतुलन बनाए रखा जाए। अकेले रहकर भी खुद को भावनात्मक रूप से मज़बूत बनाना, नियमित रूप से अपनों से संपर्क बनाए रखना, स्वस्थ जीवनशैली अपनाना और मानसिक स्वास्थ्य का ध्यान रखना आज की आवश्यकता है। कार्य में सफलता तभी सार्थक है जब जीवन में संतुलन और खुशी भी बनी रहे।

~ ~ ~ ~ ~

सिक्किम की नारी: उजाले की ओर

सोनम चेंजोम भोटिया,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

सूरज की पहली किरण सी,
चमकती है वो पहाड़ी नारी,
लेपचा, भूटिया, नेपाली रंगों में,
सजी है उसकी जीवन की सवारी।

पहाड़ों की चोटी से ऊँची सोच,
हाथों में हुनर, आँखों में जोश,
कभी बुनती ऊन से सपनों की डोरी,
कभी पढ़ती किताबें, बनती है ज़िंदगी की खोज।

गाँव की गलियों में चलती है वो,
संगीत में गूंजती है उसकी बोली,
मोमो की खुशबू, चाय की प्याली,
पर उसके इरादे हैं सबसे निराले।

वो कहती है, "मैं सिर्फ़ घर की दीवार नहीं,
मैं हूँ बदलाव, मैं हूँ उजाले की राह",
अब स्कूल की घंटी में उसका नाम है,
हर बेटी कहती है, "मैं भी आगे जाऊँगी अब!"

संदेश: सिक्किम की नारी सिर्फ़ संस्कृति की पहचान नहीं, वह भविष्य की दिशा है, आत्मबल की मिसाल है।

मेरा प्यारा देवभूमि उत्तराखण्ड

कविता संजय बोरा
पत्नी-संजय सिंह बोरा/
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

उत्तराखण्ड, जिसे "देवभूमि" यानी देवताओं की भूमि कहा जाता है, भारत के उत्तरी भाग में स्थित एक अत्यंत सुंदर और पवित्र राज्य है उत्तराखण्ड को देवभूमि नाम इसलिए मिला क्योंकि यहाँ अनेक देवालय, तीर्थ स्थल और ऋषियों की तपोभूमियाँ हैं | यह हिमालय की गोद में बसा हुआ है और इसी प्राकृतिक सुंदरता, सांस्कृतिक विविधता, धार्मिक महत्व इसे विशेष बनाते हैं | यहाँ की नदियाँ, पर्वत, जंगल और शुद्ध वायु इसे स्वर्ग के समान बनाते हैं |

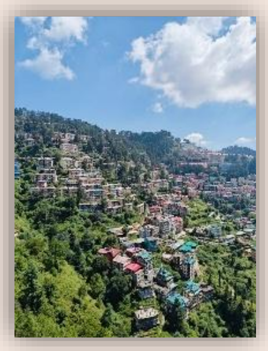

यहाँ स्थित केदारनाथ, बद्रीनाथ, यमुनोत्री और गंगोत्री जैसे तीर्थ स्थल हर साल लाखों श्रद्धालुओं को आकर्षित करते हैं | यहाँ से निकलने वाली पवित्र नदियाँ-गंगा और यमुना पूरे देश को जीवन देती हैं | उत्तराखण्ड की वादियाँ, बर्फ से ढके पहाड़, कल-कल बहती नदियाँ और हरे-भरे जंगल हर किसी को आकर्षित करते हैं | यहाँ के प्रमुख पर्वत हैं - नन्दा देवी, त्रिशूल और केदार डोम यहाँ का मौसम सुहावना होता है और हर ऋतु में इसकी खूबसूरती अलग ही रंग बिखेरती है |

उत्तराखण्ड की संस्कृति बहुत ही समृद्ध और रंग-बिरंगी है | यहाँ के लोग सीधे, मेहनती , ईमानदार, धार्मिक और प्रकृति प्रेमी होते हैं | यहाँ की प्रमुख लोककलाएँ - झोड़ा, छपेली, और चौसिंगे हैं | यहाँ की पहाड़ी बोली, पहनावा और भोजन जैसे: झंगोरा, भट्ट की चुरकानी और आलू के गुटके लोगों को यहाँ की परमपराओं से जोड़ते हैं |

यहाँ अनेक मेले लगते हैं जैसे; नन्दा देवी मेला, जौलजीबी मेला, मकर संक्रांति की खिचड़ी मेला आदि, ये मेले न केवल धार्मिक होते हैं, बल्कि सांस्कृतिक मेलजोल का माध्यम भी बनते हैं | उत्तराखण्ड में चंपावत, नैनीताल, मसूरी, औली और कौसानी जैसे पर्यटन स्थल हैं जो पर्यटकों को अपनी सुंदरता और शांति से मंत्रमुग्ध कर देते हैं |

मेरा उत्तराखण्ड केवल एक राज्य नहीं, यह मेरी आत्मा का हिस्सा है जहाँ प्रकृति, संस्कृति और आस्था एक साथ बहती है | मुझे गर्व है कि मैं इस देवभूमि की निवासी हूँ |

जय उत्तराखण्ड, जय देवभूमि !

~ ~ ~ ~ ~

लाफ़िंग क्लब

मूल बांग्ला कविता: मौसुमी भौमिक/
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
अनुवाद: सायनिका भौमिक (बेटी)

पता है,
आजकल कोई हँसना नहीं चाहता।
कल जो लड़की बात-बात में खिलखिला कर हंसती थी -
आज ज़िंदगी की भागदौड़ में, वह हँसना ही भूल गई है।
हाँ, हर बात पर उसकी आँसू निकल आते हैं।

पता है,
कुछ बातें तो सिर्फ बातें होती हैं।
जैसे कि लड़कों की आंखों में आंसू नहीं आना चाहिए।
लेकिन देखो, लड़कों को मुस्कुराते तक नहीं देखा जाता।
वे भाग रहे हैं, तो भागते ही जा रहे हैं,
पिस रहे हैं तो पिसते ही जा रहे हैं।
दिन के अंत में, अपनी शर्ट के कॉलर में
आंसू भी चुपके से पोंछ लेते हैं ।

पता है,
अब सभी ने अभिनय करना अच्छी तरह सीख लिया है ।
हर घर अभी एक एक रंगमंच ।
आजकल रिहर्सल की ज़रूरत नहीं पड़ती।
हाँ, हँसने के लिए अभी रिहर्सल की ज़रूरत होती है।
इसलिए आजकल हर जगह आस-पड़ोस में लाफिंग क्लब बन गए हैं।

~~~~~
~~~~~

जीवन की भागदौड़ और हमारे सपने

संजीव सिंह
सहायक लेखा अधिकारी

आज के इस युग में जीवन की रफ्तार इतनी तेज़ हो गई है कि इंसान अक्सर खुद को इस भागदौड़ में खो देता है। हर सुबह उठकर हम एक नई दौड़ शुरू करते हैं, समय की कड़वी सुई के पीछे भागना, जिम्मेदारियों को पूरा करना, समाज की अपेक्षाओं को पूरा करना। लेकिन क्या इस तेज़ दौड़ में हम अपने सपनों को भी साथ लेकर चलते हैं, या वे कहीं रास्ते में छूट जाते हैं?

जीवन की भागदौड़ का अर्थ केवल व्यस्तता या कामकाज नहीं है, बल्कि यह एक ऐसी स्थिति है जहाँ हम केवल गति पर ध्यान देते हैं, लक्ष्य की गहराई पर नहीं। हम कई बार अपनी असली इच्छाओं और सपनों से इतने दूर हो जाते हैं कि उन्हें पहचानना भी कठिन हो जाता है। इसी बीच, सपने जो हमारे दिल की आवाज़ होते हैं, हमारी आत्मा की प्यास दबकर रह जाते हैं। सपने केवल कल्पनाएँ नहीं होते, वे हमारे भविष्य की दिशा बताते हैं। वे हमें प्रेरणा देते हैं, हमें नए आयामों को छूने की हिम्मत देते हैं। लेकिन जब जीवन की भागदौड़ हमारी सोच और भावना दोनों को घेर लेती है, तो सपनों का महत्व कम हो जाता है। हम भूल जाते हैं कि सपनों के बिना जीवन एक निरर्थक दौड़ मात्र है, जिसमें केवल थकान और तनाव होते हैं।

इस भागदौड़ से बाहर निकलना और अपने सपनों को पुनः जीवन में जगह देना जरूरी है। हमें अपनी प्राथमिकताओं को समझना होगा कि क्या हम केवल दौड़ रहे हैं या सही दिशा में बढ़ रहे हैं। सफल वही होता है जो न केवल जीवन की गति को पकड़ सके, बल्कि अपने सपनों के साथ भी तालमेल बनाए रखे। सपनों को पूरा करने के लिए धैर्य, साहस और आत्मविश्वास चाहिए। जीवन की भागदौड़ में रुक कर खुद से सवाल करना ज़रूरी है, क्या मैं वही कर रहा हूँ जो मुझे खुशी देता है? क्या मेरा काम मेरे सपनों से जुड़ा है या सिर्फ एक रोज़मर्रा की मजबूरी है?

अंत में, जीवन की सच्ची सफलता वही है जहाँ भागदौड़ और सपनों का संतुलन बना हो। जहाँ हम अपने सपनों को न केवल देखते हैं बल्कि उन्हें पूरा करने की दिशा में निरंतर प्रयास करते हैं। जब हम इस संतुलन को पा लेते हैं, तभी जीवन में असली आनंद और संतोष का अनुभव होता है।

इसलिए, जीवन की तेज़ भागदौड़ में भी अपने सपनों को न भूलें, क्योंकि वही हमारे अस्तित्व की सच्ची पहचान हैं।

~ ~ ~ ~ ~

मोहित कुमार,
लेखाकार

एक रिश्ता

एक रिश्ता है,
थोड़ा अजीब सा,
मगर अजीज़ सा,

किसी से बने रिश्ते का नाम होता है,
मगर कुछ रिश्तों का नाम नहीं होता है,
कभी वो दोस्त बन कर कुछ भी कह जाते हैं,
तो कभी भाई बहन जैसा समझाते हैं,
कभी एक दूसरे की दुआओं में शामिल होते हैं,
तो कभी बस छोटी-छोटी बात पर लड़ जाते हैं|

बस कुछ रिश्ते होते हैं,
जो यूँ ही चलते जाते हैं
जिसे न पाने की उम्मीद,
हाँ बस खोने से डर जाते हैं,
कुछ रिश्ते इस दुनियादारी से परे होते हैं|

कौन क्या सोचेगा, क्या नहीं
इस बात से बेखबर होते हैं,
कभी माँ बाप की तरह डाँट लगाते हैं,
कभी बस बाते सुनते जाते हैं,

कुछ रिश्ते होते हैं,
जिनमें हम बिना कुछ सोचे बोल जाते हैं,
वो रिश्ते जो बेमतलब साथ निभाते हैं।।

~ ~ ~ ~ ~

उसे शराब खा रही थी

देखा मैंने उसे, उसके चेहरे में धँसी हुई उसकी
जवानी,
उसकी आँखों में श्मशान-सी उदासी।
कभी वह एक उम्दा खिलाड़ी था,
आज उसके पैर काँप रहे थे।
उसे एक ग़म अंदर से मार रहा था।

मैंने देखा था उसे जादूगर की तरह बॉल से
अठखेलियाँ करते हुए,
पर अब उसकी उँगलियों का जादू बुझ चुका था,
और उसके सपने।
उसके चेहरे पर वर्षों की चाँदी निकल आई थी।
उसके बालों की हीरो वाली स्टाइल तब तूफ़ान के
बाद की फ़सल जैसी थी।

उसकी आँखों में यादों के जुगनू झिलमिला रहे थे।
मुझे देखते ही उसकी नज़रें शर्म से सकपका रही
थीं।
कुछ कहना था उसे मुझसे,
पर सिले होठों में उसकी जुबान डगमगा रही थी।
मैंने सुना है किसी से-कि उसे शराब खा रही थी।

~ ~ ~ ~ ~

उत्तर बंगाल : पूर्वोत्तर भारत का प्रवेश द्वार

बिनोद कुमार छेत्री
लेखाकार

मैं उत्तर बंगाल का निवासी हूँ और मुझे गर्व है कि मेरा यह क्षेत्र न केवल प्राकृतिक सुन्दरता और सांस्कृतिक विविधता के लिए प्रसिद्ध है, बल्कि सामरिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्तवपूर्ण माना जाता है | उत्तर बंगाल सही अर्थों में "पूर्वोत्तर भारत का प्रवेश द्वार" कहा जाता है क्योंकि यहीं से होकर सातों बहन राज्यों (उत्तर पूर्व राज्य) से संपर्क स्थापित होता है | यहाँ की नदियाँ, पहाड़, वन्य जीवन, ऐतिहासिक धरोहर और सामरिक महत्त्व मिलकर इसे एक अनोखा और समृद्ध भूभाग बनाते हैं |

उत्तर बंगाल की पहचान सबसे पहले इसकी ऐतिहासिक धरोहरों से होती है | कोरोनेशन ब्रिज, जो तीस्ता नदी पर स्थित है और लगभग सौ वर्ष पुराना है, इसका प्रमुख उदहारण है | अंग्रेजों के समय बना यह पुल आज भी सिक्किम , दार्जिलिंग और भूटान जाने का मुख्य मार्ग है | इसकी स्थापत्य कला और मजबूती देखने योग्य है |

सांस्कृतिक दृष्टि से यह क्षेत्र विविधता का अद्भुत उदहारण है | यहाँ बंगाली, नेपाली , भूटिया, राजवंशी और लेपचा समुदाय के लोग रहते हैं | हर समुदाय की अपनी भाषा, संस्कृति और पर्व-त्यौहार है | चाहे दुर्गा पूजा हो, दशहरा हो या छठ पर्व , यहाँ का सामाजिक जीवन उत्सवधर्मी और रंग-बिरंगा है |

उत्तर बंगाल को "हाथियों की भूमि" भी कहा जाता है | यहाँ के जंगलों में हाथियों के साथ-साथ एक सींग वाले गेंडे, बाघ, बारहसिंगा और अनेकों दुर्लभ पक्षी पाए जाते हैं | गोरुमारा राष्ट्रीय उद्यान और जलदापाड़ा राष्ट्रीय उद्यान इस क्षेत्र के प्रमुख वन्यजीव केंद्र हैं | गोरुमारा पार्क विशेष रूप से गेंडों और हाथियों के लिए प्रसिद्ध है | यहाँ की नदियाँ जैसे तिस्ता, तोरसा, महानंदा और जलढका न केवल खेतों की सिचाईं करती हैं बल्कि जलविद्युत उत्पादन और पर्यटन को भी बढ़ावा देती हैं | हरे-भरे चाय बागान और चाय की महक उत्तर बंगाल की पहचान है |

उत्तर बंगाल केवल प्राकृतिक और सांस्कृतिक धरोहर से ही संपन्न नहीं है, बल्कि यह भारत की सामरिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्तवपूर्ण है| यहाँ स्थित सिलीगुड़ी कॉरिडोर, जिसे आम बोलचाल में "चिकन नेक" कहा जाता है , भारत को उसके पूर्वोत्तर राज्यों से जोड़ने वाला एकमात्र मार्ग है | यह कॉरिडोर मात्र 22 किलोमीटर चौड़ा है और चीन , नेपाल तथा भूटान की सीमाओं के बहुत नज़दीक है | यदि कभी इस क्षेत्र में संकट उत्पन्न हो जाए, तो पूर्वोत्तर भारत का संपर्क बाकी भारत से कट सकता है | इसी कारण यह क्षेत्र राजनितिक और सैन्य दृष्टि से बहुत संवेदनशील मन जाता है | इसी संवेदनशील को देखते हुए भारत सरकार ने यहाँ कई सैन्य ठिकाने और एयरबेस स्थापित किए हैं |

हासीमारा एयरबेस इसका एक प्रमुख उदहारण है | हाल ही के वर्षों में यहाँ राफेल लड़ाकू विमानों की तैनाती की गई है ताकि चीन की किसी भी आक्रामकता का तुरंत जवाब दिया जा सके | यह केवल उत्तर बंगाल ही नहीं, बल्कि पूरे देश की सुरक्षा के लिए एक मजबूत कवच है | इस एयरबेस की मौजूदगी उत्तर बंगाल की सामरिक महत्ता को और बढ़ा देती है | राजनितिक दृष्टि से भी उत्तर बंगाल का विशेष महत्तव है | यह क्षेत्र पश्चिम बंगाल राज्य का हिस्सा होने के साथ-साथ असम, सिक्किम, भूटान और नेपाल की सीमाओं से जुड़ा हुआ है | यहाँ की सीमावर्ती स्थिति के कारण केंद्र सरकार की नीतियों और योजनाएँ सीधे इस क्षेत्र को प्रभावी करती है | सीमा सुरक्षा, व्यापार मार्ग, अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध और स्थानीय राजनीती, इन सब में उत्तर बंगाल का योगदान प्रमुख है |

मुझे गर्व है कि मैं उत्तर बंगाल से हूँ | यह भूमि न केवल अपनी खूबसूरती से लोगों को आकर्षित करती है, बल्कि अपने सामरिक महत्तव से पूरे भारत की सुरक्षा में अहम भूमिका निभाती है | जहाँ एक ओर चाय बागान की हरियाली, बर्फ से ढकी पर्वत शृंखलाएँ और जंगलों की गूँज है, वहीं दूसरी ओर हासीमारा एयरबेस और सिलीगुड़ी कॉरिडोर की रणनीतिक स्थिति है |

अंत में कहा जा सकता है कि उत्तर बंगाल केवन "पूर्वोत्तर भारत का प्रवेश द्वार" ही नहीं, बल्कि यह भारत की सांस्कृतिक धरोहर , प्राकृतिक सम्पदा और सामरिक शक्ति का संगम है | यहाँ के ऐतिहासिक पुल, हरियाली से भरे जंगल, दुर्लभ वन्यजीव, विविधतापूर्ण समाज और सामरिक ठिकाने इसे भारत का अनमोल रत्न बनाते हैं |

~ ~ ~ ~ ~

चम्पावत - कुमाऊँ का रत्न

कविता संजय बोरा
पत्नी- संजय सिंह बोरा/
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

चम्पावत की वादियाँ न्यारी,
पर्वत, जंगल, नदियाँ सारी,
कुमाऊँ की गोद में ये बसा,
प्रकृति ने खुद इसे है रचा |

चम्पावत-प्रकृति की माया न्यारी,
इतिहास की कहानियाँ सारी |
राजा वीर चम्पावती की,
गूंजती गाथा वीरता की |

बाणासुर किला, मंदिर प्यारे,
बोलते हैं बीते फ़साने सारे |
काली जी का यावन धाम,
भक्ति में लीन रहता है ग्राम |

टनकपुर से लेकर लोहाघाट,
हर कोना बोले अपनी बात,
वन जल जीवन की ये खान,
चम्पावत का नहीं कोई थान |

पलायन रुके, हो विकास,
युवा करें संपूनों का प्रयास,
संस्कृति, प्रकृति, शौर्य, सम्मान
चम्पावत है उत्तराखंड की जान ॥

~~~~~
~~~~~

आर्तनाद

मौसुमी भौमिक,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

मास्टरमशाई अनंत बाबू ने अपने बेटे को बचपन से सीने से लगाकर बड़ा किया है। शादी के पाँच साल बाद तक संतान नहीं होने पर कई डॉक्टरों और वैद्यों के पास भागदौड़ करने के बाद उनका बेटा मानिक हुआ। फिर जब मानिक आया, तो उन्होंने उसे कितनी ममता और जतन से पाला। बेटे के पेट में दर्द होने पर रात भर उसे गोद में लेकर जागते रहते। जब बेटा धीरे-धीरे चलना सीखा, तो उन्हें लगा कि शायद पिता बनने के लिए ही उनका जन्म हुआ था।

बेटा जब स्कूल जाने लगा, तब उसे स्कूल ले जाना, लाना, क्या टिफिन ले जाएगा, होमवर्क कराना, हर काम अनंत बाबू खुद ही देखते थे। बेटे के जन्म के साथ ही जैसे अनंत बाबू का भी "पिता" रूप में नया जन्म हुआ। जैसे-जैसे बेटा बड़ा होता गया, वैसे-वैसे पिता भी "पिता" के रूप में परिपक्क होते गए।

हालांकि, प्रकृति के नियम के अनुसार, बेटे और पिता के दिलों के बीच की दूरी भी धीरे-धीरे बढ़ती गई।

अब बेटे की शादी हो चुकी है। मानिक का अब खुद का एक संसार बन चुका है। उधर, पिछले कुछ दिनों से अनिमा को तेज़ बुखार है। दवाइयाँ खत्म हो चुकी हैं। अनंत बाबू भी अब ठीक से चल फिर नहीं सकते। उन्होंने कई बार बेटे से दवा लाने को कहा, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। आखिरी बार कहने पर मानिक अपनी पत्नी को सजाकर शालिका के जन्मदिन के उपलक्ष्य में ससुराल चला गया। जाते-जाते उसने जोर से चिल्लाकर कहा "अब समय नहीं है, बाबा! आप तो बैठे ही रहते हैं, आप ही जाकर ले आइए।"

अनंत बाबू अपने आप में बड़बड़ाने लगे "मिलता नहीं, कुछ भी नहीं मिलता। ज़िंदगी का कोई हिसाब नहीं मिलता।" कितने गणित के सवाल हल किए हैं, कितने विद्यार्थियों के अनगिनत न मिलने वाले सवालों को हल किया है, फिर भी अपने ही जीवन का हिसाब वे अब नहीं मिला पा रहे हैं।

~ ~ ~ ~ ~

त्योहार: एक संदेश

चंचल
कनिष्ठ अनुवादक

जब त्योहारों की दस्तक होती है,
घर-आंगन में रौनक छा जाती है।
पर सिर्फ झिलमिलाते दीयों की बात नहीं,
दिलों में प्रेम की नई मिसाल जग जाती है।

यह केवल खुशियों का मेला नहीं,
ना सिर्फ मिठाइयों की मिठास होती है।
यह तो है एकता, सद्भाव और प्यार,
जो मन के हर कोने को छू जाती है।

जहाँ बंद हों नफरत के सारे द्वार,
जहाँ टूट जाएं सभी भेद-भाव की दीवार।
जहाँ मिले सबको बराबर का स्थान,
और बन जाए हर दिल में प्यार का स्थान।

त्योहार हमें सिखाते हैं यही,
भाषा, जाति, धर्म से परे बढ़ना।
भेदभाव की दीवारों को तोड़कर,
साथ मिलकर इंसानियत को गढ़ना।

यह वह पल है पुरानी कड़वाहट भूलने का,
नई उम्मीदों के दीप जलाने का।
खुशियों को बांटने, साथ चलने का,
दिल से दिल मिलाने का।

तो चलिए, इस पर्व पर सब प्रण लें,
सिर्फ दिखावे का जश्न न मनाएँ।
असली त्योहार तो वह है,
जो दिलों को एक साथ लाए।

जहाँ ना हो कोई दूरी, ना कोई फासला,
जहाँ प्यार से हर दिल सजता।
त्योहार हो मानवता का संदेश,
जहाँ हो शांति और सौहार्द की प्रेष।

तो आइए मिलकर ये वादा करें,
हर दिन प्रेम का दीप जलाएँ।
ना केवल त्योहारों पर,
हर पल एक-दूसरे का सम्मान बढ़ाएँ।

~ ~ ~ ~ ~

हमारा प्यारा घर

कुंतल माजी,
लेखाकार

घर यह कोई दो अक्षरों का शब्द नहीं है, यह अपने आप में एक पंक्ति है | घर जो अपनेपन का एहसास है जो न सिर्फ इंसान बल्कि हर जीव जन्तुओं को अपनों के साथ बाँध के रखता है | घर हमारे लिए वो जगह या स्थान है जहाँ हमने अपने जीवन के सभी सुखद और दुखद क्षण देखे हैं | घर की सभी चार दीवारें जानती हैं कि हमने किस ख़ुशी को महसूस किया है और दूसरों के साथ साझा किया है या उस दुःख को जानते हैं जिससे हम गुजरे हैं लेकिन कभी दूसरों के साथ साझा नहीं किया |

लेकिन यह जरूरी नहीं है कि हर किसी के लिए घर का मतलब एक ही हो | हर इंसान के लिए घर की परिभाषा अलग-अलग होती है | कुछ लोगों के लिए घर का मतलब वह स्थान या वह घर होता है जहाँ उन्होंने जन्म लिया है | जबकि कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जिनके लिए घर का मतलब वह स्थान होता है जहाँ उनके माता-पिता या करीबी लोग मौजूद हैं | उदहारण के लिए, कई लोग जीवन भर उसी स्थान पर रहने के लिए भाग्यशाली नहीं होते जहाँ उन्होंने जन्म लिया है, उन्हें विभिन्न अपरिहार्य परिस्थितियों के कारण विभिन्न शहरों या स्थानों में नौकरी या कैरियर के अवसरों के कारण अपना घर छोड़ना पड़ता है | ऐसे लोग जिस स्थान पर रहते हैं, वे उस स्थान को अपना घर बना लेते हैं | यदि मैं आप का उदहारण लूं, जो इस लेख को पढ़ रहे हैं, यदि आप गृह राज्य से दूर किसी राज्य में तैनात हैं, तो आप घर की वास्तविक भावनाएँ महसूस कर सकते हैं और जब आप छुट्टी लेकर अपने घर जाते हैं, तो परिचित चेहरों से मिलते हैं और घर जैसा अनुभव महसूस करते हैं और रोमांच और ख़ुशी महसूस कर सकते हैं | भले ही हमारे कार्यस्थल पर एक सभ्य और अच घर हो, फिर भी हम सभी जानते हैं कि हम इस स्थान की तुलना अपने घर से नहीं कर सकते |

मनुष्य के रूप में हमारे पास कई मनोवैज्ञानिक प्रतिबन्ध भी हैं, क्योंकि हम सभी का उस निश्चित स्थान के साथ मनोवैज्ञानिक सम्बन्ध होता है जिसे हम वास्तविक में अपना घर कहना चाहते हैं या जहाँ हमें अधिकतम

मानसिक शांति मिलती है और उस बाधा को पार करना और एक नए स्थान को अपने घर के रूप में स्वीकार करना बहुत कठिन है|

यह बात सिर्फ हम इंसानों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह सभी जीवित प्राणियों जैसे कि पक्षी, जानवर आदि के लिए भी सच है | हमने कई बार देखा है कि जब तूफ़ान आता है और पक्षी पेड़ों पर अपना घोंसला खो देते हैं, तो कुछ दिनों तक वे उसी पेड़ के ऊपर उड़ते रहते हैं, इसी तरह जब कोई पालतू जानवर जैसे कि बिल्ली या कुत्ते का मालिक उन्हें सड़क पर फेंक देता है, तो वे उसी घर के आस-पास भटकने की कोशिश करते हैं | ऐसा इसलिए होता है क्योंकि उनके मन में भी अपने घोंसले या मालिक के घर के लिए वही घर जैसा एहसास होता है और उस एहसास को छोड़ना काफी मुश्किल होता है |

यह बहुत हास्यास्पद और दुखद है कि जब हम किशोरावस्था में बड़े होते हैं तो हम सोचते हैं कि कब हम अपना घर छोड़ सकेंगे और वास्तव में स्वतंत्र हो सकेंगे लेकिन जब हम वयस्क हो जाते हैं और अलग-अलग स्थानों पर काम के लिए जाते हैं, तब हमें पता चलता है कि हमारी धारणा कितनी गलत थी |

कोई भी अपने प्यारे घर को छोड़ना नहीं चाहता क्योंकि उसमें बहुत सारी यादें होती हैं, लेकिन यह भाग्य और नियति ही है जो जीवित प्राणियों को आगे बढ़ाती है | कुछ लोग वास्तव में भाग्यशाली होते हैं कि वे जीवन भर अपने घर में रह पाते हैं जहाँ उन्होंने अपना बचपन और वयस्कता बिताई है | अंत में, ईंटों से बनी संरचना और घर के बीच बहुत बड़ा अंतर होता है | घर तभी बनता है जब हमारे प्रियजन हमारे साथ होते हैं, जब हम अपने दोस्तों के साथ आनंद लेते हैं और सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि हम अच्छी और बुरी दोनों तरह की ढेर साड़ी यादें बनाते हैं और इस पूरी प्रक्रिया के दौरान हमारे पास शांतिपूर्वक और मजबूती से कड़ी दीवारें होती हैं जो हमें बाहरी दुनिया के सभी उपद्रवों से बचाती हैं यही हमारा प्यारा घर है |

~ ~ ~ ~ ~

अग्निशमन मॉक ड्रिल 2025

68

स्वामी विवेकानंद द्वारा निर्देशित आत्म-सुधार

कविता संजय बोरा
पत्नी- संजय सिंह बोरा/
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

स्वामी विवेकानंद भारतीय ही नहीं अपितु पूरे विश्व में युवाओं के प्रेरणा स्रोत रहे हैं। वह एक ऐसे महापुरुष थे जिन्होंने भारत ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व को भारतीय दर्शन एवं आत्मबल की महत्ता बताई। वह मानते थे कि **"व्यक्ति यदि स्वयं को बदल ले तो समाज व देश अपने आप बदल जाएगा।"**

स्वामी जी के अनुसार आत्म-सुधार का अर्थ है- अपने विचारों, भावनाओं और कार्यों को सकारात्मक दिशा में विकसित करना। विवेकानंद में स्वामी जी आत्मबल को सर्वोपरि मानते हैं। उनका मानना था **"जिस वक्त तुम अपने आप पर विश्वास करने लगते हो, उसी वक्त ईश्वर तुम्हारे भीतर जाग्रत हो जाता है।"**

स्वामी जी के इस कथन से मुझे वास्तविकता का ज्ञान प्राप्त हुआ कि वास्तव में हम जैसा सोचते हैं वैसा ही बन जाते हैं।

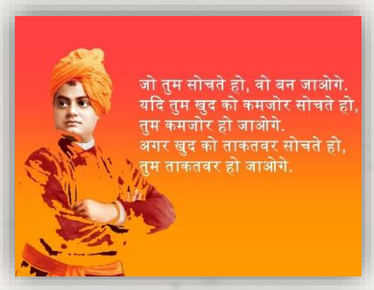

स्वामी जी की दृष्टि में आत्म-सुधार:
. आत्म निरीक्षण
. सत्संग और स्वाध्याय
. आत्म विश्वास
. अनुशासन
आत्म सुधार के मुख्य तत्व

स्वामी जी कहते थे कि "अपने ऊपर विश्वास रखो, क्योंकि ईश्वर हमारे भीतर ही है।" यदि हम किसी कार्य के प्रति पूर्ण समर्पित हो जाएँ, यदि हम अपने मन-मस्तिष्क को ठान लें कि हमें यह कार्य करना ही है, तो वास्तविक रूप से हमें उसमें सफलता अवश्य मिलेगी।

स्वामी जी कहते थे कि "जीवन में अनुशासन लाकर ही महान कार्य पूरे किये जा सकते हैं।" बिना अनुशासन एवं परिश्रम के सरल कार्य भी हमें कठिन लगने लगते हैं, जो वास्तव में बहुत ही आसान और छोटा होता है। अतः किसी भी लक्ष्य को पाने के लिए अनुशासन और परिश्रम अत्यंत आवश्यक है।

स्वामी जी कहते थे कि "एक अच्छे चरित्र का निर्माण ही सच्चा आत्म-सुधार है।" यदि हमारा चरित्र अच्छा होगा तो हमारा मन साफ रहेगा, जिसमें सदैव सकारात्मक विचार आयेंगे जो हमारे जीवन को सरल एवं सहज बनायेंगे। स्वामी जी के अनुसार "आत्म-सुधार केवल व्यक्तिगत नहीं बल्कि सामाजिक जिम्मेदारी भी है।" आत्म-सुधार में केवल स्वयं के प्रति सुधरने की ही नहीं अपितु अपने देश, समाज के लिए योगदान की भावना भी होनी चाहिए।

स्वामी विवेकानंद युवाओं को प्रेरित करते हुए कहते थे "उठो, जागो, और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य की प्राप्ति ना हो जाए।" उनकी यह प्रेरणा युवाओं को आलस्य, भ्रम और आत्मसंदेह से बाहर निकालने में सहायक है। आत्म-सुधार से ही नेतृत्व, निर्णय शक्ति और नैतिक बल का विकास होता है। आत्म-सुधार का मार्ग आसान नहीं होता। इस राह में अनेक बाधाएँ आती हैं जैसे: आलस्य, अहंकार, नकारात्मकता, समय का दुरुपयोग एवं बाहरी आकर्षण। परंतु यदि व्यक्ति निरंतर जागरूक रहे, अपने लक्ष्य को न भूले और अपने अंतरात्मा की आवाज सुने तो वह इन बाधाओं को आसानी से पार कर सकता है। "जब तक हम अपनी शक्ति की कमजोरियों को नहीं पहचानते, तब तक हम उनका समाधान नहीं कर सकते हैं।"

आत्म-सुधार केवल एक व्यक्तिगत प्रयास से नहीं अपितु सम्पूर्ण समाज को श्रेष्ठ बनाने की प्रक्रिया का एक हिस्सा है। जब व्यक्ति सुधरता है तो वह अपने परिवार, मित्रों, समाज और देश को भी प्रभावित करता है। स्वामी जी कहते हैं "एक विचार लो, उस विचार को अपना जीवन बना लो, उसी के बारे में सोचो, उसी का सपना देखो, उसी को जियो यही सफलता का मार्ग है।" इसलिए आत्म-सुधार एक बार का लक्ष्य नहीं, बल्कि जीवनभर चलने वाली साधना है। यह हमें श्रेष्ठ मानव बनने की ओर अग्रसित करती है न केवल बाहर से बल्कि भीतर से भी।

~~~~~
~~~~~

वयस्कता

अनंत सरकार
कल्याण सहायक

आजकल हम अक्सर एक घिसी-पिटी बात सुनते हैं कि
"तुम अब बड़े हो गए हो, तुम परिपक्व हो गए हो।"
"तुम फ़ोन पर अपने माता-पिता से इतना क्यों जुड़े रहते हो?"

कभी-कभी हम सोचते हैं कि "इस बात का उत्तर देंगे सोचते हैं", तभी हमारे वयस्क मस्तिष्क में एक चेतावनी घंटी बजती है कि हम अब बड़े हो चुके हैं। सच तो यह है कि दोस्तों और सहकर्मियों में सदैव एक अंतर बना रहता है। दोस्तों के साथ की गई मस्ती, बहस या पागलपन, दफ्तर के वातावरण में सहकर्मियों के साथ संभव नहीं होता।

कब हमने विद्यालय, कॉलेज और विश्वविद्यालय की उस सुंदर, आत्मीय गरिमा को छोड़कर, आत्मनिर्भर बनने के उद्देश्य से इस बड़ी दुनिया में कदम रख दिया यह हमें स्वयं भी ज्ञात नहीं। शिक्षकों के आदर्श कवच से बाहर निकलकर अचानक खुले और स्वतंत्र संसार में अस्तित्व बचाने की निरंतर लड़ाई ही जीवन बन जाती है। यह वैसा ही है जैसे कोई छोटा पौधा हर पल आँधी, बारिश, धूप और प्रतिकूल परिस्थितियों से जूझकर स्वयं को खड़ा रखने का प्रयास करता है।

जो अंतर्मुखी विद्यार्थी कभी अध्यापक की लाल आँखों से डाँट खाने पर रो उठते थे, वही आज दफ्तर के लालफीताशाही वातावरण में कठिन से कठिन परिस्थितियाँ भी सहजता से झेल रहे हैं। परंतु सच यह है कि दफ्तर में आँखों का पानी बहाने की गुंजाइश नहीं होती। इसलिए सुख-दुःख साझा करने का सबसे बड़ा सहारा अब भी वही माता-पिता, अभिभावक और बचपन के सच्चे मित्र ही होते हैं। आज हम "स्वतंत्र" या तथाकथित "वयस्क" बनने के प्रयास में माता-पिता के स्थान और महत्व को छोटा कर रहे हैं। काम की वजह से हम दूर राज्यों या शहरों में आ बसे हैं। जिनके सान्निध्य में हमने 24-25 वर्ष बिताए और वयस्क बने, उन्हीं माता-पिता का फोन कॉल मीटिंग के बीच आ जाए तो हम चिढ़कर कह बैठते हैं "नहीं जानते क्या, मीटिंग में हैं, व्यस्त हैं, परेशान मत कीजिए।"

क्या यही है वयस्क होने का प्रमाण? शायद नहीं।

माता-पिता का अपनी संतान के प्रति चिंता करना स्वाभाविक है। उनका निस्वार्थ प्रेम किसी भी तराजू से मापा नहीं जा सकता। कामकाज के बीच या दिन के अंत में उनका हालचाल लेना ही असली वयस्क मस्तिष्क का चेतावनी संदेश होना चाहिए। क्योंकि नई परिस्थिति में, नए वातावरण में हम जैसे युवा वयस्कों को ढलने में कठिनाइयाँ होती हैं, वैसे ही जिनके सहयोग से हम बड़े हुए, वे भी हमारे लिए चिंतित रहते हैं।

आजकल हम दोस्त और सहकर्मियों के साथ पार्टियों और उत्सवों में इतने व्यस्त हो जाते हैं कि अभिभावकों के मिस्ड कॉल्स भी दिन बीतने के बाद केवल "मिस्ड कॉल" बनकर रह जाते हैं। सोचिए, जिस दिन माता-पिता अपने बच्चे की आवाज न सुन पाते हैं, उस दिन उनकी नींद अधूरी रह जाती है। सूट-बूट पहनकर ऑफिस की फाइलों में डूब जाना और घर लौटकर रिपोर्ट एडिटिंग में लग जाना ही केवल वयस्क होने का अर्थ नहीं है। एक जिम्मेदार कर्मचारी बनने के साथ-साथ एक जिम्मेदार संतान बनना भी हमारा मूल लक्ष्य होना चाहिए।

आजकल "बी प्रैक्टिकल" का मंत्र जपते-जपते हम भावनाहीन यंत्रमानव बनते जा रहे हैं। भूल गए हैं कि हम इंसान हैं। इंसान बने रहने के लिए विवेक और भावनाओं को थामे रखना आवश्यक है। काम की व्यस्तता के बीच भी जब हम सोशल मीडिया पर खाने-पीने, पहनावे और घूमने-फिरने की पोस्ट डालने का समय निकाल सकते हैं, तो उसी समय का एक छोटा-सा अंश माता-पिता का हालचाल लेने में भी व्यतीत किया जा सकता है। वास्तविक वयस्क वही है, जो साल में केवल गिनती के दिनों जैसे मदर्स डे, फादर्स डे या जन्मदिन पर नहीं, बल्कि हर दिन अपने माता-पिता को विशेष महसूस कराए क्योंकि हमें बड़ा बनाने में उनके प्रयासों में कोई कमी नहीं रही है।

~ ~ ~ ~ ~

सिक्किम का स्वाद

दीपा उराँव
कनिष्ठ अनुवादक

मैंने गंगटोक में एक साल से थोड़ा सा ज़्यादा समय बिता लिया है और इस दौरान यहाँ की गलियों, होटलों और कैफ़े में न जाने कितनी बार अलग-अलग व्यंजन चखे। सिक्किम की राजधानी गंगटोक, हिमालय की गोद में बसा हुआ एक ऐसा शहर है जहाँ प्रकृति, संस्कृति और खानपान, तीनों का अनोखा संगम मिलता है। यहाँ की ठंडी हवाएँ, बादलों से घिरी पहाड़ियाँ, बर्फ़ से ढकी चोटियाँ और शांत वातावरण किसी भी यात्री का मन मोह लेते हैं। लेकिन गंगटोक की असली पहचान केवल उसके नज़ारों तक सीमित नहीं है। यहाँ का खाना भी उतना ही खास और यादगार है। जब-जब मैंने गंगटोक में अलग-अलग जगह अलग-अलग व्यंजन खाए, हर बार यह अनुभव अलग और रोमांचक रहा। खाने के ज़रिए मैंने महसूस किया कि गंगटोक का स्वाद केवल जीभ को तृप्त करने का साधन नहीं, बल्कि इस शहर की आत्मा और संस्कृति की गहराई को समझने का एक जरिया है। आइए, मैं आपको उन खास व्यंजनों की सैर कराती हूँ जिन्हें मैंने यहाँ चखा और जो मुझे लगता है कि हर यात्री को ज़रूर आज़माने चाहिए।

थकाली थाली:

थकाली थाली संतुलन और परंपरा की पहचान है | थकाली थाली नेपाल और सिक्किम की खानपान संस्कृति का अनमोल हिस्सा है। इसमें एक थाली में इतने विविध स्वाद मिलते हैं कि हर कौर में नई अनुभूति होती है। इसमें चावल, दाल, मौसमी सब्ज़ियाँ, हरी पत्तेदार साग, अचार और आपकी पसंद के अनुसार मछली या मांस परोसा जाता है।

इस थाली की खासियत है संतुलन | पोषण और स्वाद दोनों का। दाल की सादगी पेट को आराम देती है, सब्ज़ियों का हल्का मसाला मन को सुकून पहुँचाता है और अचार का तीखापन पूरे स्वाद को जीवंत बना देता है। यदि आप मांस या मछली पसंद करते हैं तो उनका स्वाद थाली को और भी लज़ीज़ बना देता है।

कहाँ खाएँ? – .निमथो महात्मा गाँधी मार्ग
.हमरो भनसा घर, महात्मा गाँधी मार्ग

मोमो/झोल मोमो:

मोमो गंगटोक की पहचान और गर्व है | गंगटोक की गलियों का नाम लेते ही सबसे पहले मोमो याद आते हैं। यह यहाँ का सबसे लोकप्रिय और पहचानने योग्य व्यंजन है। मोमो स्टीम्ड भी मिलते हैं और फ्राइड भी। लेकिन इनका असली जादू तब खुलता है जब आप इन्हें डल्ले खोर्सानी वाली लाल चटनी के साथ खाते हैं। डल्ले खोर्सानी दुनिया की सबसे तीखी मिर्चों में गिनी जाती है और इसका तड़का मोमो को बेमिसाल बना देता है। सर्दी की शाम को दोस्तों के साथ बैठकर गरमागरम मोमो खाना गंगटोक का असली अनुभव है। आप चाहें तो वेज, चिकन, पोर्क या बीफ मोमो ले सकते हैं, हर वैरायटी का अपना अलग स्वाद है।

कहाँ खाएँ? – .शफ़ल मोमो, तडोंग
.टेस्ट ऑफ तिब्बत, महात्मा गाँधी मार्ग

"झोल मोमो" में मोमो को मसालेदार और टमाटर-प्याज की झोल (सूप जैसी सॉस) में परोसा जाता है | यह स्वादिष्ट और सर्द मौसम में बेहद ताज़गी देने वाला होता है, जिसमें मसालों की तीखापन और झोल की खटास एक साथ मिलकर जबर्दस्त स्वाद उत्पन्न करती है |

कहाँ खाएँ? – . मोमो.को, महात्मा गाँधी मार्ग
. निमथो, महात्मा गाँधी मार्ग

थुकपा:

थुकपा सर्द हवाओं में गरमाहट का कटोरा है | थुकपा, तिब्बत से आया हुआ एक नूडल सूप है, जो गंगटोक की ठंडी शामों में सबसे बड़ा सहारा है। जब पहाड़ी हवाएँ चेहरे को छूती हैं और मौसम हड्डियों तक सर्दी पहुँचा देता है, तब थुकपा का एक गरम कटोरा शरीर और आत्मा दोनों को गर्म कर देता है। इसमें नूडल्स, ताज़ा सब्ज़ियाँ, अंडा या मांस और हल्का मसालेदार शोरबा होता है। शोरबे का स्वाद हल्का होते हुए भी गहराई लिए होता है। इसमें आपको एक साथ पोषण, स्वाद और आराम सब कुछ मिलता है।

कहाँ खाएँ? – . शेर्पा किचन, डेवलोपमेंट एरिया
. शफ़ल मोमो, तडोंग

श्याफाले :

श्याफाले, तिब्बती-नेपाली संस्कृति का हिस्सा है। यह डीप-फ्राइड स्नैक बाहर से सुनहरा कुरकुरा होता है और अंदर में स्वादिष्ट भराई। भराई में आमतौर पर मांस या सब्ज़ियाँ होती हैं। यह दिखने में गुजिया जैसा होता है | इसे खाते समय हर कौर में कुरकुरेपन और रसदार फिलिंग का मेल मुँह में स्वाद का विस्फोट कर देता है।

कहाँ खाएँ? – शेर्पा किचन, डेवलोपमेंट एरिय

ताइपो:

ताइपो,जिसे थाइपो या थ्यपो भी कहते हैं, एक आकार में विशाल मोमो जैसा स्टीमड बन है, आकार में एक सामान्य मोमो से लगभग तीन गुना बड़ा होता है और इसका तला चिपटा होता है | इसका आटा बनावट में मुलायम-फुलावदार होता है क्योंकि इसमें यीस्ट मिलाया जाता है | भरने में अक्सर कीमा (चिकन, पोर्क या बीफ), उबला अंडा और सब्जियाँ मिलाई जाती हैं | वेज ताइपो भी मिलते हैं | एक ताइपो खाने से लगभग आधा दर्जन मोमो खाने के बराबर स्वाद और पेट भरा हुआ अनुभव मिलता है |

कहाँ खाएँ? – .द गंगटोक किचन, महात्मा गाँधी मार्ग
.ताइपो हाउस, रंका
.मोमो कलचर, महात्मा गाँधी, मार्ग

टिंग मोमो:

टिंग मोमो, सिक्किम का लोकप्रिय कंफ़र्टम फ़ूड है। यह मुलायम और फूले हुए स्टीम्ड ब्रेड होते हैं जिन्हें ग्रेवी या करी के साथ खाया जाता है। इनका स्वाद हल्का होता है, लेकिन जब इन्हें मसालेदार ग्रेवी या मांस के साथ परोसा जाता है तो यह स्वाद जीभ पर लंबे समय तक ठहर जाता है। सर्दी के दिनों में टिंग मोमो के साथ गरम करी खाना एक अलग ही आनंद देता है।

कहाँ खाएँ? – .मोमो.को, महात्मा गाँधी मार्ग
.जांबाला, देवराली

लाफिंग:

अगर आप गंगटोक की गलियों में घूमते हुए कुछ हल्का लेकिन तीखा खाना चाहते हैं तो लाफिंग (Laphing) सबसे बेहतरीन विकल्प है। यह ठंडी जेली जैसी नूडल डिश होती है, जिसमें मसालेदार सॉस, सोया, और लाल मिर्च मिलाई जाती है। इसका स्वाद खट्टा, नमकीन और तीखा, तीनों का मिश्रण होता है। लफिंग भी वेज और नॉन-वेज दोनों उपलब्ध होता है | गर्मियों में यह स्ट्रीट फूड आपको ताज़गी देता है और यात्रियों के बीच यह सबसे पसंदीदा हल्का भोजन है।

कहाँ खाएँ? – . लफिंग स्टॉल, तिब्बत रोड, महात्मा गाँधी मार्ग
. द लोकल कैफ़े, महात्मा गाँधी मार्ग

गंगटोक की मिठाइयाँ

नमकीन व्यंजनों की तरह ही गंगटोक की मिठाइयाँ भी बेहद खास हैं। यहाँ की मिठाइयाँ हल्की, ताज़गीभरी और कभी-कभी तो बेहद अनोखी भी होती हैं।

लेमन चीज़केक

लेमन चीज़केक का खट्टा-मीठा स्वाद ताज़गी से भर देता है। हर बाइट में नींबू की हल्की खटास और चीज़कीक की मिठास जीभ पर घुल जाती है।अगर आप कभी गंगटोक आते हैं या आप गंगटोक में ही रहते हैं तो **"लोफिंग अराउंड"** का लेमन चीज़ केक ज़रूर चखें |

डल्ले खोर्सानी आइसक्रीम:

यह गंगटोक की सबसे अनोखी आइसक्रीम है।
डल्ले मिर्च की तीखी जलन और आइसक्रीम की ठंडी मिठास, दो विपरीत स्वाद एक साथ मिलकर अद्भुत अनुभव कराते हैं। इसे खाने के बाद आप सोच में पड़ जाते हैं कि यह मिठाई है या मसालेदार व्यंजन! डल्ले खोर्सानी भारत की **सबसे तीखी मिर्चियों में से एक** है इसलिए इस आइसक्रीम को अपने रिस्क पर ही खाएँ | अगर आपको ज़्यादा तीखा खाना पसंद है तो ही इस आइसक्रीम को चखें |

कहाँ खाएँ? – .बूज़ा स्कूपा, वाजरा
.बूज़ा स्कूपा, महात्मा गाँधी मार्ग
.बूज़ा स्कूपा, ताडोंग

जापानी चीज़केक:

जापानी चीज़केक अपने मुलायम, हल्के और फ़्लफ़्फ़ी टेक्सचर के लिए जाना जाता है। इसे खाते ही लगता है मानो मिठास की एक हल्की बादल जैसी परत मुँह में पिघल गई हो। वैसे तो गंगटोक में आपको बहुत सारे बेकरी और कैफ़े में आपको जापानी चीज़केक मिलेंगे लेकिन सबसे अच्छा जापानी चीज़केक **शेर-ए-पंजाब** में मिलता है |

निष्कर्ष

गंगटोक का खाना केवल स्वाद का नहीं, बल्कि संस्कृति और जीवनशैली का दर्पण है। ये सब गंगटोक की पाक कला को दुनिया से अलग खड़ा करते हैं। अगर आप कभी गंगटोक आएँ तो यहाँ का खाना सिर्फ़ चखने के लिए नहीं, बल्कि महसूस करने के लिए खाएँ। यह यात्रा को यादगार बनाएगा और आपको गंगटोक की आत्मा के और करीब ले जाएगा।

~ ~ ~ ~ ~

मेरा चौपाया बेटा:विनी

यूडेन लामू भूटिया,
सहायक पर्यवेक्षक

कभी-कभी जीवन में ऐसे मोड़ आते हैं, जब सब कुछ होते हुए भी भीतर से खालीपन महसूस होता है। रजोनिवृत्ति के उस दौर में मैं भी गहरे अकेलेपन से गुज़र रही थी। मन खाली-खाली सा था, मानो हर ओर सन्नाटा छा गया हो। तभी मेरी ज़िन्दगी में विनी आया और मेरे जीवन की तस्वीर बदल गई।

विन्नी कोलकाता से लिया गया था, तब वह केवल तीन महीने का था। विन्नी को लाने की कहानी भी कम रोचक नहीं है। एक रात वह कलकत्ता में मेरी बहन के यहाँ था। हमने सोचा कि किसी भी उड़ान से उसे बागडोगरा ले आएंगे, लेकिन एक-एक कर सभी विमान सेवाओं ने मना कर दिया। कोई भी उड़ान उसे अपने साथ लाने की अनुमति नहीं दे रही थी। अंततः, एयर इंडिया की उड़ान से वह कोलकाता से सिलीगुड़ी पहुँचा। उस समय उसका स्वरूप कुछ अजीब सा था, जैसे कोई नन्ही छिपकली।

विनी के नामकरण के लिए मैं बहुत असमंजस में थी कि मैं उसे क्या नाम दूँ | फिर काफी सोचने के बाद मैंने उसका नाम अपने बचपन के पसंदीदा किताब "विनी द पू" के मुख्य पात्र के नाम पर विनी रखा | पर कहते हैं ना! सच्चा रिश्ता रूप-रंग से नहीं, दिल से बनता है। धीरे-धीरे मैंने उसे अपने बच्चे की तरह पालना शुरू किया। उसके भोजन, उसकी देखभाल और उसकी परवरिश में मैंने अपना पूरा समय और मन लगाया। जब भी मैं उसे देखती, मुझे कभी यह अनुभव नहीं होता कि वह कोई पशु है। मेरे लिए वह हमेशा मेरा अपना बच्चा रहा है।

विनी की सबसे अद्‌भुत विशेषता यह है कि वह इंसानों की तरह भावनाएँ समझता है। मेरे चेहरे का भाव देखकर ही वह मेरा मन पढ़ लेता है। जब भी मैं उदास होती हूँ, उसकी मासूमियत भरी आँखें और नटखट हरकतें मेरे चेहरे पर मुस्कान ले आती हैं। उसके साथ रहने से मुझे सुरक्षा और अपनापन का अनुभव होता है। सच कहूँ तो दिनभर का तनाव और थकान उसकी एक झलक देखते ही कहीं गायब हो जाती है।

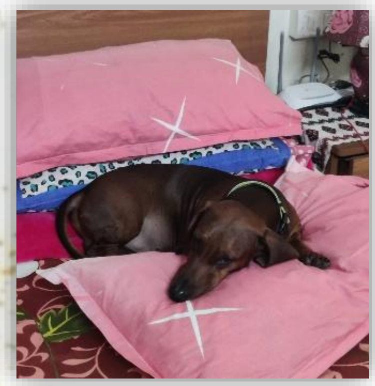

विनी के साथ मेरी अनेक स्मृतियाँ जुड़ी हुई हैं। मैंने उसके साथ पेलिंग, खेचिपोखरी, ग्लास वॉक जैसी जगहों की यात्राएँ की हैं। यहाँ तक कि मैंने उसके साथ नेपाल की यात्रा भी की है | शुरू-शुरू में उसे सिलीगुड़ी ले जाने के लिए मुझे बस का सहारा लेना पड़ता था। उसके लिए मैं हमेशा एक अलग सीट खरीदती थी, ताकि वह आराम से यात्रा कर सके। जैसे-जैसे वह बड़ा होता गया, मैंने उसकी सुविधा के लिए एक कार खरीदी। सच कहूँ तो मुझे कार की ज़्यादा आवश्यकता नहीं थी, लेकिन विनी की मुस्कान और उसकी यात्रा की सहजता के लिए मैंने यह निर्णय लिया।

आज विनी सिर्फ़ एक पालतू नहीं है। वह मेरे जीवन का संगी, मेरा विश्वासपात्र और मेरा सच्चा दोस्त है। उसकी उपस्थिति ने मुझे यह एहसास कराया कि सच्चा साथी वही है जो बिना शब्दों के भी हमें समझ ले, हमारे दुख-सुख में साथ खड़ा रहे और हर क्षण हमें जीवन का नया अर्थ दे। विनी ने मुझे यह सिखाया कि प्रेम सिर्फ़ मनुष्यों तक सीमित नहीं है। सच्चा स्नेह और अपनापन हर जीव में बसता है। और यही प्रेम जीवन को जीने योग्य बनाता है।

~ ~ ~ ~ ~

रिनिका भौमिक
बेटी – मौसुमी भौमिक
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

गज़ल

ज़ख़्म ऐसे मिले हैं कि भरते नहीं,
रास्ते भी हमें अब तो चलते नहीं।

तेरे जाने के बाद ऐ तन्हाइयों,
हम किसी से भी खुलकर ये कहते नहीं।

दर्द इतना है दिल में कि समझा न सके,
आँखें रोती हैं लेकिन वो बहते नहीं।

ख़्वाब टूटे तो दुनिया भी वीरान है,
अब सितारे भी रातों में चमकते नहीं।

हमने चाहा था जीना तेरे साथ ही,
तेरे बिन अब ये साँसें भी रहते नहीं।

~ ~ ~ ~ ~

दिल की गलियों में उजालों का सफ़र रहने दो,
रात कितनी भी घनी हो, कोई दर रहने दो।

फूल खिलते हैं यहाँ दर्द के साये तले,
ज़ख़्म पर हंस के दवा का असर रहने दो।

हमने देखा है हक़ीक़त की तल्ख़ रौशनी,
ख़्वाब थोड़े से मोहब्बत के मगर रहने दो।

तन्हाई से भी हमें याराना है बरसों से,
पर ये दिल चाहता है, एक हमसफ़र रहने दो।

इश्क़ की राह में ठोकर तो मुक़द्दर ही है,
पर दुआ है कि हमेशा ये हुनर रहने दो।

~ ~ ~ ~ ~

कार्यस्थल पर नस्लवाद

हिमांशु सिंह पवार,
लेखापरीक्षक

कार्यस्थल पर नस्लवाद एक गंभीर सामाजिक समस्या है, जो न केवल व्यक्तिगत स्तर पर कर्मचारियों को प्रभावित करती है, बल्कि पूरे संगठन के कार्य वातावरण और उत्पादकता पर भी नकारात्मक प्रभाव डालती है। नस्लवाद का अर्थ है किसी व्यक्ति के रंग, नस्ल, जाति या जातीय पृष्ठभूमि के आधार पर उसके साथ भेदभाव करना। जब यह भेदभाव कार्यस्थल पर होता है, तो यह व्यक्ति की योग्यता और कड़ी मेहनत को नजरअंदाज कर देता है।

नस्लवाद के कई रूप होते हैं , जैसे कि किसी कर्मचारी को केवल उसकी जातीय पहचान के कारण कमतर आँकना, उसे प्रमोशन से वंचित करना, या कार्यस्थल पर उसकी अनदेखी करना। कई बार यह भेदभाव खुलकर सामने नहीं आता, बल्कि सूक्ष्म रूपों में दिखाई देता है, जिसे "सूक्ष्म-आक्रमण" कहा जाता है। ऐसे माहौल में कार्य करना मानसिक तनाव, आत्मविश्वास में कमी और नौकरी से असंतोष पैदा कर सकता है। इसके परिणामस्वरूप न केवल कर्मचारी की कार्यक्षमता घटती है, बल्कि वह स्वयं को कार्यस्थल से अलग-थलग महसूस करने लगता है। यह स्थिति लंबे समय तक चलने पर कर्मचारी के मानसिक स्वास्थ्य को गंभीर रूप से प्रभावित कर सकती है।

कार्यस्थल पर नस्लवाद को रोकने के लिए केवल पारंपरिक नीतियाँ पर्याप्त नहीं हैं, बल्कि हमें नवोन्मेषी और व्यवहारिक उपायों की आवश्यकता है जो वास्तविक परिवर्तन ला सकें। सबसे पहले, एक एआई-सक्षम अनाम भर्ती प्रणाली विकसित की जा सकती है जो उम्मीदवारों की जाति, नाम या फोटो जैसे संकेतकों को छिपाकर केवल योग्यता और अनुभव के आधार पर चयन सुनिश्चित करे। इससे अनजाने में होने वाले पूर्वाग्रहों से बचा जा सकता है। इसके साथ ही कर्मचारियों और अधिकारियों को नस्लीय पूर्वाग्रहों के प्रति जागरूक करने के लिए गेमिफिकेशन तकनीक का उपयोग किया जा सकता है। इंटरैक्टिव ऐप्स या वर्चुअल रियलिटी अनुभवों के माध्यम से उन्हें वास्तविक परिदृश्यों में डालकर सोचने और समझने का अवसर मिलेगा।

एक और प्रभावशाली तरीका "रिवर्स-मेंटॉरिंग" है, जिसमें वरिष्ठ अधिकारियों को विविध पृष्ठभूमि से आए कनिष्ठ कर्मचारी मार्गदर्शन दें। इससे नेतृत्वकर्ता ज़मीनी सच्चाई से परिचित हो पाते हैं। इसके साथ ही कंपनियाँ अपनी नस्लीय विविधता, प्रमोशन, वेतन और शिकायतों से जुड़ा डेटा एक ओपन डैशबोर्ड पर प्रकाशित करें, जिससे पारदर्शिता और जवाबदेही बनी रहे। समय-समय पर स्टोरी शेयरिंग सर्कल्स आयोजित किए जाएँ, जहाँ कर्मचारी अपने अनुभव साझा कर सकें, जिससे सहकर्मियों में सहानुभूति और समझ बढ़ती है। कंपनियों में डाइवर्सिटी और इंक्लूजन को बढ़ावा देने के लिए वार्षिक "इंक्लूजन इनोवेशन चैलेंज" जैसी प्रतियोगिताएँ रखी जा सकती हैं, जहाँ कर्मचारी नस्लवाद से निपटने के नए विचार प्रस्तुत करें। इसके अलावा ऑफिस पोर्टल पर एक गुप्त और सुरक्षित "बायस रिपोर्ट" बटन होना चाहिए, जहाँ कोई भी कर्मचारी बिना नाम बताए भेदभाव की घटनाएँ रिपोर्ट कर सके। कर्मचारियों की मानसिकता और व्यवहार में बदलाव लाने के लिए रोल-प्ले वर्कशॉप्स का आयोजन भी सहायक हो सकता है, जहाँ वे खुद को उन परिस्थितियों में रखें जहाँ उन्हें भेदभाव का सामना करना पड़ता है।

इन सभी उपायों का उद्देश्य केवल नियम बनाना नहीं, बल्कि ऐसी कार्यसंस्कृति बनाना है जो हर व्यक्ति को समान रूप से मूल्यवान समझे और हर पृष्ठभूमि से आए लोगों को आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने का अवसर दे। इस प्रकार, संवेदनशीलता, शिक्षा और नवाचार के माध्यम से कार्यस्थल को वास्तव में नस्लवाद-मुक्त और समावेशी बनाया जा सकता है। कार्यस्थल पर नस्लवाद को समाप्त करने के कई सकारात्मक और दूरगामी लाभ

होते हैं, जो न केवल कर्मचारियों के लिए, बल्कि पूरे संगठन के विकास और सफलता के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

सबसे पहला लाभ है **सकारात्मक और समावेशी कार्य वातावरण** का निर्माण। जब सभी कर्मचारी यह महसूस करते हैं कि उनके साथ समान और सम्मानजनक व्यवहार किया जा रहा है, तो वे अधिक आत्मविश्वास के साथ कार्य करते हैं। यह माहौल सहयोग, पारदर्शिता और टीम वर्क को प्रोत्साहित करता है।

दूसरा बड़ा लाभ है **उच्च उत्पादकता**। एक नस्लवाद-मुक्त वातावरण में कर्मचारी मानसिक रूप से अधिक शांत और संतुलित रहते हैं, जिससे उनका ध्यान अपने काम पर केंद्रित रहता है। तनाव और भेदभाव की स्थिति में कार्य क्षमता घटती है, जबकि समानता वाले वातावरण में यह कई गुना बढ़ जाती है।

तीसरा लाभ है **प्रतिभा को आकर्षित और बनाए रखना**। जब कंपनी एक न्यायसंगत और विविधता को अपनाने वाली छवि प्रस्तुत करती है, तो श्रेष्ठ प्रतिभाएँ वहां काम करने के लिए प्रेरित होती हैं। साथ ही, पहले से मौजूद कर्मचारी भी लंबे समय तक संगठन से जुड़े रहना चाहते हैं।

इसके अतिरिक्त, नस्लवाद की रोकथाम से कंपनी की **साख और ब्रांड छवि** में भी सुधार होता है। आज की वैश्विक दुनिया में ग्राहक और साझेदार उन संगठनों से जुड़ना पसंद करते हैं जो सामाजिक उत्तरदायित्व को गंभीरता से लेते हैं। यह निवेशकों का भी विश्वास जीतने में सहायक होता है। नस्लवाद को रोकने से **विविध दृष्टिकोण और नवाचार** को भी बढ़ावा मिलता है। विविध पृष्ठभूमियों से आने वाले लोग अलग-अलग अनुभव और विचार लाते हैं, जिससे बेहतर निर्णय लिए जाते हैं और समस्याओं के रचनात्मक समाधान निकलते हैं।

अंततः, एक नस्लवाद-मुक्त कार्यस्थल केवल नैतिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि रणनीतिक और आर्थिक दृष्टि से भी एक समझदारी भरा कदम है। इससे न केवल कर्मचारी खुश रहते हैं, बल्कि कंपनी का प्रदर्शन, विकास और लाभ भी बेहतर होता है। यह एक ऐसा निवेश है जो दीर्घकालिक सफलता की नींव रखता है। संगठनों की यह ज़िम्मेदारी बनती है कि वे एक समावेशी और विविधता को प्रोत्साहित करने वाला वातावरण बनाएं। इसके लिए नस्लीय भेदभाव के खिलाफ स्पष्ट नीतियाँ, प्रशिक्षण कार्यक्रम और शिकायत निवारण तंत्र होना आवश्यक है। कर्मचारियों को यह विश्वास दिलाया जाना चाहिए कि किसी भी प्रकार के भेदभाव के खिलाफ वे अपनी आवाज़ उठा सकते हैं और उन्हें न्याय मिलेगा। सरकारों और समाज की भी भूमिका है कि वे ऐसे भेदभाव के खिलाफ कड़े कानून बनाएं और उनका प्रभावी क्रियान्वयन करें। शिक्षा और जागरूकता के माध्यम से लोगों की सोच में बदलाव लाना भी अत्यंत आवश्यक है।

निष्कर्षतः कार्यस्थल पर नस्लवाद को समाप्त करना केवल एक नैतिक जिम्मेदारी नहीं, बल्कि एक व्यावसायिक आवश्यकता भी है। एक समानता आधारित कार्य संस्कृति न केवल कर्मचारियों को प्रोत्साहित करती है, बल्कि संगठन को भी दीर्घकालिक सफलता की ओर अग्रसर करती है।

~ ~ ~ ~ ~

भारत और उसकी भौगोलिक विशेषताएँ

कृष्ण कुमार मीणा,
लेखापरीक्षक

भारत अपनी भौगोलिक विशेषताओं के कारण बहुत अधिक मशहूर है। यहाँ अक्षांशीय विस्तार बहुत अधिक है, जिसके कारण यहाँ का प्राकृतिक परिवेश भिन्नताओं से भरा हुआ है। जहाँ उत्तर में हिल स्टेशन हैं, तो दक्षिण में समुद्र। पश्चिम में मरुस्थल, तो पूर्व में जंगल। किसी भी व्यक्ति के लिए भारत में पर्यटन के लिए आकर्षित होना स्वाभाविक है। परन्तु क्या पर्यटन उस स्तर का है? यह विषय सोचने का है। भारत में पिछले कुछ दशकों में पर्यटन कम होता हुआ दिखाई दे रहा है। इसके पीछे अनेक कारण हैं; सरकार और जनता दोनों ही इसके लिए जिम्मेदार हैं। आज इसी विषय पर हम गूढ़ अध्ययन करेंगे।

पर्यटन में कमी के पीछे के कारण मुख्यतः आधारभूत संरचना, सुविधाएं, आकर्षण, स्वच्छता, सामान्य व्यवहार संबंधी ज्ञान और संस्कृति हैं। उपर्युक्त विषयों में पहले तीन सरकार से संबंधित हैं, इस पर कुछ भी कहना ठीक नहीं है। अगले तीन विषय हम जैसे सामान्य नागरिकों से जुड़े हैं। सभी को एक-एक करके देखते हैं। स्वच्छता, जो कि भारत में आज एक मुख्य बिंदु बना हुआ है। भारतीय जनता ने देश और घर, इन दोनों विषयों को अलग माना है। उनके अनुसार घर अच्छा होना चाहिए, देश तो गंदा हो या अच्छा, किसे फर्क पड़ता है। और इसी का प्रभाव हमें हमारे पर्यटन स्थलों पर देखने को मिलता है। वाराणसी, अयोध्या, मथुरा और अजमेर जैसे धार्मिक स्थल, जो कि अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं हमारे लिए उन्हें सरकार पिछले कई दशकों से साफ करना चाह रही है, परन्तु सफलता के आसपास भी नहीं है। महाकुंभ जैसे बड़े अवसर पर जब सरकार ने जनता के लिए अनेक अच्छे प्रयास किए, सुविधा देने के लिए तो हम देखते हैं कि लोग वस्त्र बदलने के लिए दिए गए स्थानों पर मूत्र कर रहे हैं। क्या अब भी इसका कारण सिर्फ भ्रष्टाचार है? जी नहीं। हम इसके लिए बराबर जिम्मेदार हैं, असल में हम ही वास्तविक गुनहगार हैं।

देश के तिरंगे के लिए हमारे अंदर पूरा सम्मान है, परन्तु देश के लिए नहीं। सरकार, प्रशासन इसके लिए बहुत मेहनत करता है, परन्तु यह जनता? पर्यटन के कातिल के रूप में दूसरा मुख्य विषय है व्यवहार की सामान्य समझ न होना । वैसे यह विषय भारतीयों के लिए एक रॉकेट साइंस है, उन्हें यह समझ नहीं आती है। हम हर अच्छी चीज को बुरी बना सकते हैं।

होली, जो एक भारतीय परिप्रेक्ष्य में एक बहुत महत्वपूर्ण त्योहार है, कहा जाता है वृंदावन की होली सबसे अच्छी है। मेरी कृष्ण कन्हैया से विनती है कि मैं कभी वृंदावन की होली न देख पाऊं, गलती से भी नहीं। क्योंकि हँसी आती है, अब तो होली पर आदमियों की हरकतें देखकर। हर बार ऐसे वीडियो बाहर आते हैं जहाँ विदेश से लोग भारत में वृंदावन की होली देखने आते हैं, परन्तु उनके साथ "बुरा न मानो होली है" के नाम पर बदतमीज़ी की जाती है | उनको बिना उनकी अनुमति के छुआ जाता है, उनके साथ छेड़खानी की जाती है। शर्म तो तब आती है जब ऐसी ही छेड़खानी करने वाला व्यक्ति सोशल मीडिया पर धर्म का पुजारी बनता है। ऐसे व्यक्तियों से कोई उम्मीद कैसे की जा सकती है। अब किसका दोष देंगे आप? सरकार का, प्रशासन का या विपक्ष का? यहाँ किसी को भी गलत नहीं ठहराया जा सकता है, क्योंकि अब 45 साल की उम्र में इस प्रकार की हरकतें करने वाले को कोई नहीं सुधार सकता है।

संस्कृति, जो कि मेरी नज़र में अंतिम विषय है। यह देश, जिसकी राजधानी में महिला आज भी अपने आप को सुरक्षित नहीं मानती है, जहाँ हर कुछ दिनों में लड़कियों के साथ कुछ न कुछ घटनाएँ होती रहती हैं | क्या यह देखकर आपको सच में रात में नींद आ जाती है? क्योंकि मुझे तो नहीं आ पा रही है। ऐसे हजारों उदाहरण हैं जहाँ हिंदुस्तानी आदमियों ने अपना "कर्तव्य" पूरा किया और देश या विदेश की महिला को बहुत अच्छी तरह से, सहजता से उन्हें परेशान किया।

उदयपुर में घूमने आए एक दंपती, जिसमें महिला रूसी नागरिक थी, उसपर भद्दी टिप्पणियाँ कीं और भी न जाने कितने उदाहरण हैं। महिलाएं साफ़ कहती हैं, हम बाहर इसलिए नहीं जाते क्योंकि कुछ "सुसामाजिक तत्व" उनका बाहर इंतज़ार कर रहे हैं | फिर हम अपनी संस्कृति को महान बताते हैं! अरे भाई, पहले की होगी। एक घर, एक मुहल्ला, एक गाँव, एक जिला, एक राज्य और एक देश, जिसमें महिलाएँ सुरक्षित नहीं है, वह समाज किस संस्कृति की बात कर रहा है?

अंत में यही कहना चाहूंगा कि आज मेरा मकसद केवल पर्यटन में आ रही समस्याओं को उजागर करना नहीं था, बल्कि कुछ कुरीतियों से पर्दा हटाना भी था। यदि लेख पढ़कर अच्छा लगे तो अच्छाइयाँ बताएं और अगर बुरा लगे तो कमियाँ ज़रूर बताएँ किसी प्रकार का आपसे कोई द्वेष भाव नहीं होगा। बाकी कृपा करें और शिकायत किसी नेता से नहीं, स्वयं से ही करें और कमी पहले स्वयं में देखें। इसी के साथ विदा चाहूंगा और ऊपर उपयोग में लिए गए कुछ शब्द आपको ठेस पहुंचा सकते है परन्तु कृपया उन पर एक विचार अवश्य करें।

~~~~~
~~~~~

वर्ण वयवस्था (एक गहरा सत्य)

शम्भू कुमार,
लेखापरीक्षक

भारत की सामाजिक संरचना में वर्ण व्यवस्था एक ऐसा ऐतिहासिक और जटिल विषय है, जो आज भी हमारे समाज की वास्तविकताओं और चुनौतियों में गहराई से जुड़ा हुआ है। प्रारंभ में यह व्यवस्था समाज के विभाजन और कर्तव्यों के निर्धारण के लिए बनाई गई थी, लेकिन समय के साथ यह एक कठोर जातिगत भेदभाव और सामाजिक अन्याय का माध्यम बन गई। आज के आधुनिक युग में भी, जहां संविधान और कानून सभी नागरिकों को समान अधिकार देते हैं, वहाँ भी वर्ण व्यवस्था की काली छाया समाज के कई हिस्सों में व्याप्त है।

वर्ण व्यवस्था का ऐतिहासिक स्वरूप

वर्ण व्यवस्था के चार मुख्य वर्ग हैं ब्राहमण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। धार्मिक ग्रंथों में इनका सामाजिक कार्य और कर्तव्य निर्धारित किया गया था। इस व्यवस्था का मूल उद्देश्य था समाज को सुचारू रूप से चलाना और प्रत्येक वर्ग को उसके कार्यों में दक्ष बनाना | लेकिन कालांतर में यह व्यवस्था कठोर जातिगत भेदभाव और सामाजिक असमानता में तब्दील हो गई |

आज की सामाजिक परिस्थिति परिस्थिति में वर्ण व्यवस्था की काली सच्चाई:

1. जातिगत भेदभाव और सामाजिक असमानता:
   आज भी भारत के ग्रामीण और शहरी दोनों इलाकों में जाति आधारित भेदभाव सामान्य है | दलित और पिछड़े वर्गों के साथ भेदभाव, सामाजिक बहिष्कार और हिंसा के मामले कई बार सुनने को मिलते हैं | शादी, रोजगार, शिक्षा और सामाजिक समारोहों में जाति के आधार पर भेदभाव अब गहरे जड़े हुए हैं |
2. शिक्षा और रोजगार में असमानता:
   आधुनिक शिक्षा और रोजगार के अवसर उपलब्ध होने के बावजूद, जातिगत भेदभाव की वजह से पिछड़े वर्गों को समान अवसर नहीं मिल पाते | आर्थिक पिछड़ापन और सामाजिक कलंक उन्हें आगे बढ़ने से रोकता है |
3. राजनीति में जाति का दुरुपयोग:
   राजनीति में भी जातिगत पहचान का दुरुपयोग होता है | दलित और अन्य पिछड़े वर्गों के नाम पर राजनीति होती है, लेकिन यह अक्सर केवल वोट बैंक की राजनीति बनकर रह जाती है, जिससे सामाजिक सुधार के मुद्दे पीछे छूट जाते हैं |
4. कानूनी व्यवस्था और उसका प्रभाव:
   संविधान में जातिगत भेदभाव को रोकने के लिए कानून बने हैं, जैसे अनुसूचित जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम | बावजूद इसके, कानूनी प्रक्रिया धीमी, भ्रष्टाचार और सामाजिक दबाव के कारण न्याय कई बार संभव नहीं हो पता |

आधुनिक भारत में बदलाव के प्रयास

हालांकि, भारत में जाति आधारित भेदभाव के खिलाफ अनेक सामाजिक आंदोलनों और सरकार की अफरमेटीव एक्शन (आरक्षण) नीतियों के कारण स्थिति में कुछ सुधार भी हुआ है। दलितों और पिछडे वर्गों की राजनीतिक भागीदारी बढ़ी है, कई सामाजिक जागरूकता अभियान चल रहे हैं, और शिक्षा के क्षेत्र में भी अवसरों की संख्या बढ़ी है।

आज के तथाकथित धर्मगुरुओं द्वारा वर्ण व्यवस्था को बढ़ावा देना

आज के दौर में जहाँ समाज और सरकार जातिगत भेदभाव के खिलाफ लगातार काम कर रहे हैं, वहीं कुछ तथाकथित धर्मगुरु और समाज के प्रभावशाली व्यक्ति अपनी बातों और कृत्यों से वर्ण व्यवस्था को बढ़ावा दे रहे हैं। ये धर्मगुरु सामाजिक और धार्मिक मंचों का उपयोग जातिगत भेदभाव को सही ठहराने, पुराने सामाजिक रुढ़ियों को बनाए रखने और लोगों के बीच नफरत फैलाने के लिए करते हैं।

कैसे बढ़ावा देते हैं ये धर्मगुरु?

1. पुरानी सोच और रूढ़िवादी विचारों को प्रसारित करनाः कई धर्मगुरु पारंपरिक धार्मिक संर्यो की गलत व्याख्या कर जातिगत भेदभाव को धार्मिक आदेश के रूप में पेश करते हैं। वे यह कहते हैं कि वर्ण व्यवस्था भगवान द्वारा निर्धारित है और इसे तोड़ना समाज के लिए हानिकारक है। इससे समाज में पुराने जातिगत कलंक कायम रहते हैं।
2. समाज में विभाजन पैदा करनाः कुछ धर्मगुरु अपने अनुयायियों को जाति या वर्ण के आधार पर अलगाव में बांटते हैं। वे जातिगत श्रेष्ठता का भ्रम फैलाते हैं, जिससे सामाजिक एकता कमजोर होती है और भेदभाव गहरा जाता है।
3. राजनीतिक हिर्ता के लिए उपयोगः धर्मगुरु आतिगत भावनाओं को भड़का कर राजनीति में प्रभावशाली भूमिका निभाते हैं। वे जाति आधारित वोट बैंक की राजनीति को हवा देते हैं, जिससे जातिगत पहचान की दीवारें और मजबूत होती है।
4. सुधारों का विरोध: जातिगत भेदभाव को खत्म करने के लिए जो सरकारी नीतियों और सामाजिक आंदोलन हैं, उनका विरोध भी कई बार धर्मगुरुओं द्वारा किया जाता है। वे सामाजिक बदलावी को धार्मिक आस्था पर आधात मानकर रोकने की कोशिश करते हैं।

इसका समाज पर प्रभाव

सामाजिक समरसता में बाधाः धर्मगुरुओं के इस व्यवहार से समाज में सद्भाव और मेल-मिलाप टूटता है। जातिगत तनाव बढ़ता है।
नए विवादों और हिंसा का जन्मः जाति आधारित भेदभाव और कट्टरता के कारण सामाजिक हिंसा, तनाव और संघर्ष की घटनाएं बढ़ती हैं।
युवा वर्ग में भ्रमः युवा वर्ग धर्मगुरुओं के प्रभाव में आकर पुरानी सोच को ही सही मानने लगते हैं, जिससे सामाजिक सुधार की प्रक्रिया धीमी हो जाती है।

समाधान क्या हो सकता है?

धार्मिक शिक्षाओं का सही प्रचारः धर्मगुरुओं को चाहिए कि वे अपने प्रचार-प्रसार में समानता, भाईचारे और सामाजिक न्याय के बारे में बताएँ |
साक्षरता और जागरुकताः समाज में शिक्षा और जागरुकता बढ़ाने से जातिगत भेदभाव के प्रति लोगों की सोच बदलेगी।
सख्त कानूर्नी का पालनः जातिगत नफरत फैलाने वालों के खिलाफ कानून को प्रभावी रूप से लागू किया जाना चाहिए।
धर्मगुरुओं की जवाबदेहीः समाज में प्रभाव रखने वाले धर्मगुरुओं को उनकी जिम्मेदारियों का एहसास दिलाना जरूरी है |

~ ~ ~ ~ ~

जीवन में कठिनाइयाँ एक अवसर

अमन कुमार,
लेखाकार

जीवन का सफर हमेशा आसान नहीं होता। हर इंसान को अपनी राह में कई कठिनाइयों और समस्याओं का सामना करना पड़ता है। ये कठिनाइयाँ कभी-कभी इतनी बड़ी लगती हैं कि हम हार मान लेने को मजबूर हो जाते हैं। लेकिन अगर हम गहराई से देखें तो पाएंगे कि जीवन की हर कठिनाई एक अवसर छुपाए होती है | अवसर हमें बेहतर बनने का, सीखने का और मजबूत बनने का।

कठिनाइयाँ हमें हमारी असली क्षमता पहचानने का मौका देती हैं। जब सब कुछ ठीक चलता है, तब हम अपनी ताकत का एहसास नहीं कर पाते। लेकिन जब विपत्ति आती है, तब हमारी छुपी हुई शक्ति, धैर्य और संघर्ष की भावना बाहर आती है। यही वह समय होता है जब हम अपने भीतर की गहराईयों को छू पाते हैं और खुद को बेहतर बनाने की दिशा में कदम बढ़ाते हैं। कठिनाइयाँ हमें धैर्य सिखाती हैं, संयम सिखाती हैं, और जीवन के महत्व को समझाती हैं। वे हमें यह याद दिलाती हैं कि सफलता का रास्ता सीधा नहीं होता, उसमें संघर्ष और मेहनत जरूरी है। यदि हम इन कठिनाइयों को बाधा की तरह न देखकर, एक चुनौती के रूप में लें, तो हर समस्या एक नया अवसर बन जाती है।

इतिहास गवाह है कि कई महान व्यक्तित्वों ने कठिनाइयों को अपने सपनों की सीढ़ी बनाया। वे लोग जो विपरीत परिस्थितियों में भी हार नहीं मानते, वे ही असली विजेता होते हैं। कठिनाइयों के बिना जीवन की सफलता की कीमत का पता नहीं चलता। इसलिए, जीवन में कठिनाइयों को गले लगाना चाहिए। उन्हें अपने विकास का जरिया बनाना चाहिए। हर समस्या हमें कुछ नया सिखाती है, और हर संघर्ष हमें मजबूत बनाता है। कठिनाइयाँ हमें केवल गिराती नहीं, बल्कि हमें उठना भी सिखाती हैं।

अंत में, याद रखें जीवन की कठिनाइयाँ अवसर हैं, जो हमें हमारे भीतर छुपी हुई क्षमताओं को पहचानने का मौका देती हैं। जब हम इन्हें अवसर के रूप में अपनाते हैं, तो जीवन का हर संघर्ष एक नई सफलता की कहानी बन जाता है।

~~~~~
~~~~~

टूटी चिड़िया

चंचल
कनिष्ठ अनुवादक

गाँव के एक पुराने पेड़ पर एक छोटी सी चिड़िया रहती थी। उसकी चोंच कुछ टूटी हुई थी और पंख भी पूरी तरह सही नहीं थे, इसलिए वह उड़ने में बहुत कमजोर थी। बाकी चिड़ियों के साथ उड़ना उसके लिए मुश्किल था, और वह अक्सर अकेली-उदास बैठी रहती थी।

चिड़िया का नाम था मिनी। मिनी ने बचपन से ही महसूस किया था कि वह बाकी चिड़ियों से अलग है। गांव के बच्चे भी कभी-कभी उसे देखकर हँसते थे। लोगों की बातों से मिनी का मन उदास रहता था, लेकिन वह कभी भी हार नहीं मानती थी । मिनी रोज़ पेड़ की एक नर्म शाखा पर बैठकर आसमान की तरफ देखती और सोचती, "एक दिन मैं भी उड़ूंगी, पूरा आसमान छूऊंगी।" पर उसके टूटे पंख उसे रोक देते।

एक दिन गाँव में एक लड़का आया, उसका नाम अंकुर था। अंकुर की भी एक कहानी थी, उसके पैर ठीक से काम नहीं करते थे, इसलिए वह गाँव के बच्चों की तरह दौड़ नहीं सकता था। वह भी अक्सर अकेला रहता। अंकुर ने मिनी को देखा, जो अकेली और कमजोर लग रही थी। उसने उससे दोस्ती कर ली। अंकुर रोज़ मिनी के लिए छोटे-छोटे खाने के दाने लेकर आता था, उसकी देखभाल करता था। उसने अपने छोटे से घर के सामने एक छाया बनाई, जहाँ मिनी आराम कर सके।

धीरे-धीरे मिनी का भरोसा बढ़ने लगा। अंकुर की दोस्ती ने मिनी के भीतर उम्मीद जगा दी। अंकुर भी मिनी से सीख रहा था कि कमजोर दिखने के बावजूद हम अपनी ताकत से जीवन में सब कुछ कर सकते हैं। मिनी ने अंकुर को भी बताया कि वह उड़ना चाहती है, पूरी उड़ान भरना चाहती है, लेकिन मेरे पंख कमजोर हैं। अंकुर ने कहा, "हम दोनों मिलकर कोशिश करेंगे। मैं तुम्हें सिखाऊंगा और तुम मुझे धैर्य सिखाओगी।" अंकुर ने मिनी के पंखों के आस-पास छोटे-छोटे कपड़े के टुकड़े बांधे ताकि वह उड़ान भर सके। शुरुआत में मिनी कई बार गिरती, चोट लगती, लेकिन अंकुर उसके साथ होता।

महीनों की मेहनत और प्यार के बाद, एक दिन मिनी ने पहली बार अपने कमजोर पर के साथ, लेकिन पूरी उड़ान भरी। अंकुर ने उसकी सफलता देख खुशी से आँखें नम कर लीं। गाँव के बच्चे भी अब मिनी को देखकर प्रेरित हुए। वे समझ गए कि कमजोर होने का मतलब हार नहीं होती, बल्कि कोशिश और प्यार से सब कुछ संभव है।

कहानी का संदेश: टूटेपन में भी शक्ति होती है और सच्ची दोस्ती और प्यार से हर बाधा पार की जा सकती है।

~~~~~
~~~~~

मिट्टी के टूटे हुए बर्तन

मंतोष कुमार सिंह,
लेखाकार

राजू गाँव के एक कुम्हार का बेटा था। राजू को बचपन से ही मिट्टी के बर्तन बनाना पसंद था। वह अपने पिता के साथ सुबह से शाम तक कुम्हारघर में काम करता, नए-नए आकार बनाने की कोशिश करता। पर राजू के हाथ कमजोर थे, इसलिए उसके बने बर्तन अक्सर टूट जाते।

गाँव के लोग हँसते, कहते, "राजू के हाथ से बर्तन बनेंगे क्या?" राजू को यह सुनकर बहुत बुरा लगता, लेकिन वह हार नहीं मानता था। उसने अपने पिता से रोज़ नए तरीके सीखे और कोशिश करता रहा।

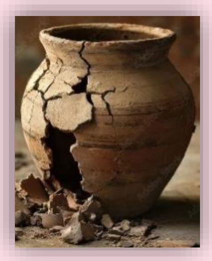

एक बार गाँव में मेला लगा। मेले में बर्तन बनाने की प्रतियोगिता थी, जिसमें सबसे अच्छा बर्तन बनाने वाले को इनाम मिलना था। राजू ने सोचा, "यही मौका है खुद को साबित करने का।" राजू ने बहुत मेहनत की। उसने पुराने टूटे हुए बर्तनों के टुकड़े इकट्ठे किए और उन्हें जोड़कर एक नया बर्तन बनाया। वह बर्तन दिखने में साधारण था, पर उसमें पुरानी चीज़ों को जोड़कर एक नई कहानी थी।

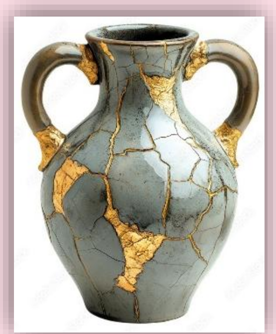

मेले में जब जजों ने उसका बर्तन देखा, तो वे चकित रह गए। राजू ने बताया, "ये बर्तन टूटा हुआ था, लेकिन मैंने इसे फिर से जोड़कर नया जीवन दिया। टूटना बुरा नहीं होता, अगर हम सही तरीके से उसे संभालें।" राजू का बर्तन न केवल सुंदर था, बल्कि उसमें धैर्य, मेहनत और प्यार की कहानी थी। जजों ने उसे पहला इनाम दिया।

राजू ने सीखा कि असली ताकत टूटने में नहीं, फिर से उठ खड़े होने में होती है।

~~~~~
~~~~~

सत्य और असत्य

कृष्ण कुमार मीणा,
लेखापरीक्षक

वर्तमान युग असत्य का युग है। जहां केवल मनुष्य अपने आप को यह आश्वासन देता है कि कमी उसमें नहीं है बल्कि समय में है। मनुष्य मानता है कि वह प्रत्येक कार्य जो इस पृथ्वी पर होने हैं वे सभी हो चुके हैं। उनके अनुसार तो वे किसी बचे हुए समय में जीवन व्यापन कर रहे हैं और अंत अब करीब है। इनको सुनकर ऐसा नहीं लगता जैसे कोई विद्यालय जाता बच्चा , विद्यालय न जाने को बहाना बना रहा हो , पर वो बच्चा भी बहाना बनाने में महंत करता है।आज का युवा तो वो भी नहीं करता है। उनका मानना तो यह है उन्हें तो बस फेंक दिया है इस धरती पर सड़ने को। यह सब कुछ असत्य है, वह असत्य जो उनको अपने कर्म से दूर करता है।

अध्यात्म जिसका हवाला आज के समय में हर सड़क चलता व्यक्ति देता है जिसके लिए भगवान ओर उनकी पूजा ही आध्यात्म है केवल उसके धर्म का अनुसरण करना ही आध्यात्म है। ऐसे व्यक्ति अंदर से मर चुके हैं। वह व्यक्ति जो परिवर्तन , आगमन और निवर्तन को स्वीकार नहीं करता है उसका जीवन तो समाप्त हो चुका है वह तो केवल आने वाली पीढ़ी के स्रोत व्यर्थ कर रहा है। उसके जीवन में आने वाले हर आध्यात्म के तत्व को उसने धर्म , खुदा , भगवान , अजान , पूजा और किसी प्रेयर तक सीमित कर दिया है और वह इस असत्य को ही सत्य की ओढ़नी दे कर उसकी इज्जत बचाता है।

और किस भगवान की बात करता है ये समाज,वो जिसको अपने अनुसार ढाला हुआ है। वह कोई भगवान नहीं है जो तुम्हारे शब्दों में ही सीमित हो जाए। वह तो केवल उस असत्य की दीवार है जो तुम्ही ने अपने और सत्य के बीच बनाई है। सच्चाई केवल ये है कि व्यक्ति ईश्वर के अनुसार नहीं ढल सकता है उसने तो ईश्वर तक को अपने ही अनुसार ढाल लिया है। वर्तमान में जिस योग को मनुष्य ईश्वर प्राप्ति का साधन मानता है वह भी केवल व्युत्पन्न रूप है क्योंकि योग तुम्हारे कर्म में कौशल लाना है न कि जीवन को और कुछ समय उधार देना है।

~~~~~
~~~~~

अपने संघर्ष को समझो

संजय छेत्री,
आउट सोर्स

क्या खोजते हो दुनिया में,
जब सब कुछ तेरे अन्दर है |

क्या देखते हो दूसरों में,
जब तेरा मन ही दर्पण है |

दुनिया एक बस दौड़ नहीं,
बल्कि हमें करना है संघर्ष यहाँ |

आप सपनों की गहराईयों को समझो,
और अपने अन्दर की अच्छाई देखो |

स्वाध्याय की आदत डालो,
जीवन को तुम खुलकर जी लो |

आलस्य तुम्हारा दुश्मन है तो,
पुरुषार्थ को अपना दोस्त बना लो |

जीवन का यह रहस्य समझ लो,
और खुशियों से तुम नाता जोड़ो |

~~~~~
~~~~~

भगवद गीता को अपने वास्तविक जीवन में उतारना

चंचल,
कनिष्ठ अनुवादक

भगवद गीता, जो महाभारत का एक अमूल्य और पवित्र हिस्सा है, केवल एक धार्मिक ग्रंथ नहीं है, बल्कि जीवन जीने की कला, दर्शन और आध्यात्मिकता का सार है। यह हमें न केवल कर्म और धर्म का महत्व समझाती है, बल्कि जीवन में आंतरिक शांति, मानसिक संतुलन और सच्चे उद्देश्य की खोज करने की प्रेरणा भी देती है। आज के आधुनिक और तेज़ी से बदलते जीवन में, जब तनाव, प्रतियोगिता और मानसिक उलझनें आम बात हो गई हैं, तब गीता के उपदेशों को अपनाना और भी आवश्यक हो जाता है। गीता के संदेश को अपने दैनिक जीवन में उतारना हमें जीवन की चुनौतियों का सामना धैर्य, समझदारी और साहस से करने में मदद करता है।

सबसे महत्वपूर्ण शिक्षा जो गीता हमें देती है, वह है कर्मयोग का सिद्धांत। गीता में भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन से कहा है कि हमें अपने कर्तव्यों को पूरी निष्ठा और समर्पण के साथ करना चाहिए, बिना फल की चिंता किए। यह संदेश आज के समय में अत्यंत प्रासंगिक है, क्योंकि अक्सर लोग अपने प्रयासों का तुरंत फल चाहते हैं और जब सफलता नहीं मिलती तो वे निराश हो जाते हैं। गीता सिखाती है कि कर्म करने का उद्देश्य केवल परिणाम प्राप्त करना नहीं बल्कि अपने धर्म का पालन करना भी है। जब हम कर्म की निरंतरता बनाए रखते हैं, तब फल स्वयं हमारे पास आता है। इस प्रकार गीता हमें कर्म के प्रति समर्पित रहने और परिणाम की चिंता त्यागने का मार्ग दिखाती है।

मानसिक संतुलन भी गीता का एक महत्वपूर्ण पहलू है। जीवन में सुख-दुख, सफलता-विफलता जैसे अनुभव आते हैं। गीता हमें सिखाती है कि हमें इन अनुभवों के बीच एक समान मनोस्थिति बनाए रखनी चाहिए। इस स्थिरता से हम जीवन की कठिनाइयों में विचलित नहीं होते और सही निर्णय ले पाते हैं। मानसिक संतुलन हमें तनाव, चिंता और निराशा से बचाता है, जो आज के मानसिक स्वास्थ्य के लिए बेहद जरूरी है। गीता की यह सीख हमें सिखाती है कि जीवन में स्थिरता बनाए रखना ही सच्ची बुद्धिमत्ता है।

गीता में आत्मा की अमरता और उसकी अनादित्व की बात भी प्रमुखता से कही गई है। जब हम यह समझ लेते हैं कि हमारा शरीर नश्वर है, लेकिन आत्मा अमर है, तो जीवन के भय और मृत्यु के डर से मुक्त हो जाते हैं। यह गहन ज्ञान हमें साहस, आत्मविश्वास और जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण देता है। आत्मा की इस समझ से हम जीवन को एक नए नजरिये से देख पाते हैं, जिससे हमारा जीवन अधिक गहन और अर्थपूर्ण बनता है।

गीता में भक्ति और श्रद्धा की भी महत्ता बताई गई है। कठिन समय में यदि हम ईश्वर या किसी उच्च शक्ति पर विश्वास रखें और उनके प्रति श्रद्धा बनाए रखें, तो हमें मानसिक शांति और स्थिरता मिलती है। यह विश्वास हमें निराशा में आशा, कमजोरी में शक्ति प्रदान करता है। जीवन में भक्ति भाव से हम अपने मन को निर्मल और स्थिर बनाए रख सकते हैं, जो आधुनिक जीवन की व्यस्तता और तनाव से लड़ने में मदद करता है।

इसके अलावा, गीता में योग और ध्यान का भी विशेष महत्व है। योग केवल शारीरिक व्यायाम नहीं है, बल्कि यह मन और आत्मा का संयम भी है। योगाभ्यास और ध्यान से हमारा मन शांत होता है, विचारों में स्पष्टता आती है और हम तनावमुक्त रहते हैं। गीता के अनुसार, योग के माध्यम से हम अपने मन को नियंत्रण में रख सकते हैं, जिससे हमारा जीवन सुखमय और स्वस्थ बनता है। आज के दौर में जब हर कोई मानसिक दबाव में है, गीता का यह उपदेश हमारे लिए वरदान साबित हो सकता है।

निष्कर्षतः, भगवद गीता हमारे जीवन के हर पहलू के लिए एक अमूल्य मार्गदर्शक है। यदि हम इसे केवल एक धार्मिक ग्रंथ की तरह न देखकर, इसे अपने व्यवहार, सोच और जीवन की आदतों में उतारें, तो हम न केवल एक बेहतर इंसान बनेंगे, बल्कि जीवन की हर चुनौती का सामना सफलतापूर्वक कर पाएंगे। गीता हमें सिखाती है कि कर्म, भक्ति, योग और ज्ञान के सही मेल से जीवन में सच्ची शांति, संतोष और सफलता प्राप्त होती है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए कि वह गीता के संदेश को गहराई से समझे, उसे आत्मसात करे और अपने दैनिक जीवन में लागू करे, ताकि जीवन सार्थक और सुखमय हो सके।

~ ~ ~ ~ ~

हिमालय की गोद में बसा स्वर्ग-सिक्किम

शुभम शुक्ला,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

भारत के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थित सिक्किम एक ऐसा राज्य है, जो अपनी प्राकृतिक सुंदरता और सांस्कृतिक विविधता के कारण देश और विदेश के यात्रियों को आकर्षित करता है। आकार में भले ही यह छोटा है, लेकिन इसकी पहचान और विशेषताएँ अत्यंत बड़ी हैं। गंगटोक इसकी राजधानी है, जो आधुनिक सुविधाओं के साथ पारंपरिक जीवनशैली का संतुलन बनाए हुए है।

सिक्किम का भूगोल अद्भुत है। ऊँचे-ऊँचे पर्वत, घने वन, कल-कल करती नदियाँ और चमचमाती झीलें इसे किसी चित्र की भाँति सुंदर बनाती हैं। इस राज्य का गौरव कंचनजंघा पर्वत है, जो विश्व का तीसरा सबसे ऊँचा शिखर है। यहाँ की त्सोंगमो झील, गुरुडोंगमर झील और यूमथांग घाटी पर्यटकों के लिए स्वर्ग से कम नहीं। वसंत ऋतु में जब घाटियाँ रंग-बिरंगे फूलों से भर जाती हैं, तो दृश्य मन मोह लेता है।

संस्कृति की दृष्टि से भी सिक्किम अनोखा है। यहाँ नेपाली, लेपचा, भूटिया और अन्य समुदाय मिल-जुलकर रहते हैं। इनकी परंपराएँ, वेशभूषा और भाषाएँ राज्य को बहुरंगी रूप देती हैं। बौद्ध धर्म का प्रभाव यहाँ गहराई से देखा जा सकता है। रूमटेक और पेमायंगत्से जैसे प्रसिद्ध मठ न केवल धार्मिक स्थल हैं, बल्कि कला और वास्तुकला के अद्भुत नमूने भी हैं। वर्ष भर मनाए जाने वाले त्यौहार जैसे लोसार और द्रुकपा तेशी इस भूमि की सांस्कृतिक समृद्धि को और बढ़ा देते हैं।

सिक्किम को "ऑर्गेनिक स्टेट" के रूप में भी जाना जाता है। यहाँ खेती पूरी तरह जैविक तरीके से की जाती है। इलायची की खेती सबसे प्रमुख है, जिसके कारण इसे "इलायची की भूमि" भी कहा जाता है। पर्यावरण संरक्षण के प्रति लोगों की जागरूकता यहाँ साफ दिखाई देती है। यही कारण है कि यह राज्य भारत के सबसे स्वच्छ और हरित राज्यों में गिना जाता है।

पर्यटन यहाँ की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है।

गंगटोक का व्यस्त बाजार, नामची का विशाल गुरु पद्मसंभव की प्रतिमा, पेलिंग से दिखने वाला कंचनजंघा का नज़ारा और युकसोम की ऐतिहासिक विरासत, ये सब मिलकर यात्रियों को अविस्मरणीय अनुभव प्रदान करते हैं। रोमांच पसंद करने वालों के लिए ट्रेकिंग, पर्वतारोहण और रिवर राफ्टिंग जैसी गतिविधियाँ यहाँ उपलब्ध हैं।

जैव विविधता के मामले में भी सिक्किम समृद्ध है। यहाँ के जंगलों में लाल पांडा जैसे दुर्लभ जीव पाए जाते हैं। सैकड़ों किस्म के ऑर्किड फूल और कई औषधीय पौधे यहाँ की वनस्पतियों को विशेष बनाते हैं। वन्यजीव प्रेमियों के लिए यह स्थान किसी खजाने से कम नहीं।

समग्र रूप से देखें तो सिक्किम प्राकृतिक सुंदरता, सांस्कृतिक धरोहर और आधुनिकता का अनूठा संगम है। यह राज्य न केवल भारत का गौरव है, बल्कि विश्वभर के यात्रियों को अपनी ओर खींचने वाला रत्न भी है। शांत वातावरण, स्वच्छता और सादगी यहाँ आने वाले हर व्यक्ति के मन को सुकून प्रदान करती है। सही मायने में, सिक्किम को "पूर्वोत्तर का स्वर्ग" कहना बिल्कुल उचित है।

~ ~ ~ ~ ~

मेरी नानी की कहानी

कृष्ण कुमार मीणा,
लेखापरीक्षक

मेरी नानी (श्रीमती मन्नी देवी) का जीवन संघर्ष और साहस की एक मिसाल है। उनका विवाह एक साधारण और आर्थिक रूप से कमजोर परिवार में हुआ था। लेकिन नानी अत्यंत परिश्रमी और दृढ़ निश्चयी महिला थीं। उन्होंने कठिन परिस्थितियों में भी कभी हार नहीं मानी। नानी के चार संतान हुए तीन बेटियाँ और एक बेटा। उनका बेटा पढ़ाई में बेहद रुचि रखने वाला, मेहनती और लगनशील युवक था। अपनी कड़ी मेहनत के बल पर उसने बैंक में नौकरी प्राप्त की और इस वर्ष सेवानिवृत्त हुआ।

इन तीन बेटियों में मेरी माँ का स्थान दूसरा था। जीवन के उतार-चढ़ाव के बीच नानी को अपने पति की मृत्यु का भी सामना करना पड़ा। इस घटना के बाद उनका जीवन और भी कठिन हो गया, क्योंकि एक अस्थिर आर्थिक स्थिति में चार बच्चों की परवरिश करना आसान नहीं था।

मुझे अपनी माँ से सुनी एक घटना आज भी याद है, नानी ने पानी की समस्या से जूझते हुए अपने हाथों से जमीन में कुआँ खोदा था। राजस्थान जैसे सूखे क्षेत्र में अकेले किसी महिला के लिए यह कार्य असंभव सा प्रतीत होता है, लेकिन नानी ने यह कर दिखाया। यह उनकी अदम्य इच्छाशक्ति और परिश्रम का प्रमाण था। समय बीतने के साथ उनका बेटा नौकरी में स्थिर हुआ। उसने अपनी बहनों के विवाह कराए। अपनी नौकरी के कारण जब वह अपनी पत्नी के साथ अन्यत्र रहने लगा, तब नानी अकेली हो गईं।

मेरी माँ की चार बेटियाँ थीं। उन्होंने नानी की देखभाल के लिए अपनी एक बेटी को नानी के पास भेज दिया। इस तरह नानी अपनी नातिन के साथ रहने लगीं। कुछ वर्षों बाद जब मेरी बहन को भी नौकरी मिली और उसका विवाह हो गया, तब नानी फिर से अकेली हो गईं। बुढ़ापे में बीमारियों ने भी उन्हें घेर लिया, लेकिन इस बार उनके बेटे ने नानी को अपने पास बुला लिया। आज नानी अपने बेटे के साथ रह रही हैं। मेरी नानी का जीवन हमें यह सिखाता है कि परिस्थितियाँ चाहे कितनी भी कठिन क्यों न हों, दृढ़ निश्चय, परिश्रम और आत्मविश्वास के बल पर हर कठिनाई को पार किया जा सकता है। नानी का संघर्षपूर्ण जीवन हम सबके लिए प्रेरणास्त्रोत है।

~ ~ ~ ~ ~

विदाई

HAPPY

कृष्ण कुमार मीणा,
लेखापरीक्षक

तूंगा की पहचान बनी कचौरी और पेड़ा की मशहूर दुकान

तूंगा (जयपुर): जयपुर ज़िले का कस्बा तूंगा अपनी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पहचान के साथ-साथ अब स्वाद के लिए भी मशहूर है। यहाँ स्थित एक कचौरी और पेड़ा की दुकान लोगों के स्वाद की पहली पसंद बन चुकी है। इस दुकान की स्थापना वर्ष 1990 में की गई थी।

पिछले तीन दशकों से यह दुकान अपने लाजवाब स्वाद के कारण न केवल तूंगा बल्कि आसपास के गाँवों और कस्बों तक अपनी पहचान बना चुकी है। यहाँ मिलने वाली कुरकुरी कचौरी का स्वाद ऐसा है कि इसे खाने वाले बार-बार यहाँ खिंचे चले आते हैं। इसके अलावा, इस दुकान का पेड़ा भी उतना ही लोकप्रिय है, जिसकी मिठास त्योहारों और पारिवारिक समारोहों का खास हिस्सा बन चुकी है।

ग्राहक बताते हैं कि इस दुकान की खासियत सिर्फ स्वाद नहीं, बल्कि यहाँ का अपनापन और वर्षों से कायम गुणवत्ता भी है। यही कारण है कि तूंगा का नाम आते ही लोगों के मन में सबसे पहले इस दुकान की मशहूर कचौरी और पेड़ा की छवि उभरती है। यह दुकान न सिर्फ़ एक व्यापारिक स्थल है, बल्कि तूंगा की परंपरा और विरासत का भी महत्वपूर्ण प्रतीक बन चुकी है।

~ ~ ~ ~ ~ ~

सहकर्मी से दोस्ती तक
(आराधना की यादों के साथ)

दीपा उराँव,
कनिष्ठ अनुवादक

हम अक्सर "लॉन्ग डिस्टेंस फ्रेंडशिप" की बातें करते हैं, पर कोई यह नहीं बताता है कि जब आपका सबसे प्रिय सहकर्मी ऑफिस छोड़ देता है, तो ऑफिस की हवा तक बदल जाती है। वही दीवारें, वही टेबल, वही काम, लेकिन बिना उसके सब अधूरा लगता है।

मैंने 12 जून 2024 को इस ऑफिस में कदम रखा। कुछ ही दिन हुए थे कि एक प्यारी सी लड़की ने आकर मुस्कुराते हुए कहा- "दी, कॉफी?" उस वक्त मैं काम में उलझी थी, तो मैंने धीरे से मुस्कुरा कर कहा "कभी और।" अगले दिन फिर वही सवाल और मैंने फिर टाल दिया। शायद इसलिए भी कि मैं चाय-कॉफी पीती ही नहीं। लेकिन तीसरी बार जब उसने कहा, तो मैं उसके साथ चल पड़ी। उस दिन मैंने साफ बता दिया कि "मैं चाय और कॉफी नहीं पीती।" वह हँस दी और उसी पल समझ आया कि असली दोस्ती किसी कप पर नहीं, बल्कि साथ बिताए पलों पर बनती है।

कैंटीन में कॉफी पर हमारी हँसी-ठिठोली का सिलसिला शुरू हुआ और कुछ ही मिनटों में हमें एहसास हुआ कि यह रिश्ता अब आगे बढ़ने वाला है। और फिर आया 21 जून 2024, अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस। कार्यालय आदेश था कि सबको सुबह पालजोर स्टेडियम में योग करना है और उसके बाद कार्यालय पहुँचना था | अगर कोई कपड़े बदलना चाहे तो उसे कपड़े बदलकर सीधे ऑफिस आना था।उस दिन योग खत्म होने के बाद मैं अपने कपड़े बदलने के लिए आराधना के क्वार्टर चली गई। वही दिन था, जब कैंटीन के कुछ मिनटों से आगे हमें पहली बार इतना लंबा वक्त मिला, सिर्फ साथ रहने का, सिर्फ बात करने का। कोई खास विषय नहीं था, पर बातें ही बातें। जैसे पुरानी सहेलियाँ बरसों बाद मिली हों। बातों में ही समय कैसे बीता पता ही नहीं चला और इसी वजह से हम ऑफिस के लिए थोड़ा लेट भी हो गए। लेकिन सच कहूँ तो किसे परवाह थी! उस दिन से लेकर ऑफिस के आखिरी दिन तक हमारी बातें कभी खत्म नहीं हुईं

वह लड़की थी, **"आराधना लामा योल्मो"**।

हम अलग-अलग अनुभागों में थे, लेकिन यह कभी दीवार नहीं बनी। हम कार्यक्रमों में साथ बैठे, शादियों में हँसे-खेले, यात्राएं की, नाइट स्टेस किया, परिवार की, बचपन की, स्कूल की, कॉलेज की बातें कीं, होली मनाई, साथ में डांस किया, मेकअप और पहनावे के सुझाव साझा किए, भविष्य की योजनाएँ एक दूसरे के साथ साझा किए, यहाँ तक कि साथ में बहुत सारी रील्स भी बनाई। धीरे-धीरे वह सिर्फ सहकर्मी नहीं रही, बल्कि हर खुशी और हर पल की साथी बन गई। हमारे बीच उम्र का अंतर था, पर कभी महसूस नहीं हुआ। बातचीत की सहजता, हँसी की गूंज और डांस का तालमेल हमें ऐसे जोड़ता कि लगता बरसों से एक-दूसरे को जानते हैं। वह मेरी सबसे प्यारी डांस पार्टनर थी।

ऑफिस जॉइन करते वक्त मैं थोड़ी सशंकित थी, सोचती थी कि पता नहीं कैसे लोग मिलेंगे। पर कार्यालय ने मुझे ऐसे सहकर्मी दिए जिनमें अपनापन है, समझ थी। उनमें से भी आराधना सबसे खास निकली, जैसे किसी साधारण दिन में अचानक त्योहार की रोशनी उतर आए। आराधना बेहद प्रतिभाशाली है | काम में दक्ष, बुद्धिमती, आत्मविश्वासी, अच्छी वक्ता, अच्छी श्रोता, अच्छी गायिका, नृत्य में निपुण और हर माहौल को खुशनुमा बना देने वाली। उसका आत्मविश्वास, उसकी सहजता और उसकी मुस्कान, हर किसी को अपनी ओर खींच लेती है।

फिर आया जुलाई 2025। उस दिन ऑफिस ने उसे फेयरवेल दिया। फूलों के गुलदस्ते थे, तालियाँ थीं, पर हमारे लिए सिर्फ आँसू थे। मैं एक शब्द भी नहीं बोल पाई। कभी सोचा भी नहीं था कि अपने कार्यस्थल पर यूँ रो पड़ूँगी। पर सच यही है, जब कोई खास विदा लेता है, तो आँसू रोकना नामुमकिन होता है। आख़िरकार हम दोनों ने मिलने का वादा करके एक-दूसरे को विदा किया और उसने गंगटोक छोड़ दिया। हमारी दोस्ती इतनी सहज है कि अगर मैं उसके घर जाऊँ और किसी कारणवश वहाँ रुकना पड़े, तो उसके न होने पर भी मैं वहाँ आराम से ठहर सकती हूँ। वह घर अब सिर्फ उसका नहीं, बल्कि हमारी दोस्ती की पहचान भी है।

आज भी हम जुड़े रहते हैं , फोन कॉल्स, व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम और रील्स के ज़रिए। हम एक-दूसरे को लगातार रील्स भेजते हैं और प्लान बनाते रहते हैं कि अगली बार मिलने पर क्या-क्या करेंगे, कहाँ खाना खाएँगे, कहाँ घूमेंगे, क्या-क्या करेंगे। यह नहीं जानते कि कब मिलेंगे, पर यक़ीन है कि मिलेंगे ज़रूर। हाँ, दूरी अपनी जगह असर करती है। पर सच्ची दोस्ती दूरी से नहीं टूटती, बल्कि और भी गहरी हो जाती है। हर किसी को कार्यस्थल पर दोस्त नहीं मिलते, पर मुझे मिली आराधना और इसी वजह से मैं खुद को बहुत सौभाग्यपूर्ण मानती हूँ।

आराधना, तुम्हारे बिना ऑफिस खाली-सा लगता है, लेकिन तुम्हारे होने से मेरी ज़िन्दगी भर गई है उन यादों से और दोस्ती के उस विश्वास से, जो हमेशा कायम रहेगा। यह रिश्ता सहकर्मी से आगे बढ़कर दोस्ती बना और दोस्ती का कोई टाइम कार्ड नहीं होता। मैं इसे हमेशा संजोकर रखूँगी।

~ ~ ~ ~ ~

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की प्रथम अर्धवार्षिक बैठक

लेखापरीक्षा दिवस 2024

महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

एवं

वरिष्ठ उप महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय, सिक्किम,

गंगटोक-737102

ई-मेल – agausikkim@cag.gov.in ,
agaesikkim@cag.gov.in